laln esa cgl % ufn;ksa dk çn"k.k

यमुना 'रायबरेली' से गुजरती तो ये हालत न होती

Hkkjrh; turk ikVh

BHARATIYA JANATA PARTY

vuØef.kdk

- सुषमा स्वराज 1
- रविशंकर प्रसाद 4
- तरुण विजय 17
- अनिल माधव दवे 20
- संजय राउत 28
- शिवानंद तिवारी 31
- डॉ. रामप्रकाश 36
- प्रो. एस.पी. सिंह वघेल 45
- चौधरी मुनव्वर सलीम 52
- विवेक गुप्ता 55
- दर्शन सिंह यादव 60
- राम कृपाल यादव 66
- M. Rama Jois 69
- Prashant Chatterjee 72
- K. Parasaran 75
- Shashi Bhusan Behra 79
- Dr. V. Maitreyan 82
- C.M. Ramesh 85
- M.S. Swaminathan 87
- Jayanti Natarajan 89

प्रकाशकीय

ऐसे अवसर संसद में कम ही आते हैं जब किसी एक विषय पर विभिन्न राजनैतिक दलों के सदस्य अपनी दलगत राजनीति से ऊपर उठकर राष्ट्रीय विषयों पर एक स्वर में बोलते हैं। ऐसा ही एक अवसर हाल ही में संसद में आया जब नदियों के प्रदूषण पर लगभग सभी राजनीतिक दलों के सदस्यों ने अपनी गंभीर चिंता व्यक्त की। नदियां प्रदूषित हो रही हैं, गंगा–यमुना जैसी नदियों के नाले में परिवर्तित होने का भय हमारे मुंह बाये खड़ा है, दशकों के सरकारी कवायद एवं हो–हल्ले के बावजूद स्थिति बिगड़ती जा रही है– ऐसे में हरेक देशवासी का चिंतित हो जाना स्वाभाविक है। उसी चिंता को संसद में चर्चा के दौरान सदस्यों ने बड़ी गंभीरता से उठाया और यह संदेश दिया कि संसद मौन नहीं, इन राष्ट्रीय विषयों पर मुखर है।

भारतीय संस्कृति एवं परंपराओं में नदियों को न केवल जीवनदायिनी माना गया है बल्कि आराध्य के रूप में इनकी स्तुति की गई है। यदि देखा जाए तो पूरे विश्व में ही सभ्यता का उद्‌भव नदियों के आसपास ही हुए तथा संसार की कई प्राचीनतम सभ्यताएं नदी–घाटी सभ्यता के नाम से जानी जाती हैं। भारत जो हजारों वर्षों की अखंड एवं जीवंत सभ्यता का प्रतिनिधि करता है, प्राचीनकाल से ही नदियों के महत्व को समझते हुए इन्हें पूजता आया है। हर नदी भारतीय लोगों के लिए देवीस्वरूपा है जिसमें इतिहास, संस्कृति, अध्यात्म, परंपराएं और जन–जन की आस्था समायी हुई है। नदियों के साथ समृद्धि, स्वास्थ्य, आस्था, अध्यात्म, ज्ञान, सामाजिक मूल्य एवं परंपराएं और हमारे जीवन के न जाने कितने ही पहलू जुड़े हुए हैं। मोक्षदायिनी गंगा हो, कृष्ण लीला से ओत–प्रोत यमुना हो, ऋग्वेद काल से आराध्य सरस्वती हो, या फिर कि कावेरी, गोदावरी, सिंधु, सतलुज, ब्रह्मपुत्र और अनगिनत अनेक नदियां हो, हमारे लिए सभी पूज्य एवं आराध्य रही हैं।

आज जब औद्योगिकरण और 'असंगत विकास' की दौड़ में पश्चिम के अंधानुकरण में हमारे नीति–नियंता भारतीय मूल्यों एवं परंपराओं को तिलांजलि देने में लगे हुए हैं, कई प्राचीन नदियां अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ रही हैं। यहां तक कि गंगा और यमुना जिनके जल की पवित्रता की दुहाई पूरे संसार में लोग देते थे, प्रदूषण के कारण विश्व की सर्वाधिक प्रदूषित नदियों में गिनी जाने लगी है। गंगा–यमुना के आस–पास बसे शहरों एवं कल–कारखानों से विसर्जित मल–मूत्र, रासायनिक पदार्थ एवं कूड़ा–कचरा ने इन नदियों की पवित्रता एवं अविरल प्रवाह को खंडित कर दिया है। जिन नदियों ने हमें हजारों–हजार वर्षों की सभ्यता दी, जीवन दिया, संस्कृति दी, समृद्धि एवं सम्पन्नता दी, आज भी जिन नदियों के कारण हमारे पेट भर रहे हैं, उन नदियों के साथ हमने क्या किया? आने वाली संततियां क्या वर्तमान पीढ़ी के इन अपराधों को क्षमा कर पायेंगी?

संसद में 11 मार्च 2013 को नदियों के प्रदूषण पर हुई चर्चा वास्तव में स्वयं में अनूठा है। इस चर्चा में लगभग सभी राजनैतिक दलों के सदस्यों ने भाग लिया। लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष श्रीमती सुषमा स्वराज, राज्यसभा में भाजपा संसदीय दल के उपनेता श्री रविशंकर प्रसाद, जस्टिस एम. रामा. जायस, श्री अनिल माधव दवे, श्री तरुण विजय, श्री संजय राऊत, श्री शिवानंद तिवारी, श्री दर्शन सिंह यादव, श्री एम.एस. स्वामीनाथन एवं कई अन्य सम्मानित सदस्यों ने चर्चा में भाग लेकर इस विकराल होती समस्या पर चिंता जाहिर की है। अंत में वन एवं पर्यावरण मंत्री श्रीमती जयंती नटराजन ने चर्चा का उत्तर दिया। स्वस्थ लोकतंत्र में हर विषय को दलगत आधार पर ना देखकर राष्ट्रीय हित में एकजुट होना पड़ता है। इन भाषणों का संकलन इसी दिशा में एक विनम्र प्रयास है।

हम अपने सुधी पाठकों के लिए संसद में दिए इन भाषणों का संपादित अंश प्रकाशित कर रहे हैं। आशा है हमारे पाठक इससे लाभान्वित होंगे।

&Mk- f'ko 'kfDr cDlh

vçy 2013

Hkkjrh; turk ikVh

11 v'kkd jkM] ubZ fnYyh&110001

यमुना 'रायबरेली' से गुजरती तो ये हालत न होती : सुषमा स्वराज

Vध्यक्ष महोदया, गंगा जी और यमुना जी को हम गंगा मैया और यमुना मैया कहकर सम्बोधित करते हैं। क्योंकि हमारे लिए ये नदियां नहीं बल्कि मां हैं। आप जानती हैं कि हिंदुस्तानी तहजीब को गंगा–जमुनी तहजीब कहा जाता है। हमारे राष्ट्रीय गान में विंध्य, हिमाचल, यमुना, गंगा कहकर हम दिन–रात इनकी स्तुति करते हैं। कृष्ण उपासक जब ब्रज क्षेत्र की कल्पना करते हैं तो उसमें उन्हें यमुना कल–कल बहती हुई दिखाई देती है। लेकिन अत्यंत दुख की बात है कि उसी ब्रज क्षेत्र के मथुरा, वृन्दावन में यमुना लगभग सूख गई हैं और दिल्ली में यमुना जी भयंकर रूप से प्रदूषित हो गई है और यही प्रदूषित जल जब मथुरा, वृन्दावन में जाता है तो न आचमन के योग्य रहता है और न स्नान करने के योग्य रहता है। ब्रज क्षेत्र के सभी मंदिरों के ठाकुर जी को इसी प्रदूषित जल से स्नान कराने के लिए पुजारी मजबूर हो गये हैं। हालांकि बहुत बार यह विषय सरकार के नोटिस में लाया गया, बहुत बार आश्वासन दिये गये और एक बड़ी योजना भी बनी, हजारों करोड़ रुपये की योजना यमुना एक्शन प्लान भी बनी। लेकिन कोई नतीजा आज तक नहीं निकला। वही जैसे कहते हैं कि ढाक के तीन पात। इस सबसे आहत और आक्रोशित होकर यमुना मुक्तिकरण पदयात्रा ब्रज क्षेत्र से चली है। यह आज दिल्ली पहुंच रही है। सोनिया जी यहां बैठी हैं। आठ फरवरी को सोनिया जी से वे मिलने के लिए आये थे और मेरे मुताबिक शायद उन्होंने स्वयं बुलवाया था। लेकिन

उनके आश्वासन के बाद भी कोई ठोस कार्रवाई अब तक उस पर नहीं हुई है।

महोदया, ऐसा नहीं है कि सूखी हुई नदियों को सराबोर नहीं किया जा सकता। गुजरात में साबरमती का उदाहरण हमारे सामने है। मध्य प्रदेश में नर्मदा और क्षिप्रा का उदाहरण हमारे सामने है। साबरमती नदी अहमदाबाद में बिल्कुल सूख गई थी। हम जब अहमदाबाद जाते थे तो बिल्कुल दरारें दिखाई पड़ती थीं। लेकिन नर्मदा का जल साबरमती में डालने से साबरमती अब लबालब भरकर चल रही है। अभी एक अभिनव योजना मध्य प्रदेश के मुख्य मंत्री ने क्षिप्रा में नर्मदा नदी को जोड़ने की शुरू की है। एक साल के अंदर वह प्रयास पूरा हो जायेगा और जो सिंहस्थ कुंभ उज्जैन में होने वाला है, हम देखेंगे कि किस तरह से क्षिप्रा नदी बहकर चल रही है। लेकिन क्या कारण है कि न तो यमुना का जल प्रवाह बढ रहा है और न उसका प्रदूषण कम हो रहा है। इसलिए मैं आपकी अनुमति से यह विषय यहां उठाना चाहती हूं।

हम लोग यह चाहते हैं कि सरकार इस पर उत्तर दे, सरकार इस पर आश्वासन दे। क्योंकि मैं कहना चाहती हूं कि ये हमारी सांस्कृतिक धरोहर हैं।

ये हमारी आस्था का प्रतीक है। 1380 वर्ग किलोमीटर का यमुना जी का जो दायरा है, उसमें वह पीने का जल देती हैं। लाखों हैक्टेयर खेती की सिंचाई करते हुए, हमें भोजन देती हैं। इसलिए वे हमारी जीवनदात्री हैं। चाहिए तो यह था कि इस तरह के कर्त्तव्य सरकार स्वयं अपने हाथ में ले। लेकिन जब सामाजिक कार्यकर्त्ता उठ खड़े हुए हैं, देश के नागरिक उन्हें समझा रहे हैं, तब उसके बाद तो सरकार को और भी ज्यादा आगे बढ कर इस पर कार्यवाही करनी चाहिए। इसलिए मैं कहना चाहती हूँ कि एक तात्कालिक उपाय है और एक दीर्घकालिक उपाय है। तात्कालिक उपाय है कि सरकार हथिनी कुंड बैराज से तुरंत जल छोड़ने का निर्णय दे ताकि यमुना जी का नदी जल प्रवाह बढ़े और उनका प्रदूषण भी थोड़ा कम हो। लेकिन दीर्घकालीन उपाय भी हमें चाहिए। इसलिए मैं आपके माध्यम से आज सरकार से

यह कहना चाहती हूँ कि संबंधित मंत्री भी यहां बैठी हैं, जो प्रदूषण मुक्त कर सकती हैं, श्रीमती जयंती नटराजन जी, यूपीए की चेयरपर्सन भी बैठी हैं, जो सबसे शक्तिशाली नेत्री हैं, जो वे कह दें, सरकार में सो हो जाए। अभी हम कह रहे थे, आज हम दोनों एक दूसरे को इशारा कर रहे थे कि जो मंत्री खड़े होते हैं, वे रायबरेली के बारे में कहते हैं। मैं कह रही थी कि विदिशा को कुछ नहीं, सासाराम को नहीं, सब कुछ रायबरेली को अगर यमुना जी रायबरेली से निकल रही होतीं तो ज़रूर वह भी प्रदूषण मुक्त हो जाती और जलप्रवाह हो जाता। दिक्कत यह है कि यमुना जी रायबरेली से नहीं बह रही हैं। वे बेचारी ब्रज में, मथुरा–वृंदावन में सूख जा रही हैं। वे वहीं सूख जा रही हैं। मैं तो ब्रज की बेटी हूँ इसलिए मेरे लिए तो यह व्यक्तिगत रूप से बहुत दुख का कारण है कि यमुना जी सूख गई हैं।

अध्यक्ष जी, मैं आपसे कहना चाहती हूँ कि हमें उत्तर भी चाहिए और आश्वासन भी चाहिए। लेकिन उत्तर ऐसा चाहिए जो उन पदयात्रियों का भी समाधान करे और उत्तर ऐसा भी चाहिए जो सदन में बैठे हम सब का समाधान करे। इसलिए मैं चाहती हूँ कि मंत्री महोदय स्वयं खड़े हों और हमें आश्वस्त करें कि तात्कालिक उपाय भी तुरंत करेंगे और दीर्घकालिक उपाय भी यमुना जी के बारे में करेंगे।

■

○ jkT; lHkk

नदियों के प्रदूषण मुक्त होने के बारे सरकार श्वेत-पत्र लाये : रविशंकर प्रसाद

ekननीय उपसभापति जी, मैं कृतज्ञ हूं कि आपने मुझे इस महत्वपूर्ण विषय पर चर्चा के लिए अवसर दिया है। यह बहुत संतोष का विषय है कि देश की नदियों की चिंताजनक स्थिति, विशेष रूप से गंगा और यमुना को लेकर पूरे सदन में एक सद्भाव रहा कि इस पर चर्चा होनी चाहिए और यह चर्चा हो रही है। महोदय, भारत की नदियों के बिना भारत की कल्पना नहीं हो सकती है। अभी कल ही कुंभ समाप्त हुआ है। इसमें करोड़ों लोग बिना बुलाए आते हैं। हिंदुस्तानी आते हैं, विदेशी भी आते हैं और गंगा, यमुना के संगम पर स्नान करके पुण्य का भागी होने का प्रयास करते हैं। हरिद्वार में कुछ वर्षों पहले क्या हुआ था। वहां भी लोग करोड़ों की संख्या में आए थे। कुंभ में एक दिन में तीन, तीन करोड़ लोग आते हैं। मैं जब इसका अध्ययन कर रहा था तो मुझे जानकर एक सुखद आश्चर्य हुआ कि इस देश में ऋग्वेद के समय से कुंभ की परम्परा चली है।

आदरणीय उपसभापति जी, यह जो हिंदुस्तान है, हमारी मिट्टी, हमारे लोग हैं, इस हिंदुस्तान को नदियों के सिंचन से ही वर्षों से ऊर्जा मिलती रही है। गंगा, यमुना, सतलुज, ब्रह्मपुत्र, कृष्णा, कावेरी इन सभी नदियों के बिना शायद हिंदुस्तान की कल्पना नहीं हो सकती है। यह सिर्फ पीने के पानी और सिंचाई के लिए जल का सवाल नहीं है, बल्कि यह देश की आस्था, देश की विरासत और देश की संस्कृति का विषय है। महोदय, हर नदी के साथ एक आध्यात्मिक परिदृश्य जुड़ा हुआ है। गंगा विष्णु के पद से, ब्रह्मा के कमंडल से, भगीरथ के तप से, महादेव

की जटा से होते हुए, गंगोत्री में गोमुख से आती है और पूरे उत्तर भारत के समतल को लेकर जाते हुए सागर में मिलती है। गंगा पूजन, गंगा दशहरा ये सभी भारत की आध्यात्मिक विरासत के अंग हैं। यमुना के लिए भी सप्तऋषियों ने तप किया। यमुना के बारे में कहते हैं कि ये सूर्य की पुत्री हैं और गंगा की बहिन हैं।

उसभापति जी, आज हमारे बहुत से संत वृंदावन और मथुरा से चले हैं। मैं आगे उसकी चर्चा करूंगा। पूज्य संत रमेश बाबा के प्रोत्साहन और निर्देश में महंत जयकिशन दास और बाकी यात्री यमुना मुक्ति यात्रा को लेकर निकले हैं।

यमुना की क्या स्थिति है, यह चर्चा अभी मैं करने वाला हूं। हिंदुस्तान में 45 हजार किलोमीटर नदियां बहती हैं। जब मैंने वह संख्या जानने की कोशिश की, तो देश में 12 major river basins हैं 46 medium river basins हैं और 14 लघु यानी small river basins हैं। अभी मैंने भारत की विरासत की चर्चा की। यह जो मैं संगम और त्रिवेणी को देखने की कोशिश करता हूं, तो जहां नदियां मिलती हैं, संगम होता है। प्रयाग में गंगा और यमुना मिलती हैं, सरस्वती सुप्त है। हर जगह कहीं–न–कहीं एक त्रिवेणी हैं। संगम और त्रिवेणी का एक स्थान होता है।

माननीय उपसभापति जी, राजनीतिक कारणों से मेरा परिचय थोड़ा उत्तराखंड से रहा है, वहां भी प्रयाग है और 5 प्रयाग हैं। विष्णु प्रयाग, जहां विष्णु गंगा और धौली गंगा मिलती है; नंद प्रयाग, जहां अलकनंदा मंदाकिनी से मिलती है; कर्ण प्रयाग, जहां पिंडारी नदी अलकनंदा से मिलती है; रुद्र प्रयाग, जहां अलकनंदा मंदाकिनी से मिलती है और देव प्रयाग, जहां ये सारी छोटी नदियां भागीरथी से मिलकर गंगा के रूप में आगे बढ़ती हैं।

माननीय मंत्री जी, आप तमिलनाडु से आती हैं। जब मैं कावेरी नदी की बात करता हूं, तो जब भवानी नदी उसकी मुख्य धारा से मिलती है, तो वहां भी एक संगम है। लोग कहते हैं कि एक सुप्त नदी वहां भी है। जब मैं मध्य प्रदेश के उज्जैन जाता हूं, तो वहां क्षिप्रा और याकिता नीली गंगा से मिलती हैं। वह भी सुप्त है। जब मैं सोमनाथ

जाने की कोशिश करता हूं, तो वहां हिरण्या और कपिला नदियों का संगम है, वहां भी एक सरस्वती सुप्त है। गोदावरी को तो दक्षिण गंगा ही कहते हैं, जिसको गौतम ऋषि ने तप करके लाया। यह हमारी आध्यात्मिक परम्परा है, जो नदियों के साथ जुड़ी हुई है। हमारी वैसी आध्यात्मिक, सामाजिक विरासत को आज हमने क्या कर दिया है? मैंने यमुना की बात कही। Hon. Deputy Chairman, Sir, I am very pained to say that, today, Yamuna has been reduced to a sewer or a gutter. हमारे मथुरा, वृंदावन से जो संत आए हैं, वे क्यों नहीं पीड़ित हों? क्या मथुरा, वृंदावन की कल्पना यमुना के बिना की जा सकती है? अभी मैं पिछले वर्ष वृंदावन गया था, मैं कृष्ण का भक्त हूं, तो मैं यमुना के घाट पर गया। वहां की नदी के काले पानी को देख कर, क्षमा करिए, मेरी आंखों में आंसू आ गए। वह यमुना, जिसके किनारे घाटों पर कृष्ण अठखेलियां किया करते थे, वह यमुना, जिसके बीच से निकल कर कालियामर्दन कृष्ण की परिकल्पना और वसुदेव कृष्ण को कंस के क्रोध से बचाने की कोशिश करते हैं और वह नदी आज मथुरा, वृंदावन में क्या हो गई है! यह बहुत चिंता की बात है। इसलिए आज मैं माननीय मंत्री जी से कुछ सीधे सवाल पूछूंगा और जानने की कोशिश करूंगा कि ऐसा क्यों है, ऐसा क्यों हो रहा है?

माननीय उपसभापति जी, एक बात मुझे साफ–साफ दिखाई पड़ती है। पहले मैं यमुनाकी चर्चा करना चाहता हूं। There is no fresh flow of water left in the Yamuna. यह एक सबसे गंभीर बात है। यमुना यमुनोत्री से शुरू होकर हरियाणा होती हुए दिल्ली आती है। जब मैंने दिल्ली को जानने की कोशिश की, तो दिल्ली में यमुना सिर्फ 22 किलोमीटर बहती है और यमुना का 70 परसेंट pollution दिल्ली से आता है। It is a unique ratio that the Yamuna river traverses only 22 kilometers in Delhi, yet 70 per cent of its pollution is referrable to Delhi, sourced at Delhi. Two per cent distance, 70 percent pollution. अब माननीय मंत्री जी, मुझे मालूम है कि आप अपने जवाब में कहेंगी गंगा एक्शन प्लान– 1, गंगा एक्शन प्लान– 2, यमुना एक्शन प्लान– 1, यमुना एक्शन प्लान– 2, आप बताएंगी, मुझे मालूम है।

आजकल National River Conservation Directorate बन गया है, कई Super Committees हैं, कई Standing Committees हैं, लेकिन नतीजा क्या निकला है? इसका सबसे classical example है, सुप्रीम कोर्ट में एक PIL pending है, जिसका शीर्षक है मैली यमुना। That PIL has been pending in the Supreme Court since 1993.

अगर यह स्थिति हो जाए तो क्या हाल होगा? मैंने सुना कि शायद अब तक यमुना के रख–रखाव और उसे पॉल्यूशन फ्री करने पर लगभग 5500 करोड़ रूपये खर्च किए गए हैं। अगर मैं गलत हूं, तो माननीय मंत्री जी, आप मुझे करेक्ट कीजिएगा। सिर्फ दिल्ली में ही 2500 करोड़ रूपए खर्च किए गए हैं। टैक्स पेयर्स की इतनी बड़ी धनराशि खर्च करने के बाद भी अगर आप निजामुद्दीन पुल पर जाइए, शाहदरा पुल पर जाइए और यमुना को देखिए तो इंडस्ट्रीज झाग से भरी हुई और सड़ांध भरे एक नाले जैसी यमुना लगती है। यह जो पीड़ा है, कहीं न कहीं इसके बारे में गंभीर चिंता करनी चाहिए। आखिर जनता के, टैक्स पेयर्स के ये 5500 करोड़ रूपये कहां गए? कहां गलती हो गई है? माननीय मंत्री जी, आप हम आपसे इसका उत्तर सुनना चाहेंगे।

People say that pollution is basically because of two factors. First is industrial pollution and the second is domestic sewage. जहां तक आपके Central Pollution Control Board के मानक हैं, 70 प्रतिशत से 80 प्रतिशत पॉल्यूशन sewage से होता है। सबसे पहले मैं Industrial Pollution पर आता हूं। माननीय मंत्री जी, Industrial Pollution को identify करना आसान है। You know there is an industry which is discharging its waste in the Yamuna. BOD की बात मैं बाद में करूंगा, लेकिन माननीय मंत्री जी, आप हमें यह बताइए कि सोनीपत, पानीपत, फरीदाबाद से लेकर आगरा की जो पूरी बेल्ट है, वहां यमुना में कितना industrial waste गिर रहा है और उनमें से कितनी फैक्ट्रियों के खिलाफ कानूनी कार्यवाही की गई है?

अभी मैंने एक रिपोर्ट पढ़ी, आप उसकी authenticity के बारे में बताइएगा, यमुना में जो कैमिकल्स हैं,वे बहुत ही toxic और dangerous

हैं। यह क्यों है? मैंने एक रिपोर्ट और पढ़ी है, अगर मैं गलत हूं तो आप मुझे correct कीजिएगा, हरियाणा में पानीपत–सोनीपत के पास यमुना को साफ करने वाले जो संयंत्र लगे हैं, वहां अमोनिया का लेवल इतना हाई चला गया कि they stopped working because they could not take that severe level of pollution. अगर स्थिति यह है तो कैसे काम चलेगा? यह बहुत चिंता की बात है। इसके बारे में हम आपसे जानना चाहेंगे।

अब आप दिल्ली की बात लीजिए। दिल्ली में आपने 17 Sewage Treatment Plants लगाए हैं। Correct me, if my number is wrong. But I am given to understand that these 17 Sewage Treatment Plants (STPs) are almost 40 per cent of India's total installation, फिर भी यहां क्या हाल है? इनमें से कई काम ही नहीं कर रहे हैं। अगर कई काम करते हैं तो वहां आपका ड्रेनेज काम नहीं कर रहा है। जहां आपका ड्रेनेज काम करता है तो वहां जो क्लींड सीवर है वह अनक्लींड सीवर में मिल जाता है।

अब दिल्ली में बड़ी संख्या में अनऑथोराइज्ड कॉलोनियों को ऑथोराइज करने की बात हो रही है, करना भी चाहिए, क्योंकि पूरे देश से लोग यहां पर आ कर बसेंगे। चुनाव से पहले जब कॉलोनियों को ऑथोराइज करने की होड़ लगती है, तो वहां यह क्यों नहीं देखा जाता है कि वहां पर सीवेज की चिंता भी की जाए, वरना माननीय मंत्री जी, मैं आपसे यह कहना चाहता हूं कि इस समस्या का समाधान कभी भी नहीं निकलेगा।

आजकल एक नया तर्क निकला है Interceptor Sewers, जिन्हें आप नदी के किनारे घाट पर लगाने की बात कर रहे हैं। माननीय मंत्री जी, आज मैं आपको एक आंकड़ा देना चाहता हूं। I hope I am wrong. इसके लिए 1963 करोड़ रूपए एलोकेटिड हैं, जिसमें से सिर्फ 51 करोड़ रूपए खर्च हुए हैं, in Delhi, which accounts for 70 per cent of Yamuna pollution. इसका क्या मतलब है? और तो और कई Sewage Treatment Plants काम भी नहीं कर रहे हैं। अच्छा, इसका पूरा खाका बना है, आपने जो लंबा–लंबा ड्रेनेज सिस्टम बनाया है।

पहले ड्रेन वाटर को pool करो, फिर उसको साफ करो, साफ करने के बाद वापिस cleaned water को डालो। यह cleaned और uncleaned का जो घालमेल बीच में मिलता है, इससे बहुत समस्या हो रही है। पीड़ा यह हो रही है कि आपके 5500 करोड़ रूपए चार्ज करने पर भी और दिल्ली में 2500 करोड़ रूपए खर्च करने पर भी यमुना और भी अधिक गंदी हो गई है।

अब मैं Biochemical Oxygen Demand (BOD) की बात करता हूं। आपने Prof. M.G.K. Menon की कमेटी बनाई थी, जिसके बाद आपने norms को relax कर दिया।

Does the water of Yamuna satisfy even that norm? Hon. Minister, I would not like to have a technical reply from you, because my understanding of a clean water is a visibly clean water, and I shall be measuring the benchmark of your answer with the yardstick of what we see when we pass through the Shahadra Bridge and the Nizamuddin Bridge and see the Yamuna down below. I would like to measure your assurance when I go to Brindavan and Mathura, take the achamans from the Yamuna water and try to see whether my hands are black or clean. That is the measurement of cleanliness and pollution which the country expects. माननीय मंत्री जी, मैं आपसे उम्मीद करूंगा कि इसके बारे में आप हमें थोड़ा बताएंगी, तो बड़ी कृपा होगी।

सर, आज जो मैं समझता हूं और जिस पर मैं अपना सुझाव देना चाहता हूं कि यमुना नदी में निर्मल पानी का अभाव हो गया है। The assimilative capacity of Yamuna water has been seriously degenerated and eroded. हम उससे पीने के लिए पानी लेते हैं, सिंचाई के लिए पानी लेते हैं, लेकिन बदले में उसमें कचरा और कूड़ा डालते हैं। जब यह होता है, तो regardless of the relaxed norms of BOD, the regenerative and assimilative capacity of Yamuna is lost; the Yamuna loses all its strength. This is what is happening और इस दिशा में कोई कार्रवाई नहीं हो रही है, यह मैं बहुत पीड़ा के साथ आपसे कहना चाहूंगा।

माननीय मंत्री जी, मुझे आपसे यमुना के बारे में 4–5 बड़े सीधे सवाल पूछने हैं और मैं चाहूंगा कि आप उनके उत्तर देंगी, तो बहुत कृपा होगी। आप जरा मुझे यह बताएं कि अभी तक यमुना की सफाई पर कितने पैसे खर्च हुए हैं और उसका क्या नतीजा निकला है? यह मैं आपसे ईमानदारी से सुनना चाहता हूं। माननीय उपसभापति जी, आज इस बात का बहुत आश्वासन है कि हमारे सुप्रीम कोर्ट ने, दिल्ली होई कोर्ट ने तथा इलाहाबाद हाई कोर्ट ने इसमें बहुत intervene किया है। कई एन.जी.ओज. ने इस बारे में अच्छे काम किए हैं। जब मैं Centre for Science and Environment देखता हूं, तो मुझे सुनीता नारायण जी का अभिनन्दन करने की इच्छा होती है, क्योंकि उन्होंने बहुत अच्छा काम किया है। संतों ने अच्छा काम किया है। वे वृंदावन और मथुरा से हजारों की संख्या में नरेश बाबा और जयकिशन दास के नेतृत्व में निकल पड़े हैं, ताकि यमुना स्वच्छ हो। जब यह जनता की पीड़ा है, कोर्ट की पीड़ा है और एनजीओज की पीड़ा है, तो यह सरकार की भी पीड़ा होनी चाहिए। आज संसद में यह जो चर्चा हो रही है, तो हम यहां उस पीड़ा का प्रकटीकरण कर रहे हैं, ताकि कोई रास्ता निकले, कोई समाधान निकले। इसलिए, हम आपसे ये सवाल जरूर पूछना चाहेंगे। माननीय, मंत्री जी, दिल्ली, हरियाणा, आगरा, मथुरा आदि जगहों में कितने industrial units के खिलाफ कार्रवाई की गई है, यह हम आपसे सुनना चाहेंगे? विशेष रूप से आप फरीदाबाद, पानीपत और सोनीपत के बारे में बताएं, जो कि हरियाणा में आता है। आप effective कार्रवाई की बात बताएं, सिर्फ notional या अखबार की बात पर नहीं। मैं एक बात और जानना चाहूंगा कि मथुरा और वृंदावन के लिए आपके पास क्या विशेष योजना है? मथुरा और वृंदावन हिंदुस्तान के आध्यात्मिक परम्परा के प्रमुख केंद्र हैं। जैसे राम और कृष्ण के बिना भारत की कल्पना नहीं की जा सकती है कृष्ण की कल्पना वृंदावन और मथुरा के बिना नहीं की जा सकती, तो मथुरा और वृंदावन की कल्पना यमुना के बिना नहीं की जा सकती, क्योंकि यमुना आज भी जीवंत है, जैसे गोवर्द्धन का पर्वत श्री कृष्ण की लीलाओं के साथ जीवंत है और उसका हमने क्या हाल बना दिया है, यह हम

आपसे जानना चाहते हैं? आप हमारी पीड़ा को समझिए, इस देश की पीड़ा को समझिए और उन संतों की पीड़ा को समझिए। इसलिए, मथुरा और वृंदावन के बारे में आपका क्या दृष्टिकोण है, जरा यह बताइए?

माननीय मंत्री जी, हमने एक आंकड़ा निकाला कि दिल्ली में आपने 54 से 67 करोड़ रूपए प्रति किलोमीटर यमुना नदी पर खर्च किए हैं। Hon. Minister, would you kindly take note of my speech? तो आपके जो गंगा एक्शन प्लान– 1, गंगा एक्शन प्लान– 2, यमुना एक्शन प्लान– 1 और यमुना एक्शन प्लान– 2 हैं, तो क्या यमुना रिवाइवल का भी कोई प्लान है? It is high time that instead of Action Plan I and II, there is a transparent, committed revival plan for Yamuna? यह हम आपसे जानना चाहेंगे और उस दिशा में हम आपका मार्गदर्शन जरूर जानना चाहेंगे। मुझे मालूम है कि यह हमारे कई मित्रों की भी पीड़ा है और वे अभी बोलने वाले हैं।

महोदय, अब मैं अपनी कुछ बातें गंगा के संबंध में कहना चाहता हूं। गंगा इस देश की जीवनदायिनी है और मैंने आरंभ में बताया कि हम गंगा को मां–स्वरूप पूजते हैं। मैं पटना से आता हूं। एक समय जब मैं बच्चा था, तो जब भी हम पटना के घाट पर जाते थे, तो हमारे लोग बताते थे– यहां पर तारिक भाई भी बैठे हैं– कि गंगा का पानी ऐसा है, जिसको अगर वर्षों छोड़ दो, तो भी वह पानी कभी सड़ता नहीं। उस समय गंगा के बारे में यह धारणा थी। आज मेरे पटना में गंगा दूर चली गयी है, उसका कोर्स पांच–छः किलो मीटर दूर चला गया है, लेकिन माननीय मंत्री जी, मुझे तब शर्म आ गयी जब मालूम हुआ कि दुनिया की जो 10 टॉपमोस्ट पॉलुटेड रिवर्स हैं, उनमें गंगा आ गयी है। हमने गंगा को यह कौन–सी संज्ञा दे दी? हमने जीवनदायिनी गंगा को दुनिया की सबसे प्रदूषित नदियों में एक की संज्ञा दे दी? यह कौन–सा हिंदुस्तान हम बना रहे हैं? ऐसी नदी जो 29 क्लास वन शहरों से गुजरती है, 23 क्लास टू शहरों से गुजरती है, 40 छोटे शहरों से गुजरती है, जिसके घाट किनारे गंगोत्री से लेकर गंगासागर तक देश की 40 करोड़ आबादी रहती हो और जहां 20 लाख लोग रोज

स्नान करते हों, क्या आज वह गंगा दुनिया की सबसे प्रदूषित नदी है? यह हमारे लिए बहुत पीड़ा की बात है।

मैंने जानने की कोशिश की, तो पता चला कि इसमें प्रति दिन 1. 3 बिलियन सीवेज जाता है, अब उसका आंकड़ा कितना है, यह हम समझ सकते हैं। उससे हम इंसान तो प्रभावित हैं ही, लेकिन हमारी जो फिशरिज़ हैं, वे भी उसके कारण बहुत प्रभावित हुई हैं। मुझे बचपन की बात याद है कि उस समय पटना के आसपास से लेकर काशी तक डॉल्फिन इस नदी में दिखाई पड़ती थी, लेकिन अब गंगा की डॉल्फिन लुप्त हो रही है और गिनती भर बनी हुई है। उसके लिए आपको भी एक स्पेशल कार्यक्रम चलाना पड़ा, यह आपको मालूम है, क्योंकि आप उस विभाग की मंत्री हैं। गंगोत्री से गंगा चलती है ओर हरि के द्वार, हरिद्वार से समतल में आती है। वहां तो गंगा फिर भी ठीक है, लेकिन आज कानपुर में गंगा की क्या स्थिति है? वहां बरसात के समय भी गंगा का पानी महकता है। आज काशी में गंगा का क्या हाल है? आज प्रयाग, इलाहाबाद में इसका क्या हाल है? मैं अपने बिहार की बात अभी छोड़ रहा हूं, वहां भी परेशानी है। मुझे याद है कि अभी एक घटना हुई थी, जो बहुत ही शर्म की बात थी कि नेपाल के राष्ट्रपति बनारस हिंदू यूनिवर्सिटी में भाषण देने के लिए आए थे, क्योंकि वे वहीं से पढ़े–लिखे थे। उनकी इच्छा गंगा का दर्शन करने और गंगा में स्नान करने की थी, लेकिन उन्होंने गंगा के घाट पर नदी के प्रदूषण को देख कर कहा कि मैं स्नान नहीं करूंगा, हमने यह भी देखा है।

महोदय, इसके लिए हमारे कई संतों ने संघर्ष किया। एक स्वामी निगमानंद ने तो इसके लिए अपने जीवन का होम कर दिया। प्रो. जी. डी. अग्रवाल और स्वामी सम्पूर्णानंद जी इसके लिए संघर्ष करते हैं। हमारी उमा भारती जी 'निर्मल गंगा, अविरल गंगा' को लेकर संघर्ष कर रही हैं और उन्होंने पूरे देश का दौरा किया है। ये प्रयास चल रहे हैं और ये अच्छे प्रयास हैं, लेकिन मेरी पीड़ा की बात यह है कि यह सारा पैसा कहां जा रहा है? माननीय मंत्री जी, हम यह भी जानना चाहेंगे कि गंगा एक्शन प्लान वन और गंगा एक्शन प्लान– टू में कितने पैसे खर्च हुए और उसका नतीजा क्यों नहीं निकलता है? कानपुर में इतनी

tanneries हैं, इतनी टेक्सटाइल फैक्ट्रीज हैं, उन सब का कचरा सीधे गंगा में जा रहा है। यह एक राष्ट्रीय धरोहर है। माननीय मंत्री जी, मैं आपको बहुत साफ–साफ कहना चाहता हूं कि आज इस पूरे मामले को पॉलिटिकल तरीके से न देखा जाए। हमारे–आपके डिफरेंसिज होंगे, लेकिन इस पर पूरे देश को एक स्वर में बोलने की जरूरत है, क्योंकि अगर गंगा की विरासत कमजोर होगी, तो हिंदुस्तान की विरासत कमजोर होगी, आज मैं यह बहुत पीड़ा के साथ कहता चाहता हूं। आज जो स्थिति दिखाई पड़ रही है, वह बहुत चिंता की बात है, यह मैं आपसे जरूर कहना चाहता हूं।

हम आपसे यह भी जानना चाहेंगे कि यह जो coliform है, इसका नदियों में क्या हाल है और उसके लिए आपने क्या किया? मैंने यह मालूम किया था कि जब इलाहाबाद में गंगा एक्शन प्लान शुरू हुआ था, तब वहां गंगा में 13 नाले गिरते थे, अब उसमें 50 नाले गिरते हैं। काशी का हाल भी यही है। वहां नहाने के लिए 84 घाट हैं। वहां दो नदियों, अस्सी और बरूणा के बीच में गंगा है और अस्सी और बरूणा दोनों नाला हो गयी हैं। माननीय मंत्री जी, आप थोड़ा अपनी पूरी प्लानिंग के एप्रोच को भी दोबारा समझिए। उसमें गैप वन यह हुआ कि यह भारत सरकार तय करेगी, फिर यह हुआ कि प्रदेश सरकारें भी तय करेंगी, फिर यह हुआ कि भारत सरकार तय करेगी और अब आपने इसमें लोकल बॉडीज, नगरपालिकाओं को भी इंवाल्व करने की कोशिश की है। अब आप एक सिम्पल–सी बात यह देखिए कि आपने सीवर ट्रीटमेंट प्लांट लगा दिया, उसको चलने के लिए वहां पम्प चाहिए और पम्प को चलाने के लिए बिजली चाहिए।

बिजली की क्या स्थिति है, उसके मेंटीनेंस की क्या स्थिति है? मैं स्वयं एक बार बनारस गया था मैंने इस विषय को समझने की कोशिश की। मुझे एक संत ने बताया कि यह जो पंपिंग स्टेशन है, यह छः महीने से खराब है। हमने कहा कि क्या हो गया? उन्होंने बतलाया कि वाशर टूट गया है। जब उसे लगवाया तो बिजली नहीं आती। अब यह लोकल बॉडीज की समस्या आपको सिर्फ उसके हैंडिल पर नहीं हल करनी पड़ेगी। इसको एक मेजर रूप से हैंडिल करने की जरूरत है,

अगर हमें इन चीजों में सफल होना है। यह मैं आपसे बहुत विनम्रता के साथ कहना चाहता हूं। हमारी एक पीड़ा और है। नदियां होंगी तो नदियों पर हाइड्रो पॉवर बनेगा। उसकी डिमांड होगी, होनी भी चाहिए। लेकिन एक बात का ध्यान रखना चाहिए कि गंगा की निर्मल धारा कभी भी विचलित नहीं होनी चाहिए। मुझे बहुत पीड़ा हुई जब गंगा को टनेल से निकालने की बात हो रही थी हाइड्रो पॉवर के लिए। Sorry, it is not acceptable. गंगा की अविरल धारा, गंगा की निर्मल धारा पर किसी शर्त पर समझौता नहीं करना चाहिए। मैं बात कर रहा था कि यह कैसे हो सकता है। आज जब मुम्बई जाता हूं तो वहां की मीठी नदी समाप्त हो गई। अभी अपने दोस्त डॉ. मैत्रेयन से बात कर रहा था तो वहां चेन्नई की Adyar River लुप्त हो गई है। दक्षिण भारत की नदियों का हाल भी बहुत अच्छा नहीं है। शायद थोड़ा बढ़िया होगा, पापुलेशन डेंसिटी कम होने के कारण। लेकिन क्या गोदावरी, क्या गंगा, क्या गोमती, क्या यमुना, क्या चम्बल, क्या सोन, क्या सतलुज, सब जगह बहुत चिंता और पीड़ा की बात है, इसे हमें ठीक करने की जरूरत है। आज मैं आपको कुछ सुझाव देना चाहता हूं, अच्छा लगेगा अगर आप उसका उत्तर देंगी। अगर देश जागता है तो रास्ता निकलता है। आपको याद होगा कि हमने एक पल्स पोलिया केम्पेन चलाया था। क्या राज्य सरकारें, क्या केन्द्र सरकार सब जुड़े और हमें इस बात का आश्वासन है कि आज इस देश से हमने पोलियो का अंत कर दिया। हमने संतों को जोड़ा, हमने मौलवियों को जोड़ा, हमने हिंदुस्तान के हर कोने के लोगों को जोड़ा और आज eradication of Polio became a national mission, and, ultimately, we succeeded. Do you have any plan, hon. Minister, to make these rivers pollution-free as a part of the national mission? If you have a plan, what is the blueprint and how are you going to involve all the stakeholders? मुझे मालूम है कि प्रधानमंत्री जी अध्यक्ष हैं Ganga Action Plan के इसमें मुख्यमंत्री भी हैं। लेकिन उसका कोई असर नहीं निकला है। अभी देखिए, गुजरात की चर्चा बहुत होती है, कई कारणों से होती है। एक बात तो कहनी पड़ेगी कि साबरमती नदी जो अहमदाबाद में एक गटर बन गई

थी, आज पूरे प्रयास से उसको सुंदर बनाया गया। इस प्रकार साबरमती नदी रिस्टोर हो चुकी है, हम सभी देख रहे हैं। क्या ऐसा काम हम कर सकते हैं? अखबारों में आया है, हमारी सरकार में जब अटल बिहारी वाजपेयी प्रधानमंत्री थे, तब नदियों के जोड़ने की बात की थी। क्या नदियों को जोड़कर जहां एक्स्ट्रा पानी है, वहां से पानी ले जाकर अन्यत्र फ्रेश वाटर डाल सकते हैं, जहां नदियां परेशान हैं और जहां लुप्त हो रही हैं या उनके पास इनरचार्जींग वाटर नहीं है? हम इन चीजों को आपसे जरूर सुनना चाहेंगे। हमें एक बात और कहनी है, आज आपको मुझे विनम्र रूप से आग्रह करना है। 1986 से गंगा एक्शन प्लान आया, 1993 से यमुना एक्शन प्लान चल रहा है, Correct me, if I am wrong. आज हम 2013 में हैं। क्या गंगा, क्या यमुना दोनों की हालत पीड़ादायक है और यमुना तो ऐसी है कि आंखों में आंसू आते हैं। माननीया मंत्री जी, करदाताओं के हजारों करोड़ रूपए खर्च हुए। क्या आप कोई व्हाइट पेपर लाएंगी, ताकि संसद को आप बता सकें कि कहां कितना खर्चा हुआ, कहां कमजोरी हुई और कहां सुधार की जरूरत है? मैं डिमांड करता हूं कि भारत की नदियों के प्रदूषण मुक्त होने के बारे में एक व्हाइट पेपर संसद में लाया जाए, ताकि हम विशेष रूप से गंगा और यमुना के बारे में जान सकें, यह हमारा आपसे आग्रह है।

दूसरी बात, आपकी योजना में 'The Rivers are pollution-free visually'. देखने से ही लगे कि नदी स्वच्छ है, निर्मल है। इसके बारे में क्या योजना है? नदियों के restoration plan के बारे में एक्शन प्लान के साथ–साथ क्या restoration plan की बात आप करेंगी? एक मेरा और सुझाव है, जो मेरे मित्र ने दिया कि जैसे माननीया मंत्री जी, आप समुद्र किनारे CRZ बनाती हैं। क्या बड़ी नदियों के किनारे कोई River Regulation Zone बनाने का आप विचार कर रही हैं, ताकि निकट स्तर से रिअल एस्टेट का डेवलपमेंट न हो जमीन के किनारे, जो बड़ी–बड़ी नदियों के किनारे हैं, वहां एक नियंत्रण हो।

जो पुराने मंदिर हैं, पुराने घाट हैं, हमारी नदियों की कल्पना उनसे नहीं की जा सकती। इसलिए हम सब को डिस्टर्ब नहीं कर सकते,

लेकिन मैं जानना चाहूंगा कि इस देश में जो बेतहाशा कंस्ट्रक्शन हो रहा है, उस बारे में आप क्या करने जा रही हैं? महोदय, urbanization and industrialization की भूख में नदियों के किनारे न बिक जाएं, इस संबंध में कोशिश की जानी बहुत जरूरी है।

माननीय मंत्री महोदया, मैं अपने इस संपूर्ण intervention को देश की पीड़ा के माध्यम से व्यक्त करना चाहूंगा। आज राज्य सभा देश की पीड़ा की अभिव्यक्ति कर रही है। यह पीड़ा राजनीति से परे हैं, यह पीड़ा दलों से ऊपर है क्योंकि यह देश की पीड़ा है और यह पीड़ा आपकी पीड़ा भी है। मुझे इस बात का बहुत संतोष है कि जब हमने इस बारे में चर्चा की बात की तो सारी पार्टीज के लोगों ने हस्ताक्षर किए। माननीय मंत्री महोदया, अगर यही देश की पीड़ा है, तो उस पीड़ा का प्रकटीकरण सरकार की ईमानदार कार्यवाही और उसके समाधान के माध्यम से होना चाहिए। इसलिए हम जानना चाहेंगे कि इस बारे में आपकी क्या सोच है? आज मैं बीजेपी की ओर से आपको आश्वस्त करना चाहता हूं कि इस दिशा में आप जिस तरह का भी कार्य करेंगी, हमारा पूरा सहयोग होगा क्योंकि हम चाहते हैं कि यमुना, गंगा, गोदावरी, कावेरी– ये सभी जो इस देश की धरोहर हैं, अपने पुराने स्वरूप में आएं क्योंकि आज हम हैं, कल नहीं रहेंगे, लेकिन ये नदियां हजारों वर्षों से हैं और आने वाले हजारों वर्षों तक भारत को सींचेंगी और लोगों को पानी पिलाएंगी। अगर उनकी आज जैसी स्थिति रही, तो शायद आने वाले generations के साथ हम बहुत बड़ा अन्याय करेंगे।

माननीय उपसभापति जी, आपने मुझे इस अत्यंत महत्वपूर्ण विषय पर बोलने के लिए समय दिया, मैं आपका बहुत ही कृतज्ञ हूं। मंत्री महोदया की बड़ी कृपा होगी अगर वे मेरे द्वारा उठाए गए बुनियादी सवालों का उत्तर देंगी। बहुत–बहुत धन्यवाद। ■

हमारे पाखंड ने गंगा को गंदा किया : तरुण विजय

vkदरणीय उपसभापति जी, मैं केवल एक श्लोक बताना चाहूंगा। हर व्यक्ति, हर हिंदू, जो सुबह स्नान करता है, जल कहीं का भी हो, एक मंत्र पढ़ता है,

गंगे च यमुने चैव गोदावरी सरस्वती
नर्मदे सिंधु कावेरी जलेऽस्मिनसन्निधिम कुरू।

वह जब तक इन सात पवित्र नदियों का स्मरण कर उसका आह्वान नहीं करता उस पवित्र जल से स्नान करने के लिए तैयार नहीं होता है। हमने सभी नदियों का स्मरण किया। गंगा के बारे में बताना चाहूंगा कि भारतीय जनसंघ के पूर्व अध्यक्ष आचार्य रघुवीर थे। वे जब मंगोलिया गए तो वहां, उलान बटोर से एक मांग आई कि आप जब आएं, तो अपने साथ में गंगा जल लेकर आएं। जब आचार्य रघुवीर उलान बटोर गए तो उलान बटोर में उस गंगा जल के कलश के साथ उनकी शोभा यात्रा निकाली गई। पूरे पूर्वी एशिया की प्राण, जो मीकांग नदी है, वह मीकांग नदी मां गंगा का अपभ्रंश है। गंगा केवल भारत नहीं, बल्कि संपूर्ण पूर्वी एशिया की प्राणवाहिनी, उसको पहचान देने वाली नदी बनी और सिंधु वह नदी बनी, जिसने भारत को नाम दिया, हमारी जाति को नाम दिया, हमारे देश को नाम दिया। फारूख साहब यहां पर बैठे हैं। हमने 1996 में सिंधु दर्शन प्रारम्भ किया। वे पहले आए थे। सिंधु से हिंदू बना। हम हिंदू इसलिए हैं, क्योंकि एक नदी है, जिसका नाम सिंधु है, उससे इंडिया बना, हमारा नाम इंडिया इसलिए

हुआ, क्योंकि एक नदी है, जिसका नाम इंडस है, हम इंडियन हुए, क्योंकि एक नदी है, जिसके पार रहने वालों को इंडियन कहा गया, हिंदुस्तान हुए , क्योंकि एक नदी है, जिसका नाम सिंधु है और हिंदु उसके नाम से आया। इस सिंधु नदी ने हिंदुस्तान शब्द दिया, हिंदू शब्द दिया, इंडिया शब्द दिया। एक देश को पहचान देने वाली यदि कोई नदी हुई, तो वह सिंधु नदी हुई। पूरी दुनिया में कोई ऐसी नदी नहीं है, जिसने एक देश, एक सभ्यता को नाम दिया हो।

हम सब सिंधु के उपासक हैं और सिंधु के तट पर, सिंधु घाट का डिजाइन हमने बनाया, लेकिन आज स्थिति यह है कि पाकिस्तान से जो इंडस ट्रीटी हुई है, उससे पूरे लद्दाख और कश्मीर को सिंधु का पानी नहीं मिल रहा है, खतरा हो गया है। उधर चीन सिंधु पर बांध बना रहा है, जिससे हमारी सिंधु को खतरा पैदा हो गया है, हमारे देश को खतरा पैदा हो गया है।

उपसभापति महोदय, पूरी दुनिया में एक नदी है, जिसने एक देश को नाम दिया। मैं केवल एक बात कहना चाहता हूं कि हम गंगा को अपवित्र करते हैं, यमुना को अपवित्र करते हैं, सरकार का भी दोष बताते हैं, लेकिन उसमें सारे रंग की सरकारें शामिल हैं। जिसके हिस्से में जो आया, उसने गंगा और यमुना पर कोई काम नहीं किया, इसलिए दोषी और अपराधी हम हैं। मैं उत्तराखंड से आता हूं। 1 लाख साल से गंगा नदी को सूखी धारा कभी किसी ने नहीं दिखाई, लेकिन हमने दिखाई। हमने वह जलवा दिखाया कि भागीरथ, जो उत्तराखंड में गंगा लेकर आए और शिव की जटाओं में गंगा समाई, उस गंगा को सुखा कर उत्तर काशी के ऊपर अगर किसी ने गंगा का तल दिखा दिया, जो 1 लाख साल से किसी ने नहीं देखा था, वह तल हमने दिखाया। बाहर से कोई विदेशी लोग नहीं आए, न मुगल आए, न तुर्क आए, न अरब आए, हम लोगों ने, हम जो हिंदू, हिंदू कहते हैं, हमारे पाखंड ने गंगा को गंदा किया, हमारे पाखंड ने यमुना को गंदा नाला बनाया जिनका कूड़ा, कर्कट, केमिकल और फर्टिलाइजर उस गंगा को गंदा करता है, क्या वे कोई विदेशी लोग हैं? ये लोग वे हैं, जो दस उंगलियों में पंद्रह अंगूठियां पहनते हैं, साल में पन्द्रह–पन्द्रह हवन, यज्ञ करवाते

हैं। वे संत हैं, महात्मा हैं, मठाधीश हैं और उनका पाखंड गंगा के किनारे गंगा को अपवित्र करता है। हमने देखा है कि जब जन सैलाब उमड़ता है तो बड़ी से बड़ी सत्ता उसके सामने झुक जाती है। वही रामदेव, जिनको लेने के लिए प्रणब मुखर्जी साहब भी गए थे, गंगा को लेने के लिए आपने कौन सा जन सैलाब उमाड़ा? आप कौन सा जन सैलाब लेकर आए। हिंदू–मुसलमान दोनों इकट्ठे होकर आएंगे, लेकिन जब जनता सजग और सचेत होगी और गंगा के किनारे आजीविका के लिए दुकानें चलाने वाले इन लोगों के ऊपर प्रश्न करेगी, तब यह गंगा पवित्र होगी। हमने देखा इन संतों, महात्माओं के आश्रम, गंगा को अपवित्र करने वाले ऋषिकेश और हरिद्वार।

उनसे कौन सवाल करेगा? उपसभापति जी, केवल जनता के पाखंड पर चोट होगी, जनता को खड़ा किया जाए। सरकार और समाज का समन्वय, गंगा, यमुना और सभी नदियों की पवित्रता करे, इसके लिए इस पाखंड पर चोट होनी चाहिए। ऋषि दयानंद की पाखंडखंडिनी पताका लेकर फिर से हिंदू खड़ा हो, क्योंकि हर हिंदू भी इस गंगा, यमुना को गंदा नाला बनाने में उतना ही शरीक है, जितने सत्ता के लोग हैं। ■

नदी आयुर्विज्ञान संस्थान बनना चाहिए : अनिल माधव दवे

vkज का जो विषय है वह है भारत की नदियां, विशेष संदर्भ गंगा और यमुना। भारत की संसद को भारत की सारी नदियों पर विचार करना पड़ेगा। केरल की नीला नदी को छोड़कर बात नहीं हो सकती, असम की सियांग नदी को छोड़कर बात नहीं हो सकती, गुजरात की ओजत नदी को छोड़कर बात नहीं हो सकती, सारी की सारी नदियां गंगा परिवार है। गंगा का यह पूरा परिवार है, इस परिवार के अंदर जितनी नदियां हैं, उन सारी नदियों के स्वास्थ्य का विचार जरूरी है और जब हम नदी कहते हैं तो सारे लोग नदियों का मतलब निकालते हैं कि दो किनारों के बीच में बहता हुआ पानी। यह नदियों के संबंध में अधूरी समझ है।

नदियों के संबंध में मेरा विषय इंटरनेट से डाउनलोडेड नहीं है, यह किसी पांच सितारा होटल के सेमिनारों में से नहीं निकलता है। यह नदी के किनारे पनपता है और नदी के किनारे धूल खाकर केवल चप्पल चटका करके खड़ा होता है। हम नर्मदा के संरक्षण पर काम करते हैं, नदी को उसकी समग्रता से समझने की जरूरत है, नदी अपने आप में दो किनारों के बीच में बहता हुआ पानी नहीं है, नदी अपने सम्पूर्ण जल ग्रहण क्षेत्र के साथ एक इकाई है। जो उसका catchment area है, वह catchment area के साथ जल ग्रहण के साथ वह एक इकाई है। जब भी किसी नदी पर बात करनी होगी तो केवल उसके दो किनारों के बीच बहते पानी से बात नहीं हो सकती, उसके सम्पूर्ण जल क्षेत्र पर बात

करनी होगी। नदी के संबंध में हम एक शब्द प्रयोग करने लग गए हैं और विशेषकर भारतीय प्रशासन में यह प्रयोग होता है, water body. नदी water body. नहीं है, यह एक जीवित इकाई है। इससे बात करो तो यह बात करती है, इसके साथ अगर गलत काम करो तो यह सजा देती है, इसके साथ अगर अच्छा व्यवहार करो तो यह आशीर्वाद देती है। क्योंकि, भारतीय चिंतन परम्परा के अंदर हमने इसे वाटर बॉडी बना दिया, जबकि हमको इसको यूज करना चाहिए, maximum utilisation of water, ऐसे–ऐसे फंडे खड़े कर दिए जो विषयों को समझते नहीं थे, वे कर्णधार बन गए और 65 सालों के अंदर हमने नदियों के मामले में दो काम किए हैं। जिन नदियों को हम सुखा नहीं पाए उनको हमने मैला कर दिया। भारत की सारी नदियों के साथ दो ही काम हुए हैं। जिनको मनुष्य सुखा सकता था, भारत की जनता सुखा सकती थी, भारत की सरकार सुखा सकती थी उनको हमने सुखा दिया। इस प्रकार अपने आसपास की सारी नदियों को देख लीजिए। जिन नदियों को हम सुखा नहीं सकते थे, गंगा को नहीं सुखा सकते थे, सियांग को नहीं सुखा सकते थे, ब्रह्मपुत्र को नहीं सुखा सकते थे, तो उनका क्या किया? हमने उनको गंदे नाले में तब्दील कर दिया है, उन्हें बहते हुए गंदे नाले बना दिया है। इन गंदे नालों के अंदर सबसे बड़ी भूमिका अगर किसी की है तो सरकार की है और शहरों की है। विशेष रूप से मैं कह रहा हूं कि अगर आप यह जानना भी चाहते हैं कि ये दोनों किस प्रकार से इसको प्रदूषित कर रहे हैं, तो सरकार नीतियों के माध्यम से प्रदूषित करती है और शहर उसको अपने जल–मल के माध्यम से प्रदूषित करता है। जो लोग यह कहते हैं कि फूल नदी में डालने से नदी गंदी हो जाती है या उसके किनारे किसी को जलाते हैं तो उससे प्रदूषण होता है, यह अधकचरा ज्ञान है। बिहार के अंदर यह कहावत है कि भगवान ने मुंह में जुबान दी हो तो हमें कुछ भी नहीं बोलना चाहिए। अगर प्रदूषण के सही मानकों को हम नहीं पहचान रहे हैं और इसलिए हमारे यहां वक्ता के संबंध में कहा गया है कि जो वक्ता जोर से बोलता है, जो चीख कर बोलता है, इसका मतलब, वह असत्य भाषण कर रहा है।

इसिलए मैं यहां कह देना चाहता हूं कि ऐसा कोई विषय नहीं है। नदी प्रदूषित हो रही है, जो रसायन हम उसमें डाल रहे हैं, जो लाखों

टन यूरिया और पेस्टिसाइड बरसात से बहकर उसकी Aquatic life के अंदर आ रहा है, उसने उसको पूरी तरह से बदल दिया है और ऐसा करने में हमने कोई कमी नहीं बरती है। जयराम रमेश जी हमारे मंत्री हैं, वे बोलते हैं कि खुले में शौच जाना शर्म का विषय है। बिल्कुल सही बात है। खुले में शौच जाना यह लज्जा का विषय है। लेकिन यहां मैं प्रश्न करना चाहता हूं कि एक आदमी के सार्वजिनक रूप से खुले में शौच जाना लज्जा का विषय है, डेढ़ करोड़ लोगों का जल–मल यमुना में डाल देना यह लज्जा का विषय नहीं है? इस पर लज्जा नहीं आ रही है कि डेढ़ करोड़ लोगों का मल–मूत्र यमुना जी में जा रहा है, इस पर किसी को लज्जा नहीं है।

एक आदमी के खुले में शौच जाने पर लज्जा महसूस होती है, यह एक विसंगित है और इस विसंगित को हमें समझना पड़ेगा।

उपसभापित जी, अगर हमारी नदियों को प्रदूषित होने से नहीं रोका गया, तो आजकल सेमिनारों में जुमले चल गए हैं कि तीसरा विश्व युद्ध पानी के लिए होगा। मुझे नहीं मालूम कि यह होगा या नहीं होगा, लेकिन वर्ग संघर्ष जरूर पैदा होगा और पानी के स्वामित्व को लेकर वर्ग संघर्ष होगा। 'रेणुका' के पानी को लेकर लोग कह रहे हैं कि हमारा पानी दिल्ली क्यों जाएगा? आपने यमुना से पानी ले लिया, तो down stream के लोग कह रहे हैं कि हमारा पानी कहां है? आप ज्यादा पानी कैसे ले रहे हैं? व्यक्ति और समाज में, समाज और सरकार में और सरकार व उसकी नीतियों में यह वर्ग संघर्ष कल बहुत भीषण स्वरूप ले लेगा। महोदय, इसे टालने का एक माध्यम है क्योंकि विषय को समझने या न समझने के कारण सारी समस्या पैदा होती है।

महोदय, मैं यहां एक उदाहरण देना चाहता हूं कि व्यवस्था को कैसे ठीक किया जा सकता है। रक्षा मंत्री जॉर्ज फर्नान्डीज साहब ने अपने मंत्रालय में एक नोट चलाया कि कारिगल में रहने वाले सैनिकों को एक विशेष प्रकार के जूते, मोजे और हाथ के दास्तानों की जरूरत है। उन्हीं के डिपार्टमेंट या फाइनेंस डिपार्टमेंट के लोगों ने उस प्रस्ताव पर रेड लाइन लगा दी कि not necessary, जो पुराने हैं, वे ही होने चाहिए। जॉर्ज फर्नान्डीज साहब ने कहा कि जितने लोग इस काम से जुड़े हुए थे और जो यह मानते हैं कि इन जूते और दास्तानों की जरूरत नहीं है, उन

सब को सियाचिन ग्लेशियर में एक सप्ताह के लिए भेज दो। ये जब वहां रहकर आ जाएंगे तो इन्हें समझ में आ जाएगा कि इन दास्तानों की कितनी जरूरत है।

महोदय, मैं स्पष्ट रूप से कहना चाहता हूं कि हम यहां बैठ कर देश की समस्याओं की चर्चा करते हैं। आप यहां और नॉर्थ ब्लॉक, साउथ ब्लॉक में, जहां प्रशासिनक अधिकारी बैठते हैं, एक दिन के लिए, दिल्ली में बह रही यमुना का पानी इनके एरिया में सप्लाई कर दीजिए, एक दिन के लिए कानपुर की down stream के पानी को यहां सप्लाई कर दीजिए, फिर आप देखेंगे कि बजट भी sanction हो जाएगा और लोग काम में भी लग जाएंगे।

हमारी समस्या यह है कि हम ग्रामीण आदमी की बात नहीं समझते, हम पिछड़े और अंतिम आदमी की बात नहीं समझते। हम तो टाई बांधने वाले व अंग्रेजी बोलने वाले की बात समझते हैं। आप वह पानी एक दिन यहां सप्लाई कर दीजिए और मैं भी यहां रहूंगा। वह पानी जब हमारे घरों में सप्लाई होगा तो आपको पता चलेगा कि यमुना के पानी की क्या स्थिति हो गयी है। अध्यक्ष महोदय, मुझे लगता है कि जॉर्ज फर्नान्डीज साहब का तरीका ज्यादा कारगर और सही है और इससे भारत की नदियों की पीड़ा को हमारे नीति निर्धारक समझ सकेंगे।

महोदय, नदी सिर्फ पानी नहीं है, वह अर्थशास्त्र है। नदी समाजशास्त्र है, नदी शिक्षा है। मैं जब केरल गया तो मुझे जानकर आश्चर्य हुआ कि नीला नदी वहां की संस्कृति, संगीत व सारी विधाओं का केन्द्र रही है। महोदय, आज असम इसलिए बना हुआ है क्योंकि वहां सियान नदी के किनारे न्याम घरों का जाल बिछा हुआ है।

इसलिए नदी कहीं–न–कहीं समाज है, संस्कृति है और हमें नदी को एक पूरे परिप्रेक्ष्य में समझना चाहिए। अगर हम इस पूरे परिप्रेक्ष्य में नदी को समझ जाएंगे, तो मुझे लगता है कि हमारी समस्या का आधा समाधान उसी क्षण हो जाएगा जब हम ठीक से diagnose कर लेंगे कि बीमारी क्या है। आज सारी बातें प्रदूषण पर सीमित हो गयी हैं। मैं मंत्री जी को बताना चाहता हूं कि एसटीपी नाम की टैक्नॉलोजी एक बहुत बड़ा fraud है। एसटीपी का प्लांट लगने के बाद उसका महीनेभर का बिल आने पर नगर निगम कहती है कि इसका भुगतान वह नहीं कर सकती। यह मेरी

औकात से बाहर का विषय है। फिर क्यों treated या untreated पानी नदी में मिलना चाहिए? आप यह कैसे कह रहे हैं कि treated पानी नदी में डाला जाना चाहिए? क्या treated पानी हमारे शरीर में लगनेवाली saline में मिलाया जा सकता है? तो नदी को क्या हमने कचरा समझ रखा है कि हम treated पानी उसमें डाल देंगे? हम मान रहे हैं कि 'निर्भया' के साथ ज्यादती हुई और बाद में उसके पेट के अंदर सरिया डाल दिया गया।

इस देश की नदियों के साथ अत्याचार हो रहा है और उसके बाद प्रदूषण रूपी सरिया उसमें डाल दिया जाता है। सजा क्या मिलनी चाहिए? व्यक्ति को सजा मिल सकती है, व्यवस्था को सजा क्यों नहीं मिलनी चाहिए? इररिस्पॉबिल एडिमिनस्ट्रेशन कैसे हो सकता है? How can you say no today And yes tomorrow? यह कमजोर प्रशासिनक तंत्र के कारण है और इसलिए मैं आपसे निवेदन कर रहा हूँ। मैं अभी राजीव गांधी जी के ऊपर आने वाला हूं, क्योंकि उस आदमी को पीड़ा थी, उनको कष्ट था। इसलिए उन्होंने कहा था कि इसको ठीक करो, यह क्या हो रहा है, अगर पैसा चाहिए तो ले लो, मगर इस काम को करो। चूंकि उस पीड़ा को समझने वाले लोग आसपास नहीं थे, आसपास तो हिसाब करना था। अभी आप जिस बात पर नाराज हो रही थी, वह बात अपनी जगह आंशिक रूप से सही हो सकती है कि किसी के व्यक्तिगत आभूषण को लेकर आरोप नहीं होना चाहिए, लेकिन इस बात का भी पता लगाना चाहिए कि पांच हजार करोड़ रुपए कहां चले गए? इतने पैसे खर्च होने के बाद भी गंगा की और यमुना की ऐसी दुर्दशा क्यों है? अगर ऐसा है, तो इसके लिए किसकी कितनी भूमिका है? इस बारे में निश्चित तौर पर जांच करने की आवश्यकता है।

महोदय, सुझाव के रूप में मैं यहां पर दो–तीन बातें कहना चाहता हूँ। माननीय प्रधान मंत्री जी को इस संबंध में मैंने एक पत्र लिखा था और मैं उनका आभारी हूँ कि उन्होंने उस पत्र को आगे फार्वर्ड किया है। मैंने कहा है कि एक नदी आयुर्विज्ञान संस्थान बनना चाहिए, जिसके अंदर नदी पेशेंट है। यहां पेशेंट अस्पताल नहीं आएगा बल्कि अस्पताल पेशेंट के पास आएगा और इसमें हर साल पूरे देश की नदियों के संबंध में विचार होना चाहिए, जैसे हम व्यक्ति का अध्ययन करते हैं कि इसका

हॉर्ट इस साल कैसा था, लंग्स कैसे थे, किडनी कैसी है, लीवर कैसा है और बाद में एक रिपोर्ट बनाते हैं कि यह इस व्यक्ति की एग्जिक्यूटिव रिपॉर्ट है कि इस साल इसके स्वास्थ्य में सुधार हुआ है, उसी तरह नदी के अंदर होने वाले परिवर्तन के ऊपर अगर हमने हर साल विचार नहीं किया और उसको ठीक से मॉनिटर नहीं किया तो फिर यह घड़ियाली आंसू हैं, बहा लीजिए, गंगा को लेकर बहा लो, यमुना को लेकर बहा लो, बाकी सारी चीज़ें कर लो, स्थिति वहीं की वहीं खड़ी रहेगी। अगर हम निदान चाहते हैं तो कहीं न कहीं हमें नदी के स्वास्थ्य को एक जीवित व्यक्ति के स्वास्थ्य की तरह मॉनिटर करने की जरूरत है, जिसको करना पड़ेगा।

महोदय, जल के संबंध में समाज में एक अनुशासन खड़ा करना पड़ेगा। एक अरब बीस करोड़ लोगों के बीच में जो पानी के उपभोग को लेकर असमानता है, वह असमानता कल उठकर वर्ग–संघर्ष का कारण बनेगी। महानगरों में रहने वाला एक व्यक्ति 200 लीटर पानी प्रति दिन यूज़ कर रहा है और राजस्थान के अंदर, महाराष्ट्र के कई हिस्सों में रहने वाला, उड़ीसा के कई हिस्सों में रहने वाला एक व्यक्ति बीस लीटर पानी भी यूज़ नहीं कर पा रहा है। चेरापूंजी में रहने वाला आदमी भी नहीं कर पा रहा है। कहने का तात्पर्य यह है कि जो उपभोग में विसंगति है, इस विसंगति को दूर करने की जरूरत है। ठीक है, दस, बीस, तीस लीटर का समझ में आता है, मगर बीस लीटर और दो सौ लीटर की जो विसंगति है तो फिर गांव वालों को यह लगता है कि नदी मेरी, तालाब मेरा और यहां से पंप डालकर ले जाओगे, बेकाम यूज़ करोगे और मुझे पीने को नहीं है, मुझे नहाने को नहीं है, मेरे खेत के लिए पानी नहीं है, तो इसे लेकर फिर अगर रामलीला मैदान पर कोई झंझट होता है तो वह नई बात नहीं है। इसको लेकर पूरे देश में रामलीला खड़ी हो जाए तो आश्चर्य का विषय नहीं है। यह होकर रहेगा, क्योंकि पानी के उपभोग के संबंध में समाज के अंदर जो विसंगित है, इस विसंगति को समझने की जरूरत है और मुझे लगता है कि इसके पहले कि आने वाले पांच या दस वर्षों के अंदर इस विश्व के अंदर बादलों की चोरी होने लग जाय, क्योंकि पांच से दस वर्षों के अंदर इस देश के जी–7 कंट्रीज बादलों की चोरी करने लगेंगे, यह जो हिमालय और बड़ी–बड़ी पहाड़ियों पर बर्फ जमी हुई

है, यह बर्फ संघर्ष का कारण बन जाएगी। यह बर्फ एक तरह से जिस–जिस ढंग से पानी का स्टोर किया जा सकता है उसका स्टोरेज है और सूक्ष्म जल जो हवा में विद्यमान है यह सूक्ष्म जल भी चोरी होने लगेगा। इससे पहले कि इन सारी चीजों की चोरियां शुरू हो जाएं, इसके पहले climate change और global warming के नाम पर जो–जो चलता है, वह चलता रहे, क्योंकि मैं ऐसे सारे सेमिनारों में जाता रहता हूँ और मैं देखता रहता हूँ कि जो लोग भाषण करते हैं वही डाइनिंग टेबल के ऊपर ही भोजन खराब कर देते हैं, जिसको बनाने के लिए इतना कार्बन एमीशन करना पड़ा। इसलिए इन लोगों के भरोसे समस्यायों का निदान नहीं हो सकता। यह तथ्य बदलने पड़ेंगे और इनको इस जगह से हटाना पड़ेगा। बीमारी की जड़ यहीं हैं। यही तोलोलिंग है, जिसकी टॉप पर से गोली चल रही है, एलएनजी चल रही है। तो सबसे पहले इस एलएनजी को ठंडा करो, क्योंकि जब तक यह एलएनजी चलती रहेगी, तब तक ऊपर जाने को नही मिलेगा और हम जीत भी नहीं पाएंगे। मुझे लगता है कि उस दिशा में सोचने की जरूरत है।

अंतिम बात कहते हुए मैं अपनी बात समाप्त करूंगा कि हर एंगल पर हमें पानी की बचत को लेकर सोचना पड़ेगा कि वाश–बेसिन की डिजाइन, कमॉड की डिजाइन, नल का स्वरूप कैसा हो, जिससे पानी की बर्बादी कम हो सके। एक बच्चा बीस–बीस मिनट तक शॉवर के नीचे नहा रहा है और दूसरा बच्चा गाय का पेशाब पीकर अपनी प्यास बुझा रहा है।

चाहिए तो फोटो भी उपलब्ध है, ले लीजिए। अब यह जो विसंगति है, इस विसंगति को कैसे दूर करेंगे? इसके लिए हमें कहीं न कहीं technology का सहारा लेना पड़ेगा। मैं अंतिम बात कहकर अपनी बात समाप्त करूंगा। एक शायर की बहुत प्रसिद्ध शायरी है, और वह बहुत बार कही गई है। चूंकि राजीव गांधी जी ने इस काम को करने के लिए बहुत पीड़ा के साथ पैसे दिए और उन्होंने कहा कि कर लो। मैं जानता हूं कि एक सभ्य आदमी, अगर अपने से छोटे लोगों के बीच फंस जाए, तो उसकी क्या दुर्गति होती है, I understand, मैं उन्हें समझ सकता हूं। उनके संबंध में शायर ने कहा कि ''इधर–उधर की बात न कर, यह बता कि काफिला लुटा कैसे''?

मंत्री महोदया, मैं आपसे निवेदन करूंगा कि आप जवाब देते समय इधर–उधर की बात न करके, केवल यह बताना कि राजीव गांधी जी का सपना लुटा कैसे? पहले 1985, फिर 1995, फिर 2005, अब 2015 पर आकर हम खड़े हो गए हैं। आप कहीं मत जाइए, उन्हीं Treasury Benches से, जिनके नाम से खाते हैं, कमाते हैं, सारा सब–कुछ चल रहा है, जिनके बिना पार्षद का चुनाव जीतना मुश्किल है, ऐसे लोगों के भरोसे हम चल रहे है और अगर हम उनके सपनों को पूरा नहीं कर पा रहे हैं, तो यह आने वाले भविष्य में बड़े संघर्ष का विषय है।

आज नदियां संरक्षण चाह रही हैं, संरक्षण चाहने के अंदर एक शब्द का प्रयोग बंद कर दीजिए कि हमें हिमालय बचाना है, नदियां बचानी हैं। क्या औकात है तुम्हारी? तुम तो सौ साल में मर जाओगे, तुम क्या नदी बचाओगे और तुम क्या हिमालय बचाओगे! अगर बात करनी है, तो कहो कि हमें हिमालय की सेवा करनी है। "Wife" कहने में और 'अर्द्धांगिनी' कहने में फर्क है। शब्दों के प्रयोग से अंतर आता है। मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि बचाने की ज़िद छोड़िए, गंगा की सेवा शुरू करिए, यमुना की सेवा शुरू करिए।

उपसभापित जी, आपने यह जो विषय आज यहां लिया है, मुझे तो नहीं लग रहा था कि यह विषय इस संसद में कभी उठ सकता है, क्योंकि नदी तो priority sector में बहुत पीछे का विषय है, तालाब तो priority sector में बहुत पीछे का विषय है, क्योंकि हम बहुत high-tech लोग हैं, हमें समझ में नहीं आता है या तो हम एक निश्चित सीमा से बहुत ज्यादा पीड़ित हो जाते हैं, तब हम समझते हैं। आपने इस विषय को यहां रखने दिया, मुझे इस चर्चा में भाग लेने का अवसर दिया, इसके लिए मैं आपका और अपने दल का बहुत आभारी हूं। धन्यवाद। ■

हमारी नदियां बचनी चाहिए : संजय राउत

सर, मैं आपका आभारी हूं, जो आपने मुझे इस पर बोलने का मौका दिया है। मैं रविशंकर प्रसाद जी का भी आभारी हूं कि उन्होंने एक अच्छे विषय पर यहां चर्चा शुरू की है। यहां दंगे तो बहुत होते हैं, लेकिन जो गंगा का विषय आपने लाया है, उसके लिए मैं आपका आभारी हूं।

गंगा, यमुना, सरस्वती, गोदावरी, कावेरी आदि का हर राज्य में नाम अलग है, लेकिन वह गंगा है। यह विषय पूरे देश के साथ और देश की आस्था के साथ जुड़ा हुआ है। आज हमारी सभी नदियां, चाहे वह गंगा हो या यमुना, मुझे लगता है कि अगर वे सजीव होतीं, तो हमारे सामने रोने लगतीं कि हमारी यह क्या हालत बना दी है। हमारी नदियां आज आह भरती होंगी। गंगा भी रो–रोकर कहती होगी, कि :

मेरे बीते हुए कल का तमाशा न बनो,
मेरे आने वाले हालात को बेहतर कर दो,
मैं बहती रहूं अविरल, इतना सा निवेदन है,
नदी से मुझको सागर कर दो।

लेकिन, हमने नदी का नाला बना दिया है। गंगा हमारी सभ्यता और हमारी संस्कृति का प्रतीक है। चाहे वह गंगा हो या यमुना, ये नदियां हमारे लिए केवल बहती हुई जलधाराएं नहीं हैं, बल्कि ये हमारी आस्था और श्रद्धा का भी प्रतीक हैं। ये हमारे आध्यात्मिक, धार्मिक व वैज्ञानिक आदि महत्वपूर्ण विषयों के साथ–साथ हमारे रोजगार से भी जुड़ी हुई हैं। इनका हमारे जीवन पर इस कदर असर है कि हम सौगंध भी गंगा की खाते हैं, गंगा की शपथ लेते हैं और अपनी पवित्रता दिखाने के लिए कहते हैं कि हम गंगा की तरह पवित्र हैं।

इसलिए गंगा का महत्व हमारे जीवन में, हमारे देश में और हमारे संसार में बहुत है। गंगा 11 राज्यों से होकर गुजरती है और देश की 40 प्रतिशत जनता की प्यास बुझाती है। जहां तक धार्मिक आस्था का सवाल है, तो देश ही नहीं बल्कि पूरे विश्व से लोग गंगा किनारे आते हैं और गंगा में डुबकी लगा कर खुद को पापमुक्त करने की कोशिश करते हैं, पवित्र होते हैं। बदले में हम गंगा को क्या देते हैं? हम देते हैं, प्रदूषण और गंदगी। यह हमारा दुर्भाग्य है कि जिस नदी की महिमा और पवित्रता पूरे विश्व के लिए अध्ययन का विषय बनी है और जिसके लिए विदेश से सैंकड़ों वैज्ञानिक यहां आते हैं, उस नदी में हम हर दिन 30 हजार से 35 हजार एमएलडी गंदगी और मल डाल देते हैं। हजारों कत्लखाने, सैंकड़ों केमिकल प्लांट्स, टेक्सटाइल मिल्स, नाले और नालियों के जरिए ये गंदगी बिना ट्रीटमेंट के ही नदी में छोड़ दी जाती हैं। जिसे हम पवित्र गंगा जल कहते हैं, वह गंगा जल आज जहर बन गया है। हाल ही में, उत्तर प्रदेश के सात शहरों से 11 नमूने लिए गए थे, जिनमें बैक्टीरिया के मामले में सबसे प्रदूषित पानी वाराणसी में मिला। वाराणसी में गंगा के प्रवेश के वक्त 1,40,000 बैक्टीरिया पाए गए, तो इसके निकलते वक्त से बढ़कर 3,50,000 तक पहुंच गए। पानी में 'फीकल कोलीफार्म', यानी मल से उत्पन्न होने वाला बैक्टीरिया भी बहुत तेजी से बढ़ता नजर आया। यानी, वाराणसी में गंगा की शुद्धि के लिए जो काम किया गया, उसका कोई फायदा नहीं हुआ, बल्कि जो पैसा वहां खर्च हुआ है, वह पैसा भी उस प्रदूषित पानी में बह गया है, तो उसके लिए कौन जिम्मेदार है?

अगर हम यमुना की बात करें, तो उसकी हालत गंगा से भी खराब है। यमुना में प्रदूषण इस हद तक बढ़ चुका है कि वहां जलचर लगभग खत्म हो चुके हैं। यमुना हरियाणा, दिल्ली और यूपी में 1370 किलोमीटर में बसे लाखों लोगों की प्यास बुझाती है, उन्हें रोजगार देती है, पर मुझे बेहद अफसोस के साथ यह कहना पड़ रहा है कि जैसे ही यमुना दिल्ली के 22 किलोमीटर रास्ते से गुजरती है, तो वह नाले में तब्दील हो जाती है, क्योंकि दिल्ली के 18 बड़े नाले हर दिन 3,500 एमएलडी से अधिक सीवेज उसमें छोड़ देते हैं। जो यमुना दिल्ली की लाइफलाइन है, उसे दिल्ली ने देश का सबसे बड़ा प्रदूषित वाटर रिसोर्स बना दिया है।

गंगा और यमुना सदियों से न केवल करोड़ों हिन्दुस्तानियों के लिए,

बल्कि उन पर पलने वाले पशु–पक्षियों और जलचरों के लिए भी जीवनदायिनी रही हैं, पर हाल के वर्षों में जिस तरह से इन नदियों को बेलगाम होकर प्रदूषित किया जा रहा है, वह चिंता का विषय है। गंगा–यमुना का पानी पीने लायक तो छोड़िए, नहाने और खेती करने के लायक भी नहीं बचा है और उसके लिए हम सब जिम्मेदार हैं, यह हम सब की जिम्मेदारी है। किसी भी देश का विकास हमेशा अपने वातावरण, पर्यावरण और प्रकृति के अनुसार होता है और प्राचीन काल से हमारी नदियां हमें समृद्ध बनाती रही हैं। गंगा और यमुना इस देश की धमनियां हैं। जिस तरह इंसान की धमनियों में खून बहता है, उसी तरह देश की धमनियों में गंगा–यमुना का पवित्र जल है। यदि यह पवित्र जल दूषित नाला बन गया, तो इस देश की सेहत का क्या होगा? यह समझना हम सब की जिम्मेदारी है। अगर हम गंगा–यमुना की रक्षा नहीं कर सकते, तो देश की रक्षा कैसे करेंगे? जैसे देश की सीमाओं की रक्षा जवान करेंगे, उसी तरह गंगा–यमुना जैसी नदियों की रक्षा का जिम्मा हम सबका है और यह जिम्मा पूरे देश का है।

हमने युरोप में देखा है कि टेम्स और राइन नदियां इतनी गहरी हैं कि उनमें बड़े–बड़े जहाज चलते हैं। उनकी तुलना में हमारी नदियां गहरा नाला बन चुकी हैं। इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए हमें अपने देश और समाज का विकास करने के लिए अपनी पवित्र नदियों की रक्षा करनी चाहिए और आने वाली पीढ़ियों को इन्हें एक धरोहर के रूप में सौंप कर हमारा जो जिम्मा है, उसे पूरा करना चाहिए। सरकार अपनी तरफ से जरूर काम करती होगी, लेकिन जैसा कि बघेल साहब ने कहा कि इसके लिए जरूर कोई परिस्थिति निर्मित होगी, लेकिन उसको सम्भालना सरकार की जिम्मेदारी है। हम सब देशवासियों की भी इतनी जिम्मेदारी है कि हम इस बात के लिए अविरल संघर्ष करते रहें कि हमारी नदियां बचनी चाहिए। गंगा, यमुना, सरस्वती, कावेरी अदि सभी नदियां, जो हमारे देशकी सम्पत्ति हैं, उनके लिए हमें एक ऐसी जागृति लानी चाहिए, एक ऐसा जागरण पैदा करना चाहिए कि हमारी आने वाली पीढ़ियां भी इस संघर्ष में शामिल हों और हमारी इस सम्पत्ति का रक्षण करें। ■

यदि गंगा-यमुना को बचाना है तो विकास की इस नीति को छोड़ना पड़ेगा : शिवानन्द तिवारी

मपसभाध्यक्ष महोदय, माननीय मंत्री महोदया यहां बैठी हैं, हांलाकि बेहतर होता कि प्रधान मंत्री जी खुद यहां उपिस्थत रहते। ऐसा मैं इसलिए कह रहा हूं कि अभी कुछ दिन पहले हम लोगों ने अखबारों में पढ़ा था कि प्रधान मंत्री जी की अध्यक्षता में मंत्रिमंडल की एक नई कमेटी बनी है और उस कमेटी को इसिलए बनाना पड़ा कि जयन्ती जी का जो विभाग है, वह infrastructure का जितना project है, उसको पास करने में बहुत डिले कर रहा है। पर्यावरण का सवाल, ecology का सवाल उठाकर वह डिले कर रहा है, इसलिए जल्दी से जल्दी, बड़े–बड़े projects को पास करने के लिए प्रधान मंत्री जी की अध्यक्षता में मंत्रिमंडल की एक कमेटी बनी है, जिसमें वित्त मंत्री जी भी हैं। इसलिए मैंने कहा कि यदि प्रधान मंत्री जी भी यहां रहते, तो बहुत अच्छा होता।

महोदय, दूसरे कारण से भी हम प्रधानमंत्री जी की मौजूदगी चाहते थे, इसलिए कि जिस सवाल पर हम लोग बहस कर रहे हैं, वह सवाल एक बहुत बड़ी आबादी के जीवन और मरण का सवाल है। यह सिर्फ राम और कृष्ण का ही सवाल नहीं है, जैसा कि अभी हमारे रवि शंकर जी ने कहा और कांग्रेस पार्टी की ओर से भी कहा गया, ये राम और कृष्ण इसलिए हैं कि राम और कृष्ण के भक्त हैं। अगर भक्त ही नहीं होंगे, तो राम और कृष्ण का नाम लेने वाला कौन बचेगा? तो हालत ऐसी है कि राम और कृष्ण के जो भक्त हैं, उन्हीं के जीवन पर संकट है। मैं कोई हल्की–फुल्की बात नहीं कर रहा हूं, मैं यह सोच–समझकर

कह रहा हूं। महोदय, आप देखिए, जो आंकड़े लोगों ने बताए, अभी हम देख रहे थे और जयन्ती जी भी यह जानती होंगी, NERI (National Environment Research Institute) का एक आंकड़ा है कि देश में जो ग्राउंड वाटर है, उसका 85 प्रतिशत हिस्सा, देश की जो 14 महत्वपूर्ण नदियां हैं, उन निदयों से ही बहता है। उनकी हालत आज क्या है? NERI का कहना यह है कि इन निदयों का जल भयानक ढंग से प्रदूषित हो गया है। कई जगह जब आप इन निदयों में स्नान करते हैं, तो इसका मतलब यह है कि आप skin diseases को न्यौता दे रहे हैं।

तरह–तरह के रोग हो रहे हैं। इसका मुख्य कारण क्या है? इसका मुख्य कारण है industrial waste. महोदय, गंगा नदी की बात हो रही थी। आप दूसरी जगहों की बात छोड़ दीजिए, इलाहाबाद की बात छोड़ दीजिए, पटना की बात छोड़ दीजिए, ऋषिकेश से जब गंगा नदी निकलती है तो वहां आईडीपीएल की दवा बनाने की फैक्टरी है, उसका जो residue है, उसका जो chemical है, वह गंगा नदी में आ रहा है। वहां BHEL की फैक्टरी है, उसकी जो गंदगी है, वह गंगा के पानी में आ रही है। वहीं अगल–बगल से गंगा निकली है। इस प्रकार जहां से गंगा निकल रही है, वहीं पर उसको मैला किया जा रहा है। जब ऐसी हालत है तो फिर मनुष्य कैसे बचेगा? महोदय, अभी मुझसे पहले दर्शन बाबू बोल रहे थे। उन्होंने कुरान का उदाहरण दिया, हिन्दू धर्मग्रंथ यजुर्वेद का उदाहरण दिया। सारे ग्रंथों में जल को ही सबसे महत्वपूर्ण माना गया है। जितनी भी दुनिया की सभ्यताएं बनी हैं, वे सभ्यताएं, प्रकृति ने जो साधन और संसाधन प्रदान किए हैं, उन्हीं के आधार पर बनी हैं। उनमें जो पानी है, जल है, वह सबसे महत्वपूर्ण चीज़ है।

आज उसकी क्या हालत हो गयी है? इसलिए, जब ग्रोथ रेट की बात होती है, जीडीपी की बात होती है, राष्ट्रपति के अभिभाषण पर धन्यवाद प्रस्ताव के दरम्यान मैंने इस ओर ध्यान आकर्षित किया था। जीडीपी की जो ग्रोथ हो रही है, उससे जो ecological footprint है, जो ecological deficit है, उस पर क्या प्रभाव पड़ रहा है? मैंने उस

दिन कहा था कि श्याम सरन जी, जो Ministry of External Affairs के सेक्रेट्री हैं, उनका लेख छपा, जिसमें उन्होंने कहा कि देश चिंता कर रहा है, प्रधान मंत्री और वित्त मंत्री चिंता कर रहे हैं, fiscal deficit की बात कर रहे हैं, current Account deficit की बात कर रहे हैं, लेकिन देश में development के मॉडल के चलते जो ecological deficit क्रिएट हो रहा है, वह सबसे ज्यादा चिंताजनक बात है। उपसभाध्यक्ष महोदय, इस देश में आज के दौर में मारा–मारी चल रही है कि हम देश को आगे ले जाएंगे, हम देश के जीडीपी को और तेजी से आगे बढ़ाएंगे। यह सरकार ग्रोथ को नहीं बढ़ा रही है। यह जो competition की बात हो रही है, इससे मेरे जैसा आदमी डर रहा है क्योंकि हम देख रहे हैं कि आज जीडीपी की जो कीमत हमें चुकानी पड़ रही है, वह इतनी जबर्दस्त है कि आदमी के जीवन पर ही संकट हो गया है। इसलिए हम यह गुज़ारिश करेंगे कि यह कोई साधारण बात नहीं है। आप इन नदियों को तब तक साफ नहीं कर सकते, जो अंडरग्राउडं पानी है, उसको आप तब तक साफ नहीं कर सकते, जब तक आप विकास की नीति को नहीं बदलेंगे। दर्शन बाबूने कहा कि यह विकास की नीति नहीं है, हम विनाश की दिशा में जा रहे हैं। यह गांधी का देश है। हमें याद है, हमने उस भाषण में सुना था, 1909 में गांधी जी ने जो किताब लिखी, उनका जो बीजमंत्र है, उसमें उन्होंने लिखा कि कोई अंधा आदमी भी यह बता सकता है कि यह जो औद्योगिक सभ्यता है, यह जो विकास का तथाकथित मॉडल है, यह विनाश की ओर ले जा रहा है। आज यह साफ दिखाई दे रहा है कि दुनिया विनाश के कगार पर पहुंच रही है। जो पश्चिम के देश हैं, अमेरिका है, उसकी बात आप छोड़ दीजिए। आज वहां जो global warming हो रही है, उसका उन्हें फायदा हो रहा है। हमने कहीं पढ़ा कि North Pole पर जो बर्फ पिघल रही है, उससे एक नया रास्ता बन रहा है। अभी रूस ने एक लाख बीस हजार टन का एक तेल का जहाज चीन भेजा। उपसभाध्यक्ष महोदय, जो स्वेज नहर से होकर चीन जाने का रूट है, वह 17 हजार किलोमीटर से ज्यादा का है, लेकिन यह नया रूट, जो नॉर्थ पोल पर बर्फ के पिघलने से बना है, उससे वह सीधे 60

हजार फुट कम हो जाता है। इस तरह से जो यूरोप के लोग हैं, जो अमेरिका के लोग हैं, जो कनाडा के लोग हैं, उनको ग्लोबल वार्मिंग से फायदा होता हुआ दिखाई दे रहा है। आज रूस को दिखाई दे रहा है कि साइबेरिया का जो इतना बड़ा भूक्षेत्र है, वहां जमीन के अंदर भूगर्भ में नए–नए खजाने उन्हें मिलने वाले हैं। इन सब लोगों को यही दिखाई दे रहा है, इसलिए उनकी बात अलग है, लेकिन जो गर्म प्रदेश हैं, जो विषुवत रेखा के नीचे रहने वाले प्रदेश हैं, जिसमें हम हैं, उनकी हालत खराब होने वाली है। यहां हम लोग बैठे हुए बात कर रहे हैं, हम लोग privileged लोग हैं, हम लोग बोतल का पानी पीते हैं, हम ब्रह्मपुत्र अपार्टमेंट में रहते हैं, जहां हर घर में प्लांट लगा हुआ है, जयन्ती जी भी वहीं रहती हैं। वहां पर हमारे घरों में काम करने वाले जो कर्मचारी हैं, वे कहते हैं कि नल का पानी पीने से रोग हो जाते हैं। वे हमारे घर से या उनके घर से फिल्टर का पानी लेकर जाते हैं।

इस देश की जो प्रिवलेज क्लास है, उसको उतना डर नहीं है, लेकिन जिसको बोतल का पानी नहीं मिलता है, जिसके घर में फिल्टर नहीं है, वह पानी पीकर बीमार हो जाता है। गंगा–यमुना के किनारे बहुत बड़ी आबादी बसी हुई है, अकेले गंगा के बेसिन में 40 करोड़ लोग बसते हैं, वे उसी पानी को पी रहे हैं और उसी से उनका जीवन चल रहा है। उनकी जिंदगी के बारे में किसी को चिंता नहीं है। चिंता इस बात की है कि हमको गद्दी दो, हम जीडीपी को बढ़ायेंगे। हमने इस देश की आजादी के समय संकल्प लिया था कि हम देश की तरक्की स्वदेशी के रास्ते से करेंगे।

स्वदेशी ही बीज मंत्र था, आज हमने उसको छोड़ा है और आज हम दूसरों की नकल कर रहे हैं, यह साधारण बात नहीं है। यह सिर्फ राम और कृष्ण की बात नहीं है, यह सिर्फ धर्म की बात नहीं है। जो साधु–संत लोग हैं, वे क्यों नहीं गंगा–यमुना के किनारे लाश जलाने वाले लोगों को समझाते हैं। वहां पर 24 घंटे शव जलते रहते हैं। इससे बहुत गंदगी फैल रही है। बहुत से साधु–संत जलते नहीं हैं, वे गंगा में ही समाधि ले लेते हैं, इस कारण से भी प्रदूषण फैल रहा है। हमारे समाज में परम्परा है कि पांच वर्ष से कम उम्र के बच्चे को जलाया नहीं

जाता है, उसको ऐसे ही नदी के पानी में प्रवाहित कर दिया जाता है।

जो गरीब लोग हैं, वे पूरी लकड़ी का इंतजाम नहीं कर पाते हैं और वे अधजली लाश को गंगा नदी में फैंक देते हैं। जो लोग हरिद्वार में और कुम्भ में पूजा करने जाते हैं, वे पोलिथीन में फूल वगैरह लेकर जाते हैं, इससे भी प्रदूषण फैलता है। ये साधु–संयासी गंगा–यमुना को प्रदूषित करने से लोगों को रोकने के लिए नहीं निकलते हैं, बल्कि ये साधु–संन्यासी प्रधान मंत्री बनाने के लिए निकलते हैं। इनको देश की जनता को जागरूक करना चाहिए। जब तक हम अपनी आदतें नहीं बदलेंगे, जीवनचर्या नहीं बदलेंगे, तब तक हम प्रदूषण को नहीं रोक सकते हैं।

उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं अपनी बात को खत्म कर रहा हूं। आज सुबह हमारा अपनी पत्नी के साथ झगड़ा हो रहा था, हम लोग कल ही कुम्भ में स्नान करने के लिए गए थे। हमने कहा कि हम लोग भी वहां जाकर थोड़ा प्रदूषण वहां छोड़ आयें। इसी पर बहस निकली और कहा कि 20–30 साल पहले का समय याद कीजिए। उस समय घर में चार कमरे और एक पखाना होता था। आज जमाना बदल गया है, आगे बढ़ गया है।

आज हर कमरे में बाथरूम है। हमारे पास पहले पहनने के लिए इतने कपड़े नहीं होते थे। हम लोग एक कपड़े को दो दिन, तीन दिन तक पहनते थे, आज हम रोज़ कपड़े बदलते हैं। यहां पर बहुत लोग हैं जो दिनभर में दो–तीन बार कपड़े बदलते हैं, इससे कपड़े ज्यादा धुलते हैं, उनमें डिटर्जेंट इस्तेमाल होता है और हम ज्यादा डिटर्जेंट सीवरेज के जरिए से छोड़ते हैं। यह जो हमारा लाइफ स्टाइल बदला है, यह जो नया जमाना आया है, यह जो कंज्युमरिस्ट कल्चर आया है, इसने पूरे जीवन की शैली को बदल दिया है। अगर आप सचमुच गंगा–यमुना को बचाना चाहते हैं, अगर आप सचमुच राम–कृष्ण की स्मृति को कायम रखना चाहते हैं, तो विकास की जो नीति है, इसको छोड़िए। इसके रहते गंगा को बचा पायेंगे, न यमुना को बचा पाये और अगर गंगा–यमुना नहीं बचेगी, तो राम–कृष्ण भी नहीं बचेंगे।

इन्हीं शब्दों के साथ मैं अपनी बात समाप्त करता हूं। ■

गंगा-यमुना में कचरा डालना दंडनीय अपराध घोषित हो : डा० राम प्रकाश

माननीय उपसभापति जी, मुझे आपने और मेरी पार्टी ने एक बहुत महत्वपूर्ण विषय पर मेरे साथियों के साथ अपने विचार साझा करने का मौका दिया है, उसके लिए मैं आभारी हूं। महोदय, जैसे कि बात प्रारंभ हुई, इस चर्चा में प्रदूषण की बात होगी, आंकड़ों की बात होगी, होनी भी चाहिए और उसे मैं भी करूंगा, पर मेरे मन में एक अन्य प्रश्न उठता है कि क्या गंगा और यमुना केवल नदियां हैं, केवल पानी का प्रवाह है? मैं ऐसा नहीं मानता। ये भारतीय संस्कृति की प्रतीक हैं।

प्रयाग में केवल दो नदियां ही नहीं मिलतीं, दो संस्कृतियां मिलती हैं, उनका वहां संगम होता है, जिसे हम गंगा–जमुनी संस्कृति बोलते हैं। इन नदियों का मिलना, इनका बहना, इनका जल–प्रवाह, केवल जल–प्रवाह नहीं है, बल्कि गंगा–जमुनी संस्कृति का प्रवाह भी है। महोदय, मैं सोचता हूं कि आज यह संयोग है कि गंगा–यमुना पर भी खतरा है और गंगा–जमुनी संस्कृति पर भी खतरा है? आज दोनों के लिए अनादर का भाव है। ऐसा क्यों है? आज इस देश में सभी सांस्कृतिक मानकों के प्रति अनादर का अभाव होता चला जा रहा है। जिस देश में कभी यह कहा जाता था, 'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसि', आज वहां कुछ लोगों के लिए भारत, भारतमाता नहीं बल्कि real estate है। आज वे अपने आपको उसके पुत्र नहीं बल्कि प्रॉपर्टी डीलर मानने लगे हैं और अज्ञानता का अभाव इस सीमा तक चला गया है कि मैंने गलियों में लोगों को गीत गाते सुना है, 'गंगा मेरी मां

का नाम, बाप का नाम हिमालय।' अरे भाई, गंगा तो हिमालय की बेटी है, तुमने इस गीत में उसका कौन सा सम्बंध जोड़ दिया? यह संस्कृति का अभाव है, जिसकी वजह से आज गंगा और यमुना के प्रदूषण के बारे में हमें चर्चा करनी पड़ रही है। मैं अपने सम्माननीय साथी के साथ पूर्णतः सहमत हूं कि गंगा और यमुना के प्रदूषण की बात न धर्म की बात है, न राजनीति की बात है, यह हमारी संस्कृति की बात है।

मैं यहां कवि हृदय भारत के पहले प्रधान मंत्री स्वर्गीय श्री जवाहर लाल नेहरू, जो गंगा के किनारे प्रयाग में पैदा हुए थे, उनकी दो लाइनें आपके बीच में रखना चाहूंगा। उन्होंने लिखा है

"The Ganga, especially, is the river of India, beloved of her people, round which are intertwined her memories, her hopes and fears, her songs of triumph, her victories and her defeats, She has been a symbol of India's age long culture and civilisation, ever changing, even flowing and yet ever the same Ganga"

इसमें नेहरू जी ने एक और जगह लिखा है :

"The Ganges, above all, is the river of India which has held India's hearts captive and drawn uncounted millions to her banks since the dawn of history- The story of the Ganges, from her source to the sea, is the story of India's civilisation and culture."

आज इन नदियों में जो प्रदूषण है, वही प्रदूषण गंगा–यमुना की जो सांझी संस्कृति है उसमें भी दिखाई देने लगा है। मैं यहां इस बात की चर्चा इसलिए कर रहा हूँ कि अगर हम इस प्रदूषण से लड़ना चाहते हैं तो जो इन नदियों का महत्व है उसे समझे बिना हमारा संकल्प सुदृढ़ नहीं होगा।

महोदय, सभी मानते हैं कि विश्व भर में नदियों के किनारे सभ्यता और संस्कृति पनपी है, नदियों के किनारे बिस्तयां बसी हैं, नदियां ही कृषि–कर्म का आधार रही हैं, इसलिए मनुष्य जीवन में जल का, नदियों का विशेष महत्व है। भारत में तो नदियों को पूजा जाता है। सैकड़ों बड़ी नदियों वाले भारत में गंगा, यमुना, सरस्वती, सिंधु, गोदावरी, नर्मदा, कावेरी ये सात नदियां अत्यधिक महत्व रखती हैं। इन सात नदियों में गंगा और यमुना सर्वोपरि हैं। गंगा न केवल हमारे देश की

महान और पवित्र नदी मानी जाती है, अपितु विश्व की श्रेष्ठ नदियों में अपना स्थान रखती है। गंगोत्री से लेकर गंगा सागर तक हरिद्वार, प्रयाग, काशी, गढ़मुक्तेश्वर, सोरों, पटना आदि सैकड़ों तीर्थस्थान इसके तट पर बसे हैं। प्राचीन काल से भारत की राजधानियां बसाने वाली यह गंगा नदी है। इसकी लहरें कितने ही राज्यों के उत्थान और पतन की साक्षी रही है। यह हमारे जीवन में अत्यधिक महत्व वाली नदियां हैं। जितने नर–नारी, पशु–पक्षी, कीट–पतंग इसके सहारे जीवन–यापन करते हैं, उतने शायद ही किसी नदी के सहारे करते रहे हों। हमारे देश को सर्वाधिक अन्न देने वाली यह अन्नपूर्णा है। भारत के 11 राज्यों में देश की आबादी का 40 प्रतिशत इन नदियों से जल प्राप्त करता है। इसी की घाटी में सर्वप्रथम कृषि का शुभारंभ हुआ था। रेलवे से पूर्व गंगा व्यावसायिक दृष्टि से भी अत्यधिक महत्वपूर्ण रही है। हमारे साहित्य में इसकी बहुत चर्चा है। महाभारत में 12 अन्य नामों से और अमर कोश में 7 अन्य नामों से श्रद्धापूर्वक चर्चित गंगा के जल में अनेक विशेष गुण है। जैसा कहा गया है, कई वर्षों तक बंद रखने पर अन्य नदियों के जल की तरह इसमें कीड़े पैदा नहीं होते। करोड़ों हिन्दू इसे पाप से निजात दिलाने वाली मानते हैं। इसका नाम स्मरण करना, दर्शन करना, इसमें स्नान करना पुण्य अर्जित करना माना जाता है। यदि कोई हिन्दू गंगाजल हाथ में लेकर प्रतिज्ञा करे तो कोर्ट भी उसे प्रमाण मानती है। आम हिन्दू की एक कामना रहती है कि अंतिम समय में उसके मुंह में गंगाजल की कुछ बूंद पड़ जायं। प्रतिवर्ष जब कांवड़ियें गंगाजल लेकर चलते हैं, तो सड़कों पर तिल रखने की जगह नहीं मिलती। यह दृश्य विश्व की किसी और नदी के बारे में नहीं कहा जा सकता। हरिद्वार और प्रयाग से जल लेकर रामेश्वर के शिवलिंग पर चढ़ाने की प्रथा आज भी जीवित है, जो हिंदुस्तान के एक सिरे को दूसरे सिरे के साथ जोड़ती है।

जितना साहित्य गंगा की स्तुति में लिखा गया है, उतना विश्व की किसी नदी के बारे में नहीं लिखा गया। हमारे 18 पुराण, रामायण और महाभारत इसकी स्तुति से भरे पड़े हैं। आचार्यों और संतों ने इसकी महिमा गाई है। शंकराचार्य भक्तिवादी नहीं हैं, शंकराचार्य प्रतिवादी हैं।

वे इस जगत को मिथ्या मानते हैं। चाहे शंकर हों, रामानुज हों, वल्लभाचार्य हों, रामानंद हों, तुलसी हों या कबीर हों, इन सब लोगों ने इसकी स्तुति गाई है। गोस्वामी तुलसीदास कहते हैं कि –

^^xxk ldy en exy eykA
lc l[k dfju gfju lc lykAA**

आप कहते हैं कि वे रामभक्त थे, हिंदू थे, लेकिन जैसा मैंने आपसे निवेदन किया कि यह मज़हब का सवाल नहीं है। कविवर रसखान ने जिस तरह से गंगा की प्रशंसा की है, वह शायद कोई और नहीं कर पाएगा। कविवर रसखान ने गंगाजल को औषधि माना है और बड़े प्यारे शब्दों में उन्होंने कहा है कि मैं कोई दवाई न लूं, मैं कोई औषधि न लूं।, कोई पथ्य–कुपथ्य न करूं, मेरी तो सारी बीमारियां तुम्हारे जल से दूर होंगी। मैं उनके शब्दों को यहां दोहराना चाहूंगा –

^^oin dh vk"kfèk [kkÅ dN u djk or lte jh] lu e¨lA
rjh b ikuh fi;¨ ^^jl [kkuh lthou ykHk ygk] l[k r¨lAA**
, jh! lèkke;h HkkxhjFkh ! d¨m iF; dpiF; djp] rm i¨lA
vkd èkrjp pckr fQjp fo"k [kkr fQjp flo r©jp Hkj¨lAA**

इससे बढ़कर कोई व्यक्ति क्या कह सकता है? चाहे भारतेन्दु हरिश्चन्द्र हों, चाहे उनके पिता गोपाल चन्द्र हों, बांकीदास हों, मितराम हों, केशव हों, विद्यापित हों, कविरतन सत्यनारायण हों, पूर्णसिंह हरिऔध हों, मेगस्थनीज़ जैसा विदेशी हो, मैं किस–किस की चर्चा करूं, इन सबकी श्रद्धा का केन्द्रबिन्दु गंगा क्या अब नहीं रहेगी? कैसे हम इसे स्वीकार कर लें? ''गंगा'' शब्द, जो गमनार्थक गम धातु से सिद्ध होता है, जिसका अर्थ है निरन्तर गतिशील प्रवाह, क्या टिहरी का बांध उसके पांव में बेड़ियां डाल पाएगा? मैं यह मानने के लिए तैयार नहीं हूं। क्या ब्रज की संस्कृति का आधार यमुना, अब नहीं रहेगी? जिसके किनारे योगेश्वर कृष्ण ने क्रीड़ाएं कीं, वह यमुना इतिहास का विषय हो जाएगी? हरगिज़ नहीं, यह बचेगी। सरकारें भी प्रयास करें, प्रदेश भी प्रयास करें, केन्द्र भी प्रयास करे, लेकिन सबसे बड़ा प्रयास आम आदमी को करना है, जनसाधारण को करना है। आम आदमी इसे बोलचाल में गंगा और यमुना नहीं कहना चाहता है, वह इसे ''गंगा

जी'' कहता है, वह इसे ''यमुना जी'' कहता है, वह इसे ''गंगा मैया'' कहता है, वह इसे ''यमुना मैया'' कहता है। उसका यह भाव, उसका यह संस्कार, उसके जीवन का यह आधार गंगा और यमुना को जीवित रखे गा, ऐसा मेरा विश्वास है। जो भाव गंगा को प्रातः स्मरणीय मानता है, वह इन नदियों को बचाएगा। वह भावना आम आदमी को इस अभियान से जोड़ेगी। सरकार अपनी जगह प्रयास करे, प्रदेश अपनी जगह प्रयास करें और सरकारों ने इसके लिए प्रयास किया है। सबसे पहले जब श्रीमती इंदिरा गांधी के सामने यह प्रश्न आया कि गंगा मैली हो रही है, तो एक सर्वे कराया गया और जब इस नतीजे पर पहुंचे कि जितनी कल्पना है, गंगा उससे ज्यादा मैली है, तो इधर प्रयास करना प्रारंभ हुआ। भारत रत्न श्री राजीव गांधी ने अप्रैल, 1986 में Ganga Action Plan आरंभ किया था, जिसका पहला चरण मार्च, 2000 में पूरा हुआ। इस पर राज्य सरकारों के सुझाव लिए गए। फिर दूसरा चरण 1993 में आरंभ हुआ। इस पर कुल खर्च 1,028 करोड़ रुपए हुआ, लेकिन मैं मानता हूं कि इसके बावजूद भी गंगा अभी प्रदूषित है।

प्रधान मंत्री, डा. मनमोहन सिंह ने 20 फरवरी, 2009 को हम सबकी भावनाओं की कद्र करते हुए गंगा को राष्ट्रीय नदी घोषित किया। उनकी अध्यक्षता में एक कमिटी बनाई गई। इसी तरह 1993 में जब कांग्रेस की सरकार थी, तब Yamuna Action Plan शुरू किया गया।

महोदय, आज सवाल यह है, जैसे मेरे सम्माननीय साथी ने पूछा है कि अरबों रुपए लगाने पर भी ये नदियां प्रदूषित क्यों हैं? क्यों आज ब्रज के 1300 गांवों के किसानों और संतों के हज़ारों पांव वृंदावन और दिल्ली के बीच में यमुना को ढूंढ़ने का प्रयास कर रहे हैं? हमारे सामने प्रश्न है कि यदि Thames नदी पवित्र की जा सकती है, स्वच्छ की जा सकती है, तो गंगा का जल स्वच्छ क्यों नहीं किया जा सकता? मैं मानता हूं कि आज गंगा का जल न पीने के योग्य है, न स्नान के योग्य है, न खेती के लिए उपयुक्त है। पीने के पानी में Coliform bacteria का level 50 से नीचे और खेती के लिए 5,000 से नीचे होना चाहिए, लेकिन हरिद्वार में आज यह 5,500 है। आज गंगा के किनारे बसे 10 लाख से ज्यादा की आबादी वाले 30 शहर, 50 हज़ार से 1 लाख तक

की आबादी वाले 23 शहर और कानपुर के आसपास चमड़े के 350 कारखाने गंगा को तबाह कर रहे हैं। यह हम सबकी जिम्मेदारी है। यह न केवल मात्र संसद की, न किसी राजनीतिक पार्टी की जिम्मेदारी है, बल्कि यह आज हर उस व्यक्ति की जिम्मेदारी है, जो भारत की संस्कृति की रक्षा करना चाहता है, जो भारत की अस्मिता के लिए बेचैन होता है।

महोदय, 20 प्रतिशत प्रदूषण जहां उद्योगों से है, वहीं 80 प्रतिशत प्रदूषण सीवेज की वजह से है। उद्योगों के कचरे में Arsenic, Fluoride, Chloride, Cadmium और Lead जैसे रसायन हैं, जिसका परिणाम यह निकलता है कि ये पानी के साथ ज़मीन में चले जाते हैं और बाद में हम उस पानी को इस्तेमाल भी करते हैं। महोदय, जो कचरा कारखाने से आएगा, उसको तो आप treatment plant के जरिए आगे ले जा सकते हैं, लेकिन जो कचरा पानी में चला गया है, उस पानी को तो आम आदमी साफ पानी मानकर इस्तेमाल करना शुरू कर देता है। चूंकि उस पानी में ये रसायन होते हैं, भयानक poison होता है, इस वजह से गंगा के किनारे रहने वाले लोगों में आज कैंसर का प्रतिशत ज्यादा है। यू.पी., बिहार, पश्चिमी बंगाल में सर्वाधिक लोग इस कैंसर की बीमारी से प्रभावित हैं। यहां राष्ट्रीय औसत से अधिक कैंसर के रोगी हैं और पित्ताशय, गुर्दा, भोजन नली, प्रोस्टेट, जिगर, त्वचा का कैंसर जैसी बीमारियां इन जगहों में बहुत ज्यादा बढ़ रही हैं।

महोदय, मैं ज्यादा आंकड़े नहीं देना चाहता हूं क्योंकि यहां सब विद्वान हैं और मुझसे ज्यादा इस बात को समझते हैं। आज गंगा में प्रतिदिन नगरों का 290 करोड़ लीटर sewerage डाला जा रहा है। Sewage Treatment capacity 110 करोड़ लीटर है, बाकी 180 करोड़ लीटर गंदगी सीधे गंगा के अंदर जा रही है। अकेला बनारस 20 करोड़ लीटर कचरा डाल रहा है। इस देश के अंदर आज यह हाल है कि बनारस के 7 किलोमीटर में 30 नाले गंगा में गिर रहे हैं और उसको गंदा कर रहे हैं। इस गंगा पर अनेक बांध बनाए जा रहे हैं, जिसकी वजह से गढ़वाल में 17वीं शताब्दी का धारा देवी का मंदिर भी आज अपने आपको खतरे में महसूस करता है। महोदय, यमुनोत्री की

स्थिति गंगा से अलग नहीं है। यमुना को भी इस देश के व्यक्ति श्रद्धा के साथ देखते हैं। यमुनोत्री से हथनी कुंड बैराज तक यमुना का जल अपने प्राकृतिक स्वरूप में है, लेकिन आगे की स्थिति चिंताजनक बन जाती है। कई स्थानों पर यमुना शहरों का कचरा ढो रही है। यू.पी. और हरियाणा में 14 शहरों में Sewage Treatment Plant हैं, जिनकी वजह से पानी की स्थिति बेहतर है, पर यमुना की दुर्गति दिल्ली में आकर होती है।

यहां, अगर मैं गलती नहीं कर रहा तो 28 ट्रीटमेंट प्लांट हैं, लेकिन फिर भी जो 70–80 प्रतिशत यमुना का प्रदूषण है, वह दिल्ली की वजह से है। यहां ऐसा कचरा यमुना में जाता है, जो 37 प्रतिशत बिना ट्रीटमेंट के है। यमुना बेचारी कचरा ढोती है और यहां आकर दम तोड़ देती है। जिस Centre for Science And Environment की मेरी सम्माननीय विद्वान वक्ता ने मुझसे पहले चर्चा की है, उसके डायरेक्टर ने तो यहां तक कहा है कि यमुना मर चुकी है, केवल इसका अंतिम संस्कार करना बाकी है। यह हाल देश की 14 बड़ी, 55 मध्यम और सैकड़ों छोटी नदियों का है जहां जल की जगह सीवेज का पानी बह रहा है।

अंत में, मैं सुझाव के रूप में कुछ बातें आपसे कहना चाहता हूं। महोदय, केवलमात्र इस स्थिति पर आँसू बहाने से काम नहीं चलेगा। केवलमात्र सरकारों के माध्यम से यह काम नहीं हो पाएगा। इस बात के लिए सबका सहयोग चाहिए। सबसे पहले तो मैं यह कहूंगा कि गंगा और यमुना में सीवेज का मलमूत्र और फैक्ट्रीज़ का कचरा डालना दंडनीय अपराध होना चाहिए। आप एक तरफ पानी साफ करते हैं और दूसरी तरफ उसमें गंदगी डालते हैं तो प्रयास का नतीजा क्या निकलेगा? इसको दंडनीय अपराध घोषित किया जाए। जो फैक्टरी ऐसा करती है, उसका लाइसेंस कैंसिल किया जाए।

महोदय, अगर एक छोटा सा स्कूल बनता है तो जो environment के लोग हैं, प्रदूषण के लोग हैं, वे आकर हमसे पूछते हैं कि क्या आपने यहां ट्रीटमेंट प्लांट लगाया है? उस संस्था में होस्टल भी न हो, तो भी ट्रीटमेंट प्लांट के बारे में पूछा जाता है, लेकिन जो कचरा फैंकने वाली,

poisonous chemicals डालने वाली फैक्टरीज़ हैं, सरकार को, हम सबको, हर पार्टी की सरकार रही है, इनको ऐसा करने से रोकना होगा। महोदय, विभिन्न प्रदेशों में ऐसी फैक्टरियां हैं, 11 सूबों में से गंगा निकलकर आती है, उन सबके अंदर यह कानून बनाया जा सकता है कि इन लोगों के लाइसेंस खत्म करो जो इस गंगा को प्रदूषित कर रहे हैं। महोदय, एक तरफ हम उसे मां कहते हैं और दूसरी तरफ हम उसके अंदर मल–मूत्र डाल रहे हैं। मैं नगर पालिकाओं और नगर परिषदों को भी इसके साथ जोड़ना चाहता हूं। अगर वे बिना ट्रीटमेंट के गंगा, यमुना या दूसरी नदियों में पानी डालती हैं तो जो उनके सदस्य हैं, जो बड़े–बड़े वहां अधिकारी हैं, उन सबको भी सजा मिलनी चाहिए, यह किसी एक आदमी की जिम्मेदारी नहीं है। वे लोग इसके लिए दोषी क्यों न माने जाएं?

इसके साथ ही मैं यह कहना चाहता हूं कि National Ganga River Basin Authority की साल में कई बैठकें होनी चाहिए। मैं मानता हूं कि प्रधान मंत्री जी बहुत व्यस्त व्यक्ति होते हैं, लेकिन कुछ मीटिंगें संबधित मंत्री के माध्यम से की जा सकती हैं और उनकी रिपोर्ट पर बाद में चर्चा हो सकती है।

इसमें मैं यह भी जोड़ना चाहूंगा कि मीटिंग में सिर्फ अफसर ही न बोला करें, वे तो अपनी कारगुजारियों पर लीपा–पोती करेंगे। उस पर जो एक्सपर्ट्स हैं, उन्हें बोलने दें, उसमें जो गंगा और यमुना, भारत की सभ्यता और संस्कृति के प्रेमी हैं, उन्हें बोलने दें।

एक बात मैं यह भी कहना चाहूंगा कि मेरे प्रदेश से गंगा नहीं निकलती, पर यमुना निकलती है। वह मेरे प्रदेश में से होकर जाती है। अगर ऐसी व्यवस्था की जा सके कि MPLAD फंड में से अगर कोई एमपी जितना पैसा गंगा और यमुना को साफ करने के लिए देना चाहे, दे सके, उस पर कोई upper limit न हो, तो मैं समझता हूं कि यह भी बहुत फायदेमंद होगा।

महोदय, मेरे माननीय साथी ने धर्माचार्यों और संतों की बात की। मैं उनसे भी एक प्रार्थना करना चाहूंगा। गंगा सबकी है, मेरी भी है, आपकी भी है, उसकी भी है, इसकी भी है। मैं उनसे यह कहना चाहूंगा

कि वे लोगों को जागृत करें। महोदय, श्रीमद्भागवत पुराण में 34वें अध्याय में 405वां श्लोक है, जिसमें कहा गया है कि गंगा के अंदर मल–मूत्र कभी नहीं डालना चाहिए।

अगर कोई ऐसा करता है तो उसे एक कल्पपर्यन्त नर्क भोगना पड़ेगा। महोदय, मैं तो आर्यसमाजी हूं, मैं तो भागवत पुराण को उस दृष्टि से नहीं देखता, लेकिन जो उसे मानते हैं, जो उसकी कथा करते हैं, वे लोगों से प्रतिज्ञा कराएं, उनके हाथ में जल रखकर प्रतिज्ञा कराएं कि गंगा तुम्हारी मां है, इसकी छाती पर तुम गंदगी मत डालो। अगर हम सब मिलकर काम करेंगे तो कोई कारण नहीं कि गंगा का पानी साफ न हो पाए। मैं तो चाहूंगा कि हम सब मिलकर इसके लिए प्रयासरत रहें और कवि के शब्दों में प्रतिज्ञा करें कि

g xfr çcy ijk e Hkjh] fQj D;k jg nj&nj [kMk]
tc vkt ej lkeu g] jkLrk bruk iMkA
tc rd u eft y ik ldi] rc rd u e> foJke g]
pyuk gekjk dke g jkgh] pyuk gekjk dke gAA

■

400 साल पुरानी गंगा-यमुना दे दो : प्रो. एस.पी सिंह बघेल

मपसभापति महोदय, आपका बहुत–बहुत धन्यवाद कि आपने हिन्दुस्तान के समसामयिक विषय पर मुझे बोलने का मौका दिया है।

मैंने अभी श्री रवि शंकर प्रसाद और डा. राम प्रकाश जी के बहुत ही मार्मिक, धार्मिक, आध्यात्मिक, पौराणिक और आंकड़ों से भरपूर व्याख्यान को सुना। मैं आंकड़ों के मकड़जाल में न अपना समय जाया करना चाहूंगा और न सदन का समय जाया करना चाहूंगा। जहां तक गंगा–यमुना की महिमा की बात है, इसका धार्मिक महत्व तो है ही, लेकिन इससे ज्यादा इसका सामाजिक महत्व है, आर्थिक महत्व है और कृषि के लिए महत्व है। इसमें कुछ तो बात है। आप हरिद्वार जायें और हर की पौड़ी पर गंगा जी की आरती देखें, बनारस में जब शाम को गंगा जी की आरती होती है, दीप दान गंगा जी में होता है और हमारे आगरा में यमुना जी के घाट पर बटेश्वर में यमुना जी की आरती होती है और उसमें दीपदान होता है, क्या दुनिया में ऐसा कोई उदाहरण है? मैं आज यहां पर गंगा और यमुना की लम्बाई नहीं बताऊंगा कि वह कितने किलोमीटर लम्बी है। मैं यह भी नहीं बताना चाहूंगा कि कितना सिंचाई क्षेत्र दोआबा में वह सिंचित करती है। लेकिन दुनिया में मुझे कहीं यह उदाहरण देखने को नहीं मिला, हो सकता है, Thames बड़ी हो, Mississippi Missouri ज्यादा सिंचाई करती हो, Amazon हो सकता है दुनिया की सबसे लम्बी नदी हो, नील भले ही मिस्र का वरदान हो, लेकिन उनको मां कोई नहीं कहता, उसकी आरती नहीं उतारी जाती और सबसे बड़ी बात है कि उसके

जल से आचमन नहीं किया जाता है। भले ही यूनिसेफ ने कह दिया हो कि दुनिया की सबसे प्रदूषित नदी यमुना है और खासतौर से दिल्ली के आसपास और गंगा जी भी बहुत प्रदूषित है खासतौर से कानपुर के आसपास, लेकिन हमारी धार्मिक आस्था देखिएगा कि गंगा मेला को आप नहीं रोक पायेंगे, दशहरा मेला नहीं रुक पायेगा, 12 साल में कुम्भ, 6 साल में अर्ध–कुम्भ और 144 साल में महाकुम्भ का आयोजन होगा। हर्षवर्द्धन ने भले ही अपना पूरा राज्य कुम्भ में दान किया हो, लेकिन आज भी लोग दान कर रहे हैं। मैं इसके सामाजिक पहलू पर एक बात कहना चाहूंगा कि यह केवल मोक्ष दायनी या जीवन दायनी ही नहीं है, आप 200 साल पीछे जाकर देखिएगा। गंगा और यमुना से हमारा दोआबा की एक–एक सेंटीमीटर कृषि भूमि सिंचित होती थी। आज क्या हाल है! धार्मिक महिमा केवल हिन्दुओं के लिए नहीं है। मुसलमानों के लिए बहुत महत्वपूर्ण बात नमाज़ होती है और नमाज़ के प्रावधान में वजू बहुत जरूरी है कि वजू करना चाहिए और वजू भी शुद्ध जल से होना चाहिए। नज़ीर बनारसी गंगा की महिमा के ऊपर लिखते हैं कि 'मैंने तो नमाजें भी पढ़ी हैं नज़ीर, ऐ गंगा तेरे पानी से वजू करके।' इससे बड़ा सामाजिक सदभाव, भाईचारा और सामाजिक ताना–बाना बढ़ाने के लिए और क्या हो सकता है। यह यमुना केवल हिन्दुओं के लिए नहीं है, यह नज़ीर बनारसी ने लिखा है कि वजू हमने किया है। इसलिए वह पवित्र जल रहा होगा, उन्होंने गंगा की महिमा को माना होगा। राहत इंदौरी भी कहते हैं, हमारे देश का बंटवारा जरूर हो गया हो। लेकिन जो यहां से मुसलमान गये हैं, उनके लिए भी वे कहते हैं कि 'गंगा छोड़कर जाने वालों, कतरे –कतरे को तरसोगे।' आज वहां के जो मुजाहिद हैं, वे तरस रहे हैं। यह हमारी सभ्यता और संस्कृति का प्रतीक है। माननीय मंत्री महोदया, यह यमुना क्यों नहीं साफ हो पा रही है? यमुना एक्शन प्लान पहला हुआ और दूसरे की आवश्यकता तो तब होती जब पहला एक्शन प्लान कम्पलीट हो जाता।

आप पिछले पचास–साठ साल से राज कर रहे हैं। आप सरकार चलाते हैं, आपका अपना बजट है और आपका अपना मंत्रालय है। मैं

पूछना चाहता हूं कि इसके लिए दोषी कौन है? कांग्रेस की तरफ से जो भाषण आया था, वह वेद–पुराणों से भरपूर था, लेकिन आपने चालीस–पचास साल का हिसाब नहीं दिया। मैं यहां आंकड़ों में नहीं जाना चाहता, लेकिन आपने इतने लाख करोड़ इतने हजार करोड़ गंगा– एक्शन प्लान–1, एक्शन–2 में, गंगा प्रदूषण बोर्ड में खर्च किए, इसका नतीजा क्या निकला? हमारे गांव में एक कहावत है, हिसाब लगाया ज्यों का त्यों और कुनबा आखिर डूबा क्यों? 'आपने पैसा दिया, वह पैसा पहुंचा और खर्च हुआ, मैं पूछना चाहता हूं कि यह उपयोग हुआ या उपभोग हुआ? इस बारे में आप पूरे सदन को बताइए। मुझे तो लगता है'।

लेकिन मैं सदन के माध्यम से यह जरूर पूछना चाहूंगा कि जो पैसा लाखों, करोड़ों में गया है अगर वह खर्च हुआ है और उसका सही उपयोग हुआ है, तो गंगा मैली क्यों है? यमुना मैली क्यों है?

लेकिन मैं सदन के माध्यम से यह जरूर जानना चाहूंगा।

जो अन–पार्लियामेंट्री है, उसको निकाल दिया जाए। मैं कह रहा हूं कि हाथ में जो RADO है, अब तो सहमत हैं। ठीक है ना, ठीक है ना। चलो RADO पर तो आ जाओ। मेरे कहने का मतलब यह है और मैं इस बात का जरूर कहूं गा कि यमुना और गंगा के पानी का प्रदूषण भले ही दूर न हुआ हो, लेकिन इससे संलग्न जो अधिकारी हैं, उनके घर का प्रदूषण जरूर दूर हो गया।

सर, मैं मज़ाक में नहीं कह रहा हूं, एक क्वेश्चन आया कि गंगा कहां से निकलती है और कहां समाप्त होती है? यमुना कहां से निकलती है और कहां समाप्त होती है? टीचर ने बच्चे को कहा कि गंगा, गंगोत्री से शुरु होती है और यह हरिद्वार में समाप्त हो जाती है। यमुना, यमुनोत्री से शुरु होती है और यमुनानगर में समाप्त हो जाती है। मैनेजर ने टीचर से कहा कि भाई, ये नदियां निकलती तो यहीं से हैं, लेकिन जो स्थान आपने बताए हैं, ये वहां पर समाप्त नही होती हैं। टीचर ने कहा कि जब एक प्राइवेट स्कूल में बारह सौ रुपए दोगे तो फिर गंगा हरिद्वार में ही समाप्त होगी और यमुना, यमुना नगर में समाप्त होगी।

बच्चे से पूछा गया कि तुमने ऐसा क्यों लिखा, तो उसने कहा कि गंगा भले ही गंगोत्री से शुरू होती है, लेकिन असली गंगा तो हरिद्वार पर ही समाप्त हो जाती है, मैं उसको कैसे गंगा सागर तक ले जाऊं? उस गंगा को मैं गंगा नहीं कहता हूं। यमुना भले ही यमुनोत्री पर शुरू होती है, लेकिन हरियाणा से पहले, आपकी इंडस्टीज से पहले, दिल्ली में आने से पहले यमुना समाप्त हो जाती है, वह यमुना मर जाती है। बच्चे ने कहा आप नम्बर दो न दो, लेकिन मैं यमुना को इलाहाबाद तक नहीं ले जाऊंगा, क्योंकि मैंने अपने पुरखों से गंगा और यमुना की जो महिमा सुनी है, वह यमुना आगरा, फिरोजाबाद, मथुरा, वृंदावन, इटावा और आगे जाकर औरेया में देखने को नहीं मिलती है। इसके लिए कौन दोषी है? बच्चा तो दोषी नहीं है। जिसने ज्यादा समय तक, पचास साल तक राज किया, उसको देखिए। आपको ये आंकड़े देने की जरूरत नहीं पड़ती। मैं आपके माध्यम से यह कहना चाहूंगा कि ब्रज के लोग बहुत उद्वेलित हैं। वह किसी पार्टी विशेष का अभियान नहीं है। जो गंगा, यमुना को प्यार करते हैं, उन्होंने 5 मार्च को लाखों, हजारों की संख्या में दिल्ली की ओर कूच किया हुआ है।

महोदय, मैं कहना चाहूंगा कि आपने 'हथिनी कुंड' शब्द का नाम नहीं लिया है। यदि 'हथिनी कुंड' शब्द इस्तेमाल न हो, तो क्या आज की यह बहस पूरी हो सकती है? प्रो. रामप्रकाश जी, आपके मुँह से 'हथिनी कुंड' पर यह बात आती तो अच्छा लगता।

महोदय, हैड और टेल दो चीजें हैं। यह हमेशा होता है कि जबर आदमी हैड पर नहर का पानी खींच लेता है, बंबे का पानी खींच लेता है। हैड पर सारी चीज है। हम यू.पी. के लोग टेल पर रह रहे हैं, दिल्ली हैड पर है, उत्तरांचल हैंड पर है, हरियाणा हैड पर है। पानी आप ले लेते हैं, टेल पर आप पानी नहीं आने दे रहे हैं। अगर आने भी दे रहे हैं, तो वह जो पानी है, उसको गंगा, यमुना का पानी नहीं कहें गे। वह पानी, जो बनारस, इलाहाबाद, फर्रुखाबाद, कन्नौज पहुंच रहा है, यमुना का जो पानी आगरा, फिरोजाबाद, शिकोहाबाद, ओरैया, इटावा पहुंच रहा है, क्या हम इसको यमुना का पानी कहेंगे? इसके लिए कौन दोषी है? दिल्ली की सजा हम भुगत रहे हैं, हरियाणा की

सजा हम भुगत रहे हैं। मैं आंकड़ों में नहीं जाऊंगा कि कितने किलोमीटर है। हाँ, अगर यमुना 370 किलोमीटर दिल्ली आती है, तो आप केवल 15 किलोमीटर में उसको इतना दूषित कर देते हैं कि यहाँ से जाकर इलाहाबाद तक, उत्तर प्रदेश उसको दूषित नहीं करता है। 'हथिनी कुंड' का जिक्र जरूर होना चाहिए। वहाँ से, हरियाणा से कितने क्यूसेक पानी छोड़ा जा रहा है? आपने अविरल की बात कही है। मैं भले ही विज्ञान का विद्यार्थी हूं, लेकिन अविरल का अर्थ जानता हूं, जिसकी धारा न टूटे। यमुना की धारा टूट रही है। क्यों? 'हथिनी कुंड' से हमें, ब्रज के लोगों को, मथुरा के लोगों को, वृंदावन, आगरा, फिरोजाबाद, शिकोहाबाद, और इलाहाबाद के कुंभ को 2000 क्यूसेक पानी चाहिए, लेकिन आप 70, 75 या 100 क्यूसेक से ज्यादा पानी नहीं छोड़ रहे हैं। इसलिए महोदय निवेदन है कि हथिनी कुंड पर 15 किलोमीटर की जो नहर है, जिसमें सारे उद्योग के कचरे जा रहे हैं और यहाँ पर जो बैराज है, वहाँ से तो आप दिल्ली के लिए पानी ले लेते हैं, उसके बाद शाहदरा वाले सारे ड्रेनेज में आप वहाँ से हमारे यहाँ पर इंडस्ट्रीज का सारा कचरा भेज रहे हैं। यमुना नहर हमारे ओखला से 15 किलोमीटर दूर है, लेकिन उसमें किस प्रकार का पानी पहुंच रहा है? मैंने केमिस्ट्री में H_2O की प्रॉपर्टी के बारे में पढ़ा था। उसमें था, रंगहीन, गंधहीन, स्वादहीन। पानी की यही सारी प्रॉपर्टीज हैं कि वह रंगहीन, गंधहीन और स्वादहीन होता है। क्या यमुना और गंगा का पानी रंगहीन है? आध्यात्म पुराण के अलावा मैं विज्ञान पर आता हूं। क्या आज यमुना और गंगा का पानी गंधहीन और स्वादहीन है? अगर विज्ञान की दृष्टि से देखें तो भी उसमें बहुत प्रदूषण है और यदि आध्यात्म और पुराण की दृष्टि से देखें तो भी यह एक बहुत बड़ा नुकसान हो गया है। आप वजीराबाद से पानी लेते हैं। आपने असली पानी ले लिया, उसके बाद बीच में, पंद्रह बड़ी ड्रेनों के द्वारा आप ओखला में, उत्तर प्रदेश में भेज रहे हैं।

मैं कोई बहुत वैज्ञानिक आदमी नहीं हूँ, जो इसका समाधान बताऊँ, लेकिन sewage के पानी का कोई treatment नहीं होता है, आप कुछ भी कहें। आपने 23 treatment plants लगा रखे हैं, पता नहीं यह

unparliamentary है या नहीं, लेकिन अगर गांव का कोई आदमी शौच के लिए एक लोटा पानी लेकर खेत में जाता है और अचानक उसको प्यास लगती है, तो क्या कभी उसने वह पानी पीया है? जबकि घर से लोटा मांजा, धोया, नल से भरा, लेकिन उसके दिमाग में है कि मैं शौच के लिए जा रहा हूं, अचानक उसको प्यास लगती है, क्या कभी वह पानी पीता है? वह पानी शुद्ध है, लेकिन भावना दूसरी हो गई है, इसलिए वह उस पानी को कभी नहीं पीता है। Sewage plants से आप क्या treatment करेंगे, मल–मूत्र का क्या treatment हो सकता है, उसके बाद कैसे आचमन हो सकता है?

मैं यही कहना चाहूंगा कि आप नाला निकालिए, गंगा के समानांतर कछ भी निकालिए, लेकिन sewage plants का शोधन नहीं हो सकता है। 400 साल पुरानी गंगा, यमुना दे दो, मैं तो वह मांगने आया हूं।

जिससे अपर गंगा निकलती थी, जिससे लोअर गंगा निकलती थी, जिससे यमुना नहर निकलती थी, नहर से बंबे निकलते थे, बंबे से नालियां निकलती थीं, नाली से गुल निकलती थी और गुल से खेत का पानी मिलता था। क्या आज हम आखिरी खेत पर पानी पहुंचा पा रहे हैं, जो अंग्रेजों ने पहुंचाया था? बंबे के पानी से, नहर के पानी से सिंचाई होती थी या नहीं? आज दोआबा का क्षेत्र, मैं दक्षिण भारत की बात नहीं कर रहा हूं, लेकिन गंगा और यमुना के बीच के रहने वाले जिले, हमारा फर्रूखाबाद हो, इटावा हो, ओरैया हो, कन्नौज हो, एटा हो, कासगंज हो, फिरोजाबाद हो, मैनपुरी हो, यह दोआब का क्षेत्र है, दोआब का क्षेत्र शुरू से मालदार रहा है, लेकिन गंगा–यमुना के इस प्रदूषण और पानी न रहने के कारण आज दोआब के लोग ही, हमारे किसान सबसे ज्यादा परेशान हैं।

हमारी सरकार ने एक्सप्रेस हाईवे बनाया यमुना एक्सप्रेस हाईवे। यमुना प्रदूषित हो सकती है, लेकिन उस यमुना एक्सप्रेस हाईवे की क्वालिटी पर कोई शक नहीं हो सकता है। यह बहन कुमारी मायावती जी की यमुना नदी को सच्ची श्रद्धांजलि है कि उसकी memory में उन्हांने parallel रूप से यमुना एक्सप्रेस हाईवे बनाया। अगर आप यमुना शुद्ध कर दें, अगर आप यमुना में अविरल, सजल, निर्मल,

कोमल, सजल पानी बहा दें, तो यह इलाका मालदार हो जाएगा। लोग वहां रहना पसंद करते हैं, लोग तो चाहते हैं कि मृत्यु भी हो, तो बृज में। लेकिन इसके लिए कुछ चीजें होनी पड़ेंगी। Charity begins at home. हम अपने धार्मिक कार्यक्रमों के waste गंगा–यमुना में न डालें, हम बच्चों के केश–कर्तन वहां न करवाएं। सबसे ज्यादा दाह संस्कार हमेशा नदियों के किनारे होते है। हम इतनी awarness लाएं और विद्युत शहदाहगृह शुरू करें, हम गंगा–यमुना में मृत शरीरों को न डालें। मैं आपके सामने यही कुछ बातें कहना चाहता था।

लेकिन, महोदय, हम प्रमुख रूप से यह मांग करेंगे, सबसे प्वायंट वाली बात है, कि हथिनीकुंड से 2 हजार क्यूसेक पानी छोड़िए, अगर बृज के मंदिरों के रोते हुए घाटों के लिए आप चाहते हैं कि वे घाट मुस्कराएं, अगर आप चाहते हैं कि बांके बिहारी वृंदावान और गिरिराज महाराज को सच्ची श्रद्धांजलि दें। यमुना को यम की बहन कहा जाता है। यम यानी यमराज और यमुना उसकी बहन। माननीय मंत्री जी, आप फिर कहेंगी क आपने बेतुकी बात कर दी। अगर इसके पैसे का wastage होगा, तो यमुना फिर यम की बहन है, वह कोई–न–कोई सजा जरूर देगी, अगर आप धर्म में विश्वास करते हैं, आस्था रखते हैं। लेकिन मेरी पीड़ा उस किसान के खेत के लिए है कि यमुना में पानी नहीं होने से, गंगा में पानी नहीं होने से हमारी नहरें सूखी हैं। जब नहर सूखी होती हैं; जब वे सूखी होती हैं, तो खेत सूखे होते हैं और जब खेत सूखा रहेगा, तो देश सूखा रहेगा। जिस साल बढ़िया फसल होती है, जिस साल अच्छे आलू होते हैं, उसकी अच्छी कीमत मिलती है, उसी साल हम कपड़ा खरीदते हैं, उसी साल हम सोना–चांदी खरीदते हैं, उसी साल हम भट्ठे से ईंटें खरीदते हैं, उसी साल हम अपनी बेटी की शादी करते हैं। इसलिए खेत को सूखा मत रखिए। सिंचाई का बड़ा साधन नदियां हैं। पहले ये ट्रांसपोर्ट का साधन भी थीं। मैं बाबरनामा पढ़ रहा था। उसमें लिखा है कि मैं तो घोड़े से गया, लेकिन हमारा सारा सामान यमुना नदी से गया। मैं उसमें पढ़ रहा था कि हमने अनवारा गांव में हॉल्ट किया। इसका मतलब यमुना और गंगा यातायात के लिए भी बहुत बड़ा साधन हुआ करती थीं। ■

आज गंगा की इज्जत और अज्मत पर खतरा है : चौधरी मुनब्बर सलीम

ekननीय उपसभापित महोदय, मैं आपका दिल की गहराइयों से शुक्रिया अदा करता हूं कि इस तारीखी विषय पर आपने मुझे बोलने का मौका दिया। मैं एक शेर से अपनी बात शुरू करना चाहता हूं।

,¡ vkc:n¡ xxk] o¨ fnu g¡ ;kn r¡>d¨
mrjk r¡j¡ fdukj¡ tc dkjok gekjk

माननीय उपसभापति महोदय, मैं कहना चाहता हूं कि पानी और बहते हुए पानी का कोई गांव, कोई मज़हब और कोई मस्कन नहीं होता। पानी ज़िन्दगी की अलामत होता है। मुझे दो तकरीरों ने यहां बहुत मुतास्सिर किया, एक रवि शंकर जी की और दूसरी बाबू दर्शन सिंह यादव जी की।

मैं आपसे अर्ज़ करना चाहता हूं, गंगा कुछ लोगों के लिए धर्म है, लेकिन हिन्दुस्तान के 125 करोड़ लोगों के लिए यह अभिमान है, सम्मान है, इतिहास है। मैं अर्ज़ करना चाहता हूं कि गंगा हिमालय की ऊँचाइयों से पाकीज़ा गिरती है, लेकिन ज़मीन पर आने के बाद हम हिन्दुस्तानी उसे गंदा कर देते हैं। हम हिन्दुस्तानी उसे अपवित्र कर देते हैं और सिर्फ 70 किलोमीटर के अन्दर गंगा इतनी नापाक हो जाती है कि उसका पानी पीने से लोगों को कैंसर और हैपिटाइटिस हो जाता है। वह यह दिल्ली का इलाका है।

मैं एक ऐसे प्रदेश से आता हूं, गंगा जिसकी करधौनी है। मैं राज्य सभा में उत्तर प्रदेश से आता हूं, लेकिन मैं रहने वाला मध्य प्रदेश का हूं, जहां क्षिप्रा है, जहां नर्मदा है। मैं बेतवा का बेटा हूं। जहां से बेतवा

निकलती है, मैं वहां का रहने वाला हूं। मैं नदियों की अज़्मत और इज्ज़त जानता हूं।

उपसभापति महोदय, मैं कहना चाहता हूं कि अगर सरकारों के अन्दर इच्छाशक्ति होती है, तो फिर वे नाकाम होने वाली चीज़ को भी करके दिखा देतीं। अगर आप देखना चाहें तो आप कुम्भ नहाने चलिए। वहां उत्तर प्रदेश में मेरी पार्टी की सरकार है और अखिलेश यादव जी वहां के मुख्य मंत्री हैं। माननीय आज़म खान साहब कुम्भ के अध्यक्ष हैं। हमने सिद्ध करके बता दिया और लोगों को, श्रद्धालुओं को साफ–सुथरे पानी में स्नान करवा दिया। मैं स्वयं 3 फरवरी को गंगा तट पर गया था। गंगा की पाकीज़गी को लेकर एक संगोष्ठि थी, उसमें मैं मुख्य वक्ता था। यहां लौटकर, 1 मार्च को मैंने अपना एक स्पेशल मेन्शन पेश किया। उसमें मैंने कहा कि गंगा की नापाकी ऐसे नहीं रुकेगी, वह एक मज़बूत कानून से रुकेगी। हमें दलगत सियासत से ऊपर उठ कर 118वां संशोधन करना चाहिए और गंगा को गंदा करने वालों को जेल की सलाखों में होना चाहिए। यह सही है कि हम जागरुकता इस सबको रोकना चाहते हैं, जनता को जगाना चाहते हैं, लेकिन गंगा को वे बड़े लोग ही गंदा कर रहे हैं, जिनकी गिरेबानों तक सिर्फ कानून का हाथ पहुंच सकता है, गरीब आवाम का हाथ नहीं पहुंच सकता। इसलिए आज मेरा मुतालबा है कि आज ही मंत्री जी यह ऐलान करें, वे तमाम नाले, जो नदियों को गंदा करते हैं, उन्हें रोक दिया जाएगा, उनके रास्ते बदल दिए जाएंगे, ताकि नदियों का पानी पाक रहे।

मैं जिस मज़हब का मानने वाला हूं, वह मज़हब कहता है, 'ऐ इस्लाम को मानने वालों, तुम अपना गंदा जिस्म लेकर दरिया में मत चले जाना, वरना दरिया नापाक हो जाएगा और तुम गुनाहों में मुब्तला हो जाओगे।' यानी पहले नहाओ, फिर नदी में जाओ। अगर यह सिर्फ एक उसूल मान लिया जाए, तो दुनियां की सारी नदियां पाक हो जाएंगी।

रवि शंकर जी ने कहा कि बगैर नदियों के हम हिन्दुस्तान की कल्पना नहीं कर सकते, मैं और आगे जा कर कहता हूं, पानी इन्सान

ही नहीं, जीव–जन्तुओं के जीवन की भी अलामत है। उपसभापित महोदय, जिन उपग्रहों पर पानी नहीं मिलता, वहां जीवन भी नहीं मिलता। जल का अभिषेक होता है, इसके बाद ही हर धर्म की शुरूआत होती है, हर माइथोलॉजी की शुरूआत होती है। आज गंगा की इज्जत और अज़्मत पर खतरा है। माननीय प्रो. राम गोपाल जी ने यहां जो तबसरा कराया है, वह तबसरा एक तारीखी तबसरा बन गया। मैं चाहता हूं कि हुकूमते हिन्द की तरफ से जो जवाब आए, वह जवाब भी ऐतिहासिक आए, ताकि हम लोग अपने घर जा कर कहें कि आज हाउस में हमने छः बजे तक बैठ कर, माननीय कुरियन साहब की अध्यक्षता में एक तारीखी फैसला सुना है और अब हिन्दुस्तान की किसी नदी को कोई गंदा नाला गंदा नहीं करेगा।

यह मेरा सबसे पहला मुतालबा है। मैं यह चाहता हूँ कि रवि शंकर जी 118वें संशोधन के लिए आगे बढ़ें। सिर्फ गंगा ही नहीं, बल्कि हिन्दुस्तान की सारी नदियों के लिए एक ऐसा कानून आना चाहिए। उनको गंदा करने वाले कारखानों के खिलाफ और उनको गंदा करने वाले लोगों के खिलाफ एक सख्त कानून बने। वह सख्त कानून गंगा में जाने वाली गंदगी को रोक सकता है।

सर, आपने मुझे बोलने का वक्त दिया, उसके लिए आपका दिल की गहराइयों से बहुत–बहुत शुक्रिया। मैं इस हाउस का भी शुक्रिया अदा करता हूँ। आज़ादी के पहले एक नारा था–आज़ादी, जिस पर हम सब एक थे और आज़ादी के बाद आज दूसरा नारा, जिसका मैं भी साक्षी हूँ, यह आया है कि गंगा और यमुना गंदी नहीं होनी चाहिए, इस पर हम सब एक हैं और इसके लिए एक कानून बनना चाहिए। हिन्दुस्तान जिन्दाबाद। बहुत–बहुत शुक्रिया। ■

क्या सचमुच हम उस देश के वासी हैं जिस देश में गंगा बहती है : विवेक गुप्ता

vkदरणीय उपसभाध्यक्ष महोदय, नमस्कार। आज मुझे यहाँ बैठे महानुभावों के बीच अपने विचार व्यक्त करने का यह प्रथम अवसर प्राप्त हुआ है। इस सुअवसर के लिए मैं ईश्वर, आपको, हमारी नेत्री, गरीबों एवं आम आदमी की दीदी एवं दुःख–दर्द की सखी, सुश्री ममता बन्दोपाध्याय, मेरे स्वर्गवासी पितामह और उन तमाम लोगों को धन्यवाद करते हुए नमन करता हूँ, जिनकी आवाज़ बन कर मैं यहाँ आज आया हूँ।

महोदय, आज हम लोग यहाँ गंगा के प्रदूषण पर चर्चा करने को तत्पर हैं, पर मैं अपनी बात शुरू करने से पहले तनिक गंगा नदी के बारे में कुछ कहना चाहता हूँ। यह माननीय मंत्री जी के लिए है, क्योंकि कांग्रेस इस परिवार की बात ज्यादा सुनती है। हमारे प्रथम प्रधान मंत्री, जवाहरलाल नेहरू जी का अंग्रेज़ी में एक बयान है, जिसको मैं अंग्रेज़ी में ही पढ़ रहा हूँ, इसके लिए मैं क्षमा चाहता हूँ।

"The Ganges, above all, is the river of India, which has held India's heart captive and drawn uncounted millions to her banks since the dawn of history- The story of Ganges, from her source to the sea, from old times to new, is the story of India's civilization and culture."

गंगा हमारे लिए मइया, हमारे लिए माँ, सब कुछ का ओहदा रखती है। मैं इसका comparison गौ माता के साथ करना चाहूँगा। इसके लिए मैं क्षमा चाहूँगा, क्योंकि मैं यहाँ किसी की भावनाओं को ठेस नहीं

पहुँचाना चाहता। गौ माता भी चारा खाकर और पानी पीकर दूध देती है, लेकिन गंगा मइया हम लोगों से कुछ नहीं माँगती, बल्कि हम लोगों को हर समय देती ही देती है। मैं आँकड़ों की ज्यादा बात नहीं करना चाहता, क्योंकि आँकड़ों में असली विषय कहीं खो जाएगा। कोलकाता, बंगाल में बिहार और उत्तर प्रदेश के बहुत सारे हमारे भाई रहते हैं। वहाँ छठ पूजा के दिन यह नारा लगता है कि अर्घ्य ले लो गंगा मइया हमार। यहाँ तक कि इंसान की जो अंतिम यात्रा है, वह भी गंगा में विलीन होकर ही पूरी होती है। मगर, आज जो हो रहा है, उसका थोड़ा बैकग्राउड मैं अपनी बात। शुरू करने से पहले देना चाहूँगा।

आज मछलियों की कई प्रजातियाँ विलुप्त होती जा रही हैं। आज स्थिति यहाँ तक पहुँच गयी है कि शायद ही कोई ऐसा कीटाणु है, जो गंगा मइया में नहीं होगा। कैंसर, वाटरबोर्न डिजिजिज़, हेपेटाइटिस आदि कई बीमारियों का अड्डा गंगा मइया और गंगा जल का स्रोत बन चुके हैं। हालत इतनी खराब है कि हमें यह भी पता नहीं है कि कहाँ कितना प्रदूषण है और उसको कैसे रोका जा सकता है। यहाँ तक कि कुछ ही दिनों पहले किसी ने यह तक कहा था कि गंगा पर रिसर्च करते–करते शायद ऐसा कीटाणु मिल जाए, जिसके कारण किसी भारतीय को शायद नोबल प्राइज़ मिल जाए।

माँ, माटी, मानुष की रक्षा करना हमारा कर्तव्य है, मगर गंगा मइया के संबंध में जब बात की जाती है तो कुछ लोग इन बातों को भूल जाते हैं। यह गंगा मइया अपने हर रास्ते, हर पड़ाव पर, कहीं न कहीं किसी न किसी को लाभ जरूर पहुँचाती है, मगर हमसे थोड़ी–सी सफाई की भी उम्मीद रखना, शायद ज्यादा है। हम लोग जो गंगा मइया के सपूत हैं, शायद हम इस लायक भी नहीं हैं। पुराने जमाने का एक मशहूर गीत है, जिसे मेरे पहले प्रोफेसर साहब पढ़ चुके हैं, लेकिन फिर भी मैं उसे दोहराऊँगा कि गंगा तेरा पानी अमृत, झर–झर बहता जाए। अगर यही गीत आज दोबारा गाया जाएगा, तो उसके बोल कुछ इस तरह हो जाएंगे कि गंगा तेरा पानी आर्सनिक, झर–झर बहता जाए। संस्कृति, धर्म और अन्य कारणों से लोग गंगा मइया का निर्वाह करते हैं, करते रहेंगे और इसके फलस्वरूप गंगा में प्रदूषण भी रहेगा। इस

प्रदूषण का कारण चाहे औद्योगिक इकाइयाँ हों, प्लास्टिक पर लगे प्रतिबंध की अवहेलना हो या चाहे यह हम लोगों के द्वारा इस्तेमाल की जाती हो, पर क्या हमारी सरकार इस मामले में कुछ भी नहीं कर सकती?

अब मैं अपने प्रिय प्रदेश, बंगाल पर आना चाहूँगा। बंगाल गंगा मइया के सफर का आखिरी मोड़ है। यहाँ गंगा मइया को भावभीनी विदाई मिलती है और वह सागर में जाकर विलीन होती है। एक पुरानी कहावत है कि सारे तीरथ बार–बार गंगासागर एक बार। गंगासागर में एक बार स्नान करने पर लोगों को कई जन्मों के पुण्य प्राप्त होते हैं। वहाँ हर साल मकर–संक्रांति पर लाखों लोगों की भीड़ जमा होती है और वह मकर–संक्रांति का मेला किसी कुम्भ मेले से कम नहीं होता, पर हमारी केन्द्र सरकार को इतने सालों में आज तक उस मेले को राष्ट्रीय स्तर देने की फुर्सत नहीं मिली और न ही इसको उसमें कोई योगदान देने की फुर्सत मिली। वहाँ दीदी ने मेहनत करके लोगों को सुख–सुविधा पहुँचाने की जो भी छोटी–मोटी कोशिश है, वह हम लोगों को खुद करनी पड़ रही है।

सर, 1986 से अब तक सिर्फ बंगाल में गंगा एक्शन प्लान और अलग–अलग स्कीमों द्वारा तकरीबन 400 करोड़ रुपये खर्च किए जा चुके हैं। ये खर्चे कहाँ हुए, किस पर हुए, यह मुझे नहीं पता। मैं घड़ी, कंगन और ज्वैलरी की बात नहीं करना चाहूँगा, मगर मैं यह जरूर जानना चाहूँगा कि ये रुपये कहाँ गए और इन रुपयों का कहाँ–कहाँ सदुपयोग हुआ या दुरुपयोग हुआ?

आज कोई भी कह दे कि गंगा की स्थिति पहले से बेहतर है या 1986 से, जब से यह रुपया खर्च करना चालू हुआ, वहां से बेहतर है, तो मैं उस जानकारी के साथ अवगत होना चाहूंगा? जहां तक हम लोगों को लगता है कि Ganga Action Plan बंगाल के साथ एक बड़ा छल, एक बड़े घोटाले के रूप में सामने आता है, क्योंकि न तो कोई फायदा नजर आ रहा है और यह भी पता नहीं चल रहा है कि जो गलतियां हुई हैं, वे दोहराई नहीं जाएंगी। इनफेक्ट Ganga action Plan और गंगा से प्रदूषण दूर करने के बीच में गैप हो गया है। Ganga

Action Plan मतलब GAP, और गंगा प्रदूषण के बीच में भी एक गैप है। हमारे बंगाल में 28 म्यूनिस्पिलिटी हैं जो फरक्का से गंगा सागर के बीच आती हैं, जहां पर गंगा के बहाव के कारण तकलीफों से हम लोग जूझ रहे हैं। इनको, हम लोगों को केन्द्रीय सरकार से मदद मिलने की आशा दूर–दूर तक नजर नहीं आ रही है। 40,000 क्यूसेक पानी हम लोगों को चाहिए होता है अपना जीवन निर्वाह करने के लिए। मगर केन्द्र सरकार केवल 18,000 क्यूसेक पानी दे कर ही बोल देती है कि बाकी के लिए अपने आप खुद करो। पश्चिम बंगाल से हमारी दीदी ने एक संदेश भेजा है कि हम लोग एक सेंट्रल गंगा River Water Distribution Policy तैयार करने के लिए केन्द्र सरकार से दरख्वास्त करते हैं, जिस पर विचार–विमर्श किया जाए। इस पर विशेषज्ञों को बैठाकर कोई नया तरीका, नया आयाम चालू किया जाए। Kolkata Port Trust जो कि टेंड, कॉमर्स सबके लिए बहुत जरूरी है, उसकी भी इसी कारण आज स्थिति दयनीय हो रही है। मगर dredging के लिए अतिरिक्त रुपए देने की तो दूर की बात है लेकिन यहां कोई विचार–विमर्श करने के लिए भी तैयार नहीं है, अभी बहुत कुछ करना बाकी है। लेकिन सब कुछ केन्द्र सरकार की लापरवाही और गैर चिंतन के रहमोकरम पर है। जहां तक शुद्धिकरण का सवाल आता है, पता नहीं साढ़े 13 प्रतिशत पर आकर आंकड़ा क्यों अटक सा गया है। इसके आगे बढ़ ही नहीं रहा है। National Ganga River Basin Authority की जो सरकारी नीति तय करने के लिए सिर्विसेज कांउिसल है।, उसने अपने गठन से लेकर आज तक सिर्फ तीन मीटिंग ही की हैं। इसका मतलब उन लोगों को ऐसा लगता नहीं कि कोई समस्या है। मैं सदन के माध्यम से और आप सब के माध्यम से उस समिति तक यह बात पहुंचाना चाहूंगा कि सिर्फ तीन मीटिंग में गंगा की समस्या दूर होने वाली नहीं है। माननीय प्रधान मंत्री जी की अध्यक्षता में जो कांउिसल है।, उसने भी 2011 और 2012 में कोई मीटिंग नहीं की। यहां तक कि इम्पिलमेंटेशन के लिए भी जो कमेटी है उसकी भी 2011 और 2012 में कोई मीटिंग नहीं हुई है या अगर हुई है तो हम लोगों को यह जानकारी प्राप्त नहीं है। माननीय प्रधान मंत्री

वैसे तो खामोशी की आड़ में कई गंभीर मसलों पर टिप्पणी करने से कतराते हैं। परन्तु गंगा पर चूंकि उनकी खुद की अध्यक्षता में कमेटी है, इसलिए मात्र पी0एम0ओ0 की एक प्रेस विज्ञप्ति के द्वारा कुछ चुनिंदा स्वरों में स्वच्छ निर्मल गंगाजल तथा पवित्र गंगाजल को बरकरार रखने के लिए अभियान छेड़ने की जरूरत के बारे में जिक्र किया गया है।

वास्तविकता में न तो कोई कदम है और न कोई विज़न है। हम प्रधान मंत्री जी के द्वारा पक्के कदम की अपेक्षा करते हैं। शायद गंगा में कोई पूंजी निवेश का या एफ0डी0आई0 का प्रपोज़ल नहीं है, इसलिए शायद उनका ध्यान इस ओर आकर्षित नहीं हो रहा है। माननीय प्रधान मंत्री जी से गुजारिश है कि गंगा के बारे में थोड़ा बरस कर दिखाएं, गरजने से काम नहीं चलेगा। वैसे भी गरजने के मामले में उनका ट्रैक रिकार्ड थोड़ा पुअर चल रहा है। गंगा एक्शन प्लान भी किसी सरकारी फाइल में धीरे–धीरे लुप्त होता हुआ सा दिखाई दे रहा है। आज यहां पर राजकपूर जिन्होंने फिल्म 'राम तेरी गंगा मैली' बनाई थी, वे अगर जिन्दा होते तो पिक्चर का टाइटल बदलकर कह देते कि राम तेरी गंगा रोज और मैली होती जा रही है इन पापियों के हाथ। बनारस और देश के दूसरे हिस्सों में गंगा का दर्शन करने के लिए, गंगा में स्नान करने के लिए टूरिस्ट आते हैं। उससे देश को बहुत बड़ा राजस्व प्राप्त होता है। शायदी इसी कंसिड्रेशन से केन्द्र सरकार इस पर ध्यान दे दे कि यह सोने की मुर्गी रोज थोड़े–थोड़े अंडे देगी, इसलिए टूरिज्म के इस पोटेंशिअल को बरबाद मत करो। महोदय, कई लोग बोलना चाहते हैं, मैं ज्यादा वक्त नहीं लूंगा। मैं यह कहूंगा कि अगर हम लोग गंगा को नहीं बचा सके या गंगा को हम इसी तरह बरबाद होते देखते रहे, तो वह दिन दूर नहीं है जब इस सदन में जितने लोग बैठे हैं और इस देश का हर नागरिक गंगा के चुल्लू भर पानी के लायक भी नहीं बचेगा। आज मेरे अश्रु गंगा में बहने के बजाए गंगा के लिए बह रहे हैं। आज एक लाइन में मैं यह पूछने पर मजबूर हो गया हूं कि क्या सचमुच हम उस देश के वासी हैं जिस देश में गंगा बहती है? ■

क्या हम विनाश की कीमत पर विकास चाहते हैं ? : दर्शन सिंह यादव

बस्लाम की धार्मिक पुस्तक कुरान शरीफ के 19वें पारा में सूरेह फुरकान और 27वें पारा में सूरेह रहमान ने लिखा है, कुरान शरीफ के माध्यम से खुदा ने इंसान को आगाह करते हुए बताया कि हमने जो नैमतें बख्शी हैं, उनमें पानी बड़ी नैमत है। इसकी कद्र करो, इसका बेजा इस्तेमाल मत करो, इसको साफ रखो। इसे गंदा करना एक बड़ा गुनाह है क्योंकि खुदा की इबादत से पहले साफ पानी से वजू करने का कायदा है। महोदय, हमारे गुरुनानक साहब ने भी गुरु ग्रंथ साहिब में यह बताया है कि पानी एक आवश्यक आवश्यकता है, इसे सुरक्षित रखो, साफ रखो। यही स्थिति बाइबल की है और जब हम हिंदू धर्म पर आते हैं, तो यजुर्वेद के 36वें अध्याय का 15वां मंत्र यह कहता है, ''ऊँ द्यौः शांतिरन्तरिक्षं शांतिः पृथिवी शांतिरापः शांतिरोषधयः शांतिः, वनस्पतयः शांर्तिवश्वेदेवा शांतिर्ब्रह्म शांतिः, सर्व शांतिः शांतिरे व शांतिः सा मा शांतिरेधि शांति। ऊँ शांतिः, शांतिः, शांतिः।''

महोदय, आज हिंदू धर्म में जितने भी उत्सव होते हैं, चाहे हर्ष के हों और चाहे गम के हों, लेकिन यह मंत्र हर कार्यक्रम में बोला जाता है क्योंकि यह मंत्र पर्यावरण का मंत्र है। हमारे महर्षियों ने इसकी रचना की थी और उस समय की थी जब मानव का प्रादुर्भाव इस पृथ्वी पर हुआ था। उन्होंने आज से 1,96,08,53,000 वर्ष पहले कहा था, ''ऊं द्यौ, सूर्य लोक, अंतरिक्ष, उससे नीचे जिसमें वायु है, शांतः। आपः शांतः, तीसरा नम्बर आपः पर आया और आपः का अर्थ है, जल अर्थात् पानी।

पानी को सुरक्षित रखो, अगर पानी को सुरक्षित नहीं रखा तो प्रलय हो जाएगी और यह सृष्टि समाप्त हो जाएगी।

महोदय, आज हम इसी पानी से सम्बंधित विषय पर चर्चा कर रहे हैं। मैंने आपसे अनुरोध किया था कि यह अति–महत्व का नहीं, जितनी भी अति लगा दो, उतने ही महत्व का यह प्रश्न है और महत्व का इसलिए है क्योंकि हम विकास को किस कीमत पर चाहते हैं? क्या विकास, विनाश की कीमत पर भी चाहते हैं? महोदय, आज की स्थिति हमारे सामने स्पष्ट है। आज यमुना की स्थिति क्या है? यमुना हथिनी कुंड पर आकर रुक गयी है। मैं आपसे यह अनुरोध करना चाहता हूं कि यमुना को हथिनी कुंड पर रोक कर जब हमारा जल कम दिया गया था, तब यह निश्चित हुआ था कि इस जल का किस प्रकार बंटवारा होगा। उस बंटवारे में तत्कालीन मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश, माननीय मुलायम सिंह यादव, मुख्य मंत्री, हरियाणा, माननीय भजन लाल जी, मुख्य मंत्री, राजस्थान, माननीय भैरो सिंह शेखावत, मुख्य मंत्री, दिल्ली, माननीय मदन लाल खुराना की माननीय विद्या चरण शुक्ल जी, तत्कालीन जल संसाधन मंत्री, की अध्यक्षता में एक बैठक हुई थी और उस बैठक में यह निश्चित किया गया था कि हम 10 क्यूबिक जल दिल्ली से उत्तर प्रदेश के लिए रवाना करेंगे। उसके बाद में 2024 को इस निर्णय की समीक्षा करके पुनः समझौता किया जाएगा।

लेकिन, मान्यवर, क्या आज वे शर्तें पूरी हो रही हैं? मैं आज आपसे यह दरखास्त करना चाहता हूँ कि विभिन्न क्षेत्रों में इसी यमुना की स्थिति क्या है? अभी जैसे हमारे साथी बड़े अच्छे ढंग से आस्था के संबंध में और अन्य बातों पर बोल रहे थे, लेकिन स्थिति यह है कि हरियाणा में जब ताजेवाला से जल चलता है तो हथिनी कुंड पर वह नहाने योग्य है, कलानौर, हरियाणा में भी नहाने योग्य है, सोनीपत में भी नहाने योग्य है, हमारी दिल्ली में जो पहला स्थान है पाला, वहां भी नहाने योग्य है, लेकिन निजामुद्दीन पर आते–आते सबसे गंदा पानी हो जाता है, जिसमें 27 बीओडी लेवल है, यानी वहां पानी किसी भी प्रयोग के लायक नहीं है, पूजा के योग्य नहीं है, नहाने के योग्य नहीं है, पीने

की बात तो हम प्रारंभ से हम छोड़ रहे हैं।

सर, निजामुद्दीन पर स्थिति यह है कि उसमें बीओडी का लेवल 27 है, आगरा कैनाल, दिल्ली में 10 है, वहां भी नहाने के अयोग्य है। माजावली, हरियाणा में 32 है, किसी प्रयोग लायक नहीं है। मथुरा अप कैनाल में 6 है, नहाने के अयोग्य है, मथुरा टाउन से निकलता है तब भी 6 है, इसके मायने यह है कि मथुरा ने हमें जैसा जल दिया था, वैसा इन्होंने छोड़ दिया। मथुरा डाउन 6 है, आगरा अप 6 है, लेकिन जब आगरा डाउन होता है, आगरा से जब यह नदी निकलती है तो वहां यह स्थिति हो जाती है कि बीओडी 39 पर पहुंच जाता, बटेश्वर में 39 पहुंचता है, 39 इटावा में पहुंचता है। उसके बाद हमारे इटावा का यहां एण्ड है, वहां पांच नदियां इकट्ठी मिलती हैं। यमुना, चम्बल, क्वारी, सिंध, पहूज और ये पांच नदियां मिलकर जब पंचनदा बनाती हैं तब यह पानी 2 बीओडी रह जाता है, जो अच्छी तरह से नहाने योग्य है। मैं आपके सामने यह निवेदन करना चाहता हूँ कि हमारे सामने आज की स्थिति बहुत ही विकट है। आज प्रश्न यह नहीं है कि हम आपके सामने केवल बीओडी बता दें या डीओ बता दें, मगर इस नदी का पानी पीने–नहाने के अयोग्य क्यों हैं, क्यों खतरनाक है, जीवों के लिए लाभदायक क्यों नहीं है, इसके नजदीक जल–जन्तु क्यों नहीं रह सकते हैं, उसके बारे में मैं आपको बताना चाहूंगा। आप जब हरियाणा से चलेंगे, उस दिन भी मैंने आपके ध्यान में लाया था, इसके किनारे किनारे 500 छोटी और बड़ी फैक्टरियां लगी हैं और ये फैक्टरियां कुछ ऐसी हैं, जो अमोनिया छोड़ती हैं, जो नर्वस सिस्टम को भंग करता है और फेफड़ों में कैन्सर पैदा करने का काम करता है। आर्सेनिक जो जहर होता है, वह निकलता है और यह इस यमुना की रेती के कारण दिल्ली के 200 किलोमीटर के एरिया में ऐसा भर चुका है कि सारे संसार में आर्सेनिक को लेकर दिल्ली नंबर दो पर लगता है।

इसके अलावा आज इन रासायनिक कीट–नाशकों से, खर–पतवार नाशकों के छिड़काव से त्वचा कैन्सर होता है, इससे ब्लैकफूट होता है, आंतरिक अंगों में कैन्सर हो जाता है, किडनी फेल हो जाती है। इसमें लेड निकलता है, चूंकि शीशा तमाम फैक्टरियों से निकलता है, जो

सामान्यतया 0.05 परसेंट होता है, लेकिन इसमें लेड पांच–पांच परसेंट हो जाता है। यह औद्योगिक कचड़ा, उर्वरक, पेट्रोल और डीजल का कच्चा धुंआ सीधा का सीधा कैन्सर कारक है और ये आसपास चमड़े के जितने कारखाने हैं, जो उनका कचरा निकलता है उससे क्रोमियम निकलता है।

क्रोमियम पानी में जाता है और वह जल जब यमुना में जाता है, तो उसे दूषित करता है। मैं यह कहना चाहता हूं कि यमुना जल जमीन में रिचार्ज होता है। यमुना, इतनी लंबी दूर तक, 1,376 किलोमीटर की दूरी तय करके यमुनोत्री से संगम तक जाती है। इस ।,376किलोमीटर में वह पानी रिचार्ज होता है और रिचार्ज होकर underground water बनता है। फिर वह पक्का होता है, पक्के पर यह लेवल के अनुसार ढलने का काम करता है और दौड़ता है। यह जल दौड़कर आगे 30 किलोमीटर जाएगा, 50 किलोमीटर जाएगा, इसका कोई पता नहीं है और यह उतने Area के जल को प्रदूषित करता है। हम लोग हैंड पंप और टयूबवैल्स के द्वारा इस जल को ऊपर निकालते हैं और पीते हैं। अभी तक पीते रहे हैं। मैं यह समझता हूं कि जब मैं दिल्ली में आ जाता हूं, तो मुझे चिंता होती है कि यहां पीने के पानी में फिल्टर करने के लिए R.O. लगा है या नहीं लगा है, यह पानी फिल्टर हो रहा है या नहीं हो रहा है ? कहीं हमें कैंसर न हो जाए? कैंसर वह आतंकवादी बीमारी घोषित हुई है कि आज हमें पता नहीं है कि हमें कहां कैंसर है, डाक्टर जिस दिन घोषित कर देगा, हम तो चिंतित हो ही जाएंगे, लेकिन पूरा परिवार चिंता के वातावरण में डूब जाएगा। इसलिए मैं इस चीज को कह रहा था।

उपसभाध्यक्ष जी, मैं इस मुद्दे को 3 दिनों से उठा रहा था। मैं अपनी पार्टी के संसदीय बोर्ड के अध्यक्ष को, हमारे प्रोफेसर साहब को धन्यवाद देता हूं, हमारे चेयरमैन साहब को और सभी लोगों को धन्यवाद देता हूं कि आपने यह विषय यहां उठाने की अनुमति दी है।

मैं यह कह रहा था कि कैडमियम भी इस पानी में मिलता है। कैडमियम वह धातु है, जिसे सरिया में लगाकर, बड़ी–बड़ी beams को weld करने का काम करते हैं। Weld करने में तेज लाइट उठती है,

तब छलनी से आंखों को बचाते हैं, लेकिन पता चला है कि उससे कैंसर होता है। हमारे यहां थेड़ा में 9 लोगों को कैंसर हुआ। हमने अपने कार्यकर्ताओं द्वारा करीब एक दर्जन गांवों का सर्वे करवाया। वे लोग एक–एक गांव में गए, एक गांव में तो जनवरी, 2012 से लेकर दिसंबर, 2012 के बीच 42 लोगों को कैंसर हुआ है, जिनमें से 6 लोग जीवित हैं और वे अपना इलाज करा रहे हैं, बाकी 36 लोग समाप्त हो चुके हैं। इसका सर्वे तो होना चाहिए कि कितनी बीमारियां बढ़ रही हैं? आज प्रश्न आस्था का तो था, लेकिन सरकार ने इस प्रश्न को आस्था से बहुत आगे निकल जाने दिया है। आज तो बीमारियों को देखिए कि कहां क्या बीमारी हो रही है? सेलेनियम है, मरकरी है। मरकरी का यह हाल है कि औद्योगिक बिहस्राव से बढ़ता है और इससे nervous system फेल होता है। इसलिए हमारी आस्था की प्रतीक ये गंगा और यमुना नदियां, आज बीमारी की प्रतीक बन गई हैं। इसलिए इन सारी चीजों को हमें रोकने की आवश्यकता है। अब उसमें जीव–जंतु नहीं रह सकते हैं। अभी तो कुंभ के लिए बड़ी मात्रा में जल छोड़ा गया था, अगर 10 क्यूसेक जल यू.पी. के हिस्से में छोड़ा जाता, दिल्ली का हिस्सा अलग था, अगर छोड़ा जाता, तो इसकी BOD की यह स्थिति नहीं होती, तब उसमें ऑक्सीजन मिलती तब ये जीव–जंतु उसमें जीवित रहते।

इसलिए मैं बरसाना के स्वामी रमेश बाबा को धन्यवाद देना चाहता हूं, जिनके आह्वान पर यह आंदोलन चला। सम्मानित बाबा जयकिशन दास जी और हमारे किसान यूनियन के अध्यक्ष सभी लोगों के साथ दिल्ली चले आ रहे हैं, लेकिन उनको सीमा पर रोक दिया गया। अगर कोई राजनीतिक दल चला आता, तो आप उसे जंतर–मंतर पर आने देते, क्योंकि आप राजनीति से दबाव महसूस करते हैं।

यह शांति मंत्र महर्षि ने दिया था, तो हमारा देश कैसे चलेगा? महोदय, आज भी मैं दावा करता हूं कि विज्ञान, जो बड़े स्तर पर बढ़ता चला जा रहा है, आज भी वैज्ञानिक ऐसी मिसाइल तैयार नहीं कर पाए हैं कि अगर हम मिसाइल छोड़ दें और जहां से भी चाहें, वह वहीं से वापस आ जाए, लेकिन हमारे यहां पहले ऐसे बाण थे, जिनको अगर

छोड़ते थे और अगर चाहते थे, तो ब्रह्मास्त्र को भी वापस बुला लेते थे यह भारत का पुरातन इतिहास है। इसलिए मैं अनुरोध करना चाहता हूं कि अब बहुत हो चुका, हमें यह शुद्धिकरण वगैरह कुछ नहीं चाहिए। शहरों–कस्बों के जितने गंदे नाले हैं, उनको इन नदियों में जाने से रोक लीजिए और इन्हें अलग ले जाकर इनका शुद्धिकरण कीजिए। शुद्धिकरण करने के बाद वैज्ञानिकों की सेवाएं लीजिए कि वह जल किस लायक है, उसी काम के लिए उसे दीजिए और इन नदियों को इस गंदे जल से मुक्त कीजिए। महोदय, जितनी भी factories हैं, ये कोई भी प्रदूषण बोर्ड के मानकों के आधार पर नहीं चलती हैं, क्योंकि इनको देखने वाला कोई नहीं है। अगर कोई देखने वाला है भी, तो वह गलत तरीके से उनको परमिट कर देता है। मान्यवर, मेरा सिर्फ यही अनुरोध है कि उद्योगों का गंदा कचरा और कस्बों– शहरों का गंदा जल–मल इन नदियों में नहीं जाना चाहिए। मैं समझता हूं कि हाउस भी इसके पक्ष में होगा। इसमें जो भी खर्चा हो, माननीय मंत्री महोदया इसे वृहत् रूप से सोचें और इसको लागू करें। इससे बहुत बड़ा कल्याण होगा और लोगों को होने वाली इन बीमारियों पर अंकुश लगेगा। आप लोगों ने मुझे शांति से सुना, मुझे उम्मीद है कि आप इनकी मांग पूरी करेंगी, इन्हीं शब्दों के साथ मैं अपनी बात को समाप्त करता हूं, जय हिन्द! ■

गंगा और यमुना को बचाइए : राम कृपाल यादव

मपसभापति महोदय, मैं सबसे पहले तो आभार व्यक्त करता हूं कि आपने मुझे इस महत्वपूर्ण सब्जेक्ट पर बोलने का अवसर प्रदान किया। मुझे गौरव प्राप्त है और मैं अपने आपको भाग्यशाली मानता हूं कि मैं जिस राज्य या शहर से आता हूं वहां से गंगा बहती है। सर, मैंने बचपन से गंगा को देखा है। उसमें स्नान करने का सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ है। मगर मुझे पीड़ा के साथ यह कहना पड़ रहा है कि गंगा पटना शहर से धीरे –धीरे दूर भाग रही है और गंगा लगभग चार से पांच किलोमीटर दूर चली गई है।

उपसभापित महोदय, गंगा और यमुना का ऐतिहासिक महत्व है। गंगा का अपने आप में महत्व है और यमुना का भी अपना महत्व है। इतिहास गवाह है कि जब भगवान श्री कृष्ण को कंस से बचाने के लिए वासुदेव जेल से निकाल कर ले जा रहे थे और उन्हें यमुना पार करनी थी।

उस समय यमुना नदी ने अपने उफान को कम कर दिया था, ताकि भगवान श्रीकृष्ण को नदी पार करने में कोई बाधा न हो। आज उस यमुना का क्या हाल है? सर, मैं आपको बताना चाहूंगा कि उसका क्या हाल है, मथुरा में एक जगह पर 16 गंदे नाले यमुना में गिर रहे हैं। इसी तरह से गंगा में भी गंदे नाले गिर रहे हैं, सिर्फ पटना शहर में ही 13 से 14 बड़े नाले गंगा में गिर रहे हैं। इससे गंगा का बुरा हाल हो रहा है। मैं समझता हूं कि निश्चित तौर पर गंगा और यमुना की

स्थिति दर्दनाक है। यह बात माननीय सदस्यों ने भी कही है। इसका मुख्य कारण यह है कि औद्योगिक घरानों के लगभग 720 कारखाने बड़े पैमाने पर गंगा के बेसिन में हैं। इससे निश्चित तौर पर प्रदूषण बढ़ेगा और गंगा का पानी जहरीला होगा। आज इसी वजह से लोग गंगा का पानी नहीं पी पा रहे हैं। गंगा हिमालय से निकलती है। विगत दिनों में गंगा का बहाव इसलिए भी कम हो रहा है कि जिन राज्यों से गंगा निकलती है, उन राज्यों में गंगा से सिंचाई की व्यवस्था की जाती है। इसी वजह से गंगा का बहाव धीरे –धीरे कम हो रहा है।

सर, बंगाल, उत्तर प्रदेश और बिहार तीन महत्वपूर्ण राज्य हैं, जहां से गंगा निकलती है। उत्तर प्रदेश के बाद बिहार की सीमा शुरु होती है और बक्सर के बाद मैं समझता हूं कि गंगा का बहाव धीरे –धीरे कम हो जाता है।

आज गंगा खासतौर से बिहार के पटना इलाके से बहुत दूर भाग रही है। एक सरकारी अध्ययन दल ने अध्ययन करके यह कहा है कि खासतौर से जो गंगा से जुड़े राज्य हैं, वहां कैंसर के रोगी अधिक हैं। यह इसलिए है कि आज गंगा बड़े पैमाने पर जहरीली और प्रदूषित हो रही है। आज गंगा का पानी पीने लायक नहीं है। इसकी सिंचाई क्षमता भी धीरे–धीरे खत्म हो रही है। इससे जुड़ी हुई जो सिंचाई की व्यवस्था है, उससे किसानों की स्थिति और भी खराब हो रही है। मैं निवेदन करता हूं कि माननीय मंत्री जी ने अपने जवाब में ही कहा है कि गंगा के प्रदूषण को कम करने के लिए बहुत पैसे खर्च किए जा रहे हैं। आज हमारे प्रधानमंत्री जी भी इससे खुद चिंतित हैं। इसके लिए एक कमेटी बनाई गई है। गंगा को बचाने के लिए लगभग दो हजार करोड़ रुपए खर्च किए गए हैं और यमुना की सफाई के लिए लगभग बारह सौ करोड़ खर्च किए गए हैं। यह जो पैसा खर्च किया है, इस पैसों का लाभ हमें नहीं मिल रहा है। सर, मैं खत्म कर रहा हूं। मैं आपकी डॉयरेक्शन को फॉलो करुंगा, हांलाकि यह बहुत महत्वपूर्ण विषय था और मुझे बोलने की अनुमति देनी चाहिए। मैंने इस अल्पकालिक चर्चा के लिए अपना नाम भी दिया था। सर, इसके बावजूद भी मैं आपके आदेश का पालन करुंगा। ये जो पैसे दिए जा

रहें हैं, इनका कहीं न कहीं दुरुपयोग हो रहा है। यदि इनका सदुपयोग हुआ होता तो खासतौर पर इसकी सफाई में असर पड़ता। गंगा में जो बालू बढ़ता जा रहा है, उसको निकालना चाहिए। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि माननीय मंत्री जी बड़ी चिंता का विषय है, मैं आप से निवेदन करुंगा कि गंगा को बचाने के लिए ठोस उपाय निकालिए। अगर हम इसको नहीं बचा पाए तो निश्चित तौर पर एक बहुत बड़ा अपराध जैसा कुछ करने वाले हैं। सर, आपके माध्यम से मेरा यह निवेदन है कि गंगा और यमुना को बचाइए और इस अनुपम नदी गंगा को बचाने के लिए पूरे देश में सच्ची श्रद्धा और ईमानदारी से कड़े फैसले लेने होंगे। इसके लिए पूरा सदन आपके साथ है। आप गंगा और यमुना को बचाइए। जन्म से लेकर मरण तक गंगा का महत्व है और उसके पानी का महत्व है। मरते समय भी आदमी को गंगा का जल दिया जाता है, इसलिए इसकी बहुत महत्ता है। इस पर बहस से काम नहीं चलेगा, सरकार इस पर कोई ठोस उपाय करके, कार्यवाही करे। धन्यवाद। ■

Destruction of river dangerous to country : M. Rama Jois

Mr. Deputy Chairman, Sir, it is a very important issue. Bhartiya culture has given a sacred place for rivers from times immemorial. Most of the *rishyashramas* were located on the banks of the rivers. Similarly, many places of pilgrimage are also located on the banks of the rivers. More than that, the rivers have maintained our national integration. For example, both in Pratah-Smaran and in all sacred functions, there is a river hyme:

गंगा सिन्धु सरस्वती च यमुना गोदावरी नर्मदा,
वैष्णी भीमरती च फल्गु, सरयू श्री गंडकी गोमती।
कावेरी कपिला च तुंगा,
नेत्रावतीत्यदयोः जलेस्मिन सन्निधिं कुरूः।।

In every day Pratah-Smaran, we recite these river hymns. When people go for a dip in Ganga or Tunga, they forget their caste, their religion, everything. So, the rivers have maintained national integration.

Secondly, polluting rivers or even a tank has been considered as an offence. Now, the Supreme Court has said that the polluter should be punished. This is what the Katyayana Smriti says:

तटाकोद्यानतीर्थानि योमेध्येन विनाशयेत्।
अमेध्यं शोधयित्वा तु दण्डयेत्पूर्वसाहसम्।।

A person who pollutes either a tank or a river should be punished has been the earliest provision contained in the Katyayana

Smriti. Then, unfortunately, the industries are polluting the pure rivers. Jawaharlal Nehru had said, "Industrialise or perish". Now, the situation is, 'Industrialise and perish'! That is what has happened. I remember, when I was the Judge of the Karnataka High Court, Tunga river was being polluted by industry. I don't want to name the industry. They were polluting the river. Thousands of fishes died. Therefore, a PIL came before the Karnataka High Court. The complaint was that though there was a plant for purifying the effluent before discharge into the river, they were doing that only during day time. During the night time, they used to stop doing that in order to save the electricity and to avoid payment. So, these industries have been responsible for polluting rivers. More than this, in most of the places, municipalities also discharge gutter water into the rivers and, as a result, rivers are being polluted. Sir, the rivers are of utmost importance for agriculture, for food and also for our economy. It has been important even in politics. For instance, in ancient India, for coronation of an emperor, river water used to be brought and coronation was performed. Then, it was considered that the river water was removing the dirt of not only the body but also of the mind. People go, take bath and say that their sins are over. Adishankara who came all the way from Kerala to Yamuna was a great poet also. He composed 'Yamunashtaka'. I don't want to read that, but the most important prayer he composed was: ''धुनोतु मे मनो मलं कलिंदनंदिनी सदा। "Yamuna, please remove the dirt from my mind". That has been the importance given to the rivers. In fact, in Supreme Court, there is a reference to a letter written hundred years ago by a Chief of Seattle to the Chief of Washington who wanted to purchase his land. He said, "How can you buy or sell the sky, the warmth of the land? The idea is strange to us. If we do not own the freshness of the air and the sparkle of the water, how can "This shining water moves in the streams and rivers are not just water but the blood of our ancestors. The rivers are our brothers. They quench our thirst. The rivers carry our canoes, and feed our children." This was quoted in the Sachidananda Pandey's case by the Supreme Court

as far as rivers are concerned and its importance to us. Therefore, the pollution of rivers is an offence against the nation itself. It should be prevented. The leather industry in Kanpur was polluting the Ganga. Some three years back in Supreme Court Justice Venkataramiah passed an order for stopping the flow of effluents into the river. Of course, that one thing has been done. It is continuing. Part IV of the Constitution has been added in which protection of environment is one of the fundamental duties of every individual.

Therefore, the rivers have great importance not only for our culture but for the integration of the society and also the economy. There is a famous saying, ''धर्म एव हतो हन्ति धर्मा रक्षति रक्षितः'' If *dharma* is destroyed, as a result, you will be destroyed. Therefore, don't destroy *dharma*. I make the same thing. ''नदियो एव हतो हन्ति नदियो रक्षित रक्षितः'' If you destroy the river, in turn we will be destroyed because the entire Gangetic plain will become a desert. Where shall have we to go? Therefore, it is of utmost importance and the duty not only for the Government but for every citizen to protect not only the Ganga but all the rivers. Some of them have been named in the Pratah-Smaran which I have quoted. Recently, I had been to Ujjain. Ujjain is on the banks of the Shipra River. It is again the most sacred river.

Therefore, from all points of view, the protection of the river is in the national interest; and its destruction will be very dangerous to the country.■

Programmes to control pollution have not yield results : Prasanta Chatterjee

Sir, both the major rivers, the Ganga and the Yamuna, are polluted. Some stretches are not even fit for bathing. Despite huge spending on Ganga Action Plan (GAP I and GAP II) and on Yamuna Action Plans I and II, the desired results could not be achieved. It is a matter of grave concern that Yamuna, on Delhi side, which was once described a lifeline of the city, particularly Delhi, has today become one of the darkest rivers in the country. And, everybody should realize that because the rivers running through the cities and the metropolis could have been the symbol of progress. In many countries, we find that. But, in our country, this is the situation. What can we expect? According to the latest Census Report, a large number of people are not having toilets in their houses. So, all that human waste is coming to the rivers through rains. It is not the question of Ganga Action Plan only, but the situation all over the country also is quite apathetic. In how many cities of the country do you have the disposal grounds? Leave aside the scientific disposal system, even the disposal grounds are absent in most of the cities. So, this is the situation. The Minister of Urban Development was here.

Anyway, Sir, I had been a Member of the Public Accounts Committee under Shri Buta Singh. And, then, we had travelled many of the Ganga stretches. Of course, I could not go to Patna. But the team had gone there. I travelled up to Banaras and Kanpur. I visited many places and I found a very horrible picture there.

Half-burn dead bodies were floating in the Ganges because the electric crematorium was not running. It was well in place there, but it was out of order. Even the electric charges are so high that it is very difficult for the local bodies to run it. Since I also happen to be a member of a local body, it is very painful that electric crematoriums could not be run. One of the high-capacity sewage treatment plants was commissioned. But it could not be run because the bricks were lying damaged. It is still not running. Now, some further amount has been allocated under Ganga Action Plan III for repair works.

Sewage Treatment Plant is there, but it is not functioning. Half-burnt dead bodies are floating there. So, scientific temperament will also have to be brought in. The disposal grounds at the river have become the disposal grounds of the solid waste. Dumping of Municipal waste is taking place there. There is lack of civic awareness. Tannery waste, every industrial waste, untreated waters, etc., have spoiled the Ganga, the Yamuna and other rivers also. So, this is the situation. Sir, I mentioned about the irregular power supply and high maintenance cost. That is an administrative failure. There is even no regular monitoring. So, it is needed there. Greater monitoring, enforcement of expanded coverage by Central and State Pollution Control Boards are all the things that are necessary to tackle this problem. Sir, on the Yamuna river alone, we have spent about Rs.5,000 crores. In Phase-III, it is Rs.1,656 crores. At Wazirabad and Okhla, it is critically polluted. It has been said by many that it is a poisonous river. Sir, as far as the Ganga is concerned, in Kanpur and Trighat in Uttar Pradesh and in West Bengal, from Dakshineswar to Garden Reach, it exceeds the criteria limit with respect to B.O.D. I do not want to mention the figures here. In spite of the two Acts that we have, the Environment Act and the Water (Prevention and Control) Act, 1974, this is the situation. Sir, the Central Pollution Control Board has identified 764 stations in five States, out of which 387 have been inspected. What is the action taken? The hon. Minister should tell us. Out of 764 monitoring stations, they have inspected only

387. During the Kumbh Mela, we have read in the papers, how the situation was dealt. Many of the factories had to be closed. Sir, The Ganga, practically, serves almost half of the population. It has now become a cause of cancer with heavy metals and chemicals found in Yamuna and the Ganga. Thus, the programmes to control pollution of rivers and lakes in India have not achieved the desired results. There was paucity of network for tracking pollution of rivers, lakes and groundwater as there were inadequate number of monitoring stations, no real-time monitoring of water quality was taking place and the data on water quality had not been disseminated adequately. As such, monitoring of programmes was inadequate which points to weak river cleaning, and control of pollution programmes for our polluted rivers are being implemented since 1985. Sir, there are many rivers. I don't want to name all. There is a long list, Godavari, Gomti, etc. They continue to be plagued by high levels of organic pollution which causes serious illnesses. So, this is the situation, Sir. I would like to mention that floods occur in our country. Not only recharging of river but also recharging of groundwater level is needed during the flood season particularly in many States.

Funds available for control and prevention of water pollution and restoration of wholesomeness of water were not adequate. Sir, I hope the Government will answer all these points. All our rivers should be properly dealt with. With these few words, Sir, I conclude. ■

Resurrect Ganga and Yamuna : K. Parasaran

Sir, my friend Prof. Swaminathan just stated that most of the rivers in the country are polluted. Supreme Court PIL on Ganga's pollution started before 1990 and with regard to Yamuna started in 1994. If you start fault finding, you will find fault in several States, people in governance and people who are in governance at the Centre also. That should not be the purpose now. The purpose is, having seen the ground reality, how we wish to go about it in the situation. It is a matter of great anguish for every citizen of this country that the Ganges, the Yamuna and all other rivers should have fallen to such a plight. The plight of the Yamuna in Delhi is a matter of shame for all the citizens. When it enters Delhi at a place called Palla, thereafter the level of oxygen falls so much that by the time it leaves Delhi near Okhala barrage, the oxygen contents in the Yamuna are nil. Therefore, what falls in the Yamuna is no longer H_2O, but zero H_2O. This is the level to which it has been brought about. The adverse consequences of this have been spoken by several hon. Members, I don't want to repeat them. But one aspect has not been mentioned. The Delhi Metro Rail Corporation officials claim that the air condition systems of trains that cross the "dead" Yamuna daily and those parked at Yamuna Bank Depots are badly damaged. The toxic gases damage the coating of the AC system which, in turn, causes leakage of

coolant gas. Toxic fumes, including ammonia and hydrogen sulfide, emanating from the polluted water corrodes metals. The condenser system of 350 coaches on Line-III of Dwarka-Noida City had to be repaired and taken care of. This is the level to which the pollution has reached.

Therefore, the imperative need is to remedy the problem. To remedy the problem, we have to get over pollution caused by untreated industrial discharge and untreated sewage from domestic usage. With regard to the industrial untreated drainage, the people in power should take drastic action against the wrongdoers. The Supreme Court, in various ecology cases, has held the Polluter Pays Principle. Therefore, the first thing should be that whoever is responsible for pollution should be suspended and only when the pollution ceases, they should be restored. Proper assessment should be made of damages caused by any of them, and, the penalties should be levied.

Apart from it, when we come to the domestic sewage, there is illegal construction by builders. They should also be severely dealt with and appropriate action should be taken against them under the relevant laws. It is not that the available laws are not sufficient. There are laws and sanctions but these are required to be properly enforced. The next thing is about the other domestic sewage. There, we cannot blame them. They are people below the poverty line. They are poor people; they are illiterate, uneducated people. As hon. Member, Dr. M.S. Swaminathan, rightly said, education is the need of the hour. For all this sewage which is created by them, there is an easier cure and remedy than with regard to what could be done of the industrial waste? The waste created by them -- of course, there will be expenditure -- can be eradicated by modern use of microb technology. But we can do nothing with microb technology as far as industrial waste is concerned. Therefore, our first step must be to ensure that industrial wastage which is drained into it has to be immediately stopped and action should be taken. After that, we have to take up other drainage, for which we can resort to microb technology.

Sir, today's topic is the most important topic because of the reason that cities are formed, civilizations are developed around the rivers. The development, which we have made in Delhi around this river, is one of ruining the river to the extent of leaving no oxygen in it. We are all aware that many great cities have developed only around rivers, namely, London around Thames, Paris around Seine, Vienna around Danube, Moscow around Moskva,Alexandria and Cairo around Nile. We must all endeavour to see that Delhi and Yamuna become a pride like that. Delhi is built around Yamuna and we have seen what it is. Kolkata is built around Hooghly, and, we are suffering due to the underground water being very polluted. The city of Varanasi is built around Ganga. Sir, it is true that this topic has three aspects, religious, secular and spiritual. Therefore, it is the primary duty of everyone to attend to all those three aspects. I will not minimize the religious aspect of it also. Both of them are two arms for worship, and, only when those two arms join, it becomes one angel. Therefore, it is our duty and under the Constitution, we have been guaranteed the right to practise a religion, which has also been affected. So, it is high time that those in charge of governance and those who have got statutory powers should put all their weight behind this. It is not a case for anyone to shift blame. It is for all others to cooperate and ensure that Ganga and Yamuna are restored to their pride. After all, women have been the pride of this nation. Both of them are not merely women but both of them are women God too.

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफलाः क्रियाः।।

Only when we give the pride of place to women and women Gods, the country will prosper but if we do not give them the pride of place, whatever efforts you may make will yield no result, and, will not bear any fruit. If it has to be fruitful, respect has to be given to these two holy mothers, Ganga and Yamuna, and, immediate steps should be taken to cleanse them. I won't say

'clean', I deliberately used the word 'cleanse' because it occurs in biblical translations as 'resurrect'. The Supreme Court has referred to the Yamuna as a dead/dying river.

Therefore, it is no more a case of removing the dirt or cleansing Yamuna. It is a case of resurrection, and I hope that process will start. Thank you very much, Mr. Deputy Chairman. ■

Time bound action plan needed : Shashi Bhusan Behera

Sir, today, we are discussing a very important and sensitive issue pertaining to our country. People of our country are watching the discussion that we are having in this House on the pollution of rivers in the country, especially, of the Ganga and the Yamuna, which are the two most important rivers of North India.

Sir, we have just concluded the Maha Kumbh Mela and the Shahi Snan, and as was rightly mentioned by Shri Prasanta, for a holy dip, crores of people gathered there. This is attached to the belief and sentiment of the people of this nation. But what we apprehend is that the pollutants in religious rivers will cause cancer. So, we took precautions, stopped the industries for one month or more than one month. Sir, this has become the scenario of this country. This is the apprehension of the people of the nation in the next Kumbh Mela, in the next gathering. What will happen when you have a holy dip in the Ganga and the Yamuna? Sir, so many discussions have been heard. We are making statements about these sadhus and sants. We are also discussing mythology, epics of mythology in this House. Sir, I am not narrating about mythology, sadhus and sants. I am narrating about Ganga, Yamuna and all the other rivers of the nation, the life-saving aspect because this is the importance we carry and for that we have so many plans like the Ganga Action Plan and the other names like the National Ganga River Basis Authority and Ganga River Basin Management Plans. These are all plans which we started thirty

years ago. What has happened now? What is the necessity of having this discussion after spending more than Rs. 5000 crores on Yamuna? More than Rs. 20,000 crores have been sanctioned for this and we are allocating up to 1.1 billion dollars from the International World Bank loan for this. What is the use? Certainly, we have mythological sentiments, sentiments attached to nature. We are attached to poetic aspect. We are attached to nature but the very important aspect of saving Ganga, Yamuna and all other rivers of the country is a life-saving aspect. Sir, I am just going through so many saints of modern India. They are the leaders, statesmen, scientists and medical doctors, and I am going through the sayings or quotes of theirs. I am going through what Pandit Jawaharlal Nehru said on this. He said, "The Ganges, above all, is the river of India which has held India's heart captive and drawn uncounted millions to her banks since the dawn of history. The story of the Ganges, from her source to the sea, from old times to new, is the story of India's civilisation and culture." We are not proud of the present scenario. What is our present Prime Minister, Dr. Manmohan Singh's observation in April 2012? He said, "Everyday about 2900 million litres of sewage is discharged into the main stream of the river Ganga from municipal towns located along its banks. The existing infrastructure has a capacity to treat only 1,100 million litres per day, leaving a huge deficit." We are lagging behind by another 50 per cent. So, what is the real time bound plan for it? I am now quoting the previous Minister, Shri Jairam Ramesh, in June 2011, he said, "The objective of the Ganga project is that by 2020 no municipal sewage and industrial effluent will be let into the river without treatment. With help from the World Bank, we are taking a big step forward in achieving this mission?" Sir, this is also a declaration up to 2020. How far is 2020? Now, it is 2013. So, what is the time bound plan for the coming seven years? It must be made clear.

Madam, speaking about you, you said in August 2012, "The levels of bacterial contamination in terms of faecal coliform are reported to be exceeding the maximum permissible limit at a number

of locations." You have found these scientific deficiencies in the polluted waters. Now, what plan do you have to clean it? Please tell us. Sir, the former Deputy Prime Minister, Shri L.K. Advani, in August 2011, had said, "A few dozen people dying in bomb blasts in India becomes big news worldwide, and rightly so, but the tragic deaths of many people who are dependent on Ganga goes unnoticed even in India. We must change this." This is a heart touching statement of Advaniji. There is life in river waters. There are water-borne animals, fish, etc.

Sir, Shri Jaideep Biswas, Director of the Cancer Institute, touched upon a very major aspect when he said very recently, in October, 2012, "Various diseases are the consequence of years of abuse. " Sir, we are abusing the nature. He further said, "Over the years, industries along the river have been releasing harmful effluents into the river. The process of disposing off waste has been arbitrary and unscientific. The river and those living along its banks are paying a price for this indiscretion."

According to the Standing Committee on Environment and Forests, on May 18th, 2012, "The quality of Ganga water is going down day-by-day. In spite of the huge investment under various schemes and projects, pollution levels in the Ganga continue to increase unabated." Sir, I shall not quote the CAG Report, the Calcutta High Court and the Allahabad High Court here, all of which have passed very adverse remarks on the functioning of the Government in treating Ganga, Yamuna and other rivers. I am only wondering what you are going to plan for this, whether the Government is ready to supply bottled water, drinking water to the people living below the poverty line, the common people, like you have been giving them rice at Rs. 2 a kilo. Has the Government been thinking on these lines…

So, let the Government clarify what its thinking on the matter is. The Government must come out with a time-bound action plan. Thank you, Sir. ■

Expecting anything from this government is meaningless : Dr. V. Maitreyan

Sir, Ganga and Yamuna are not simply words denoting the names of certain rivers; rather, they represent the Indian ethos. spirituality and culture, and they signify sanctity, piety and reverence par excellence for millions of people who repose immense faith and have unfathomable devotion to them. Religious and spiritual significance apart, we all know that these two rivers provide sustenance to millions of people in terms of water. food and other numerous benefits living along the banks of these rivers. Undisputedly. Ganga is one of the most sacred rivers in the world. A dip in the Ganga is the cherished ambition of millions of people in this country. Once the Patit Pavini - the provider of emancipation to the sinned -- the Ganga herself has fallen a victim to various forms of pollution and environmental degradation, to such an extent that some of its stretches have become unfit even for bathing. It is a matter of shame because natural resources including our rivers are a gift of nature inherited by our predecessors, passed on to us, and it is our bounden duty that we pass on these resources in their healthy state to our posterity. But the way we are handling, or, rather mishandling, I don't think we will be able to do that.

Now, let us see what we have done to our major rivers, specifically Ganga and Yamuna.

The holy Ganga of the past is fast turning into a poisonous river.

As per a recent study conducted by the National Cancer

Registry Programme of the Indian Council of Medical Research, the holy Ganga is full of pollutants, heavy metals such as arsenic, chloride, fluoride, etc., and lethal chemicals that cause cancer and those who are living along its banks, particularly, in the Eastern Uttar Pradesh, the flood plains or Bengal and Bihar, are more prone to cancer than other parts of the country. Cancer of the gall-bladder, kidneys, esophagus, prostates, liver, urinary bladder and skin are all found in these parts. Of every 10,000 people surveyed, 450 men and 1,000 women were found to be gallbladder cancer patients. It is estimated that over 12,400 million litres per day sewage is generated in the Ganga basin, out of which only around 5,070 million litres per day get treated presently. Approximately, 3,000 MLDs of sewage is discharged into the mainstream of the River Ganga from the Class-l and Class-II towns alone located along the banks, against which treatment capacity of about 1,000 MLD has been created till date. The reckless and relentless discharge of pollutants in the riverbed from the industries, mainly tanneries, distilleries, sugar mills, paper mills, etc., are the major contributors of industrial pollution in the river Ganga. Our Vice-President Shri Hamid Ansari, speaking at a conference organised by the Centre for Science and Environment, made a very relevant and thought-provoking comment which I would like to quote:

"Indian Cities produce nearly 40,000 million litres of sewage per day, enough to irrigate 9 million hectares and barely 20 per cent of this is treated."

He further said that the untreated waste water was seeping into water sources thereby creating a ticking health bomb amongst our people. This has come in The Times of India, dated 5th March, 2013. Water quality monitoring carried out by reputed institutions, like the IIT, Kanpur, indicates that the water quality of the river Ganga, particularly, between Kannauj and Varanasi is critically polluted in terms of key indicators, namely, biological oxygen demand, dissolved oxygen and faecal coliforms. As per Uttar Pradesh pollution Control Board figures, collected by the sample

taken from downstream river Ganga at Allahabad, dissolved oxygen level is 7.15 mg. per litre, biological oxygen demand is 3.95 mg. per litre and the level of faecal coliforms is 8,585 mg. per litre which are much above the prescribed water quality standards.

The water quality downstream Varanasi is even worse. Levels of faecal coliforms upstream of Varanasi are reported to be at as high of 18,500 mg. per litre which go up to as high as 48,000 downstream Varanasi. The less said the better about Yamuna.

Now, why all these things are happening? I would not go into the details of the Ganga Action Plan-I and II. The Ganga Action Plan, GAP, there is a big gap in the planning and implementation. Ultimately, coming to the conclusion, I would like to only say that simple solutions will not find favour with the UPA Government. Very recently, one Ministry approached the Supreme Court against the Ministry of Environment & Forests and the Prime Minister's Office expressed concern by saying that environmental laws had led to a new licence raj under the UPA. All this is just to coerce the Environment Ministry to toe the dictated terms of other Ministries to give unfettered licences to destroy the natural resources. The Ministry of Environment and Forests, the custodian, the protector and the preserver of the natural resources is always under fire. The fact remains that this Government is neither interested in safeguarding the natural resources nor the rights of the poor, but to ensure that only one particular elite class of people progress and prosper. The poor of the country, in fact, is the least priority area for this Government and hence to expect anything from this Government for the protection and preservation of major rivers is meaningless. Thank you. ■

We should have GEP to moniter the health of our country's national assets : C.M. Ramesh

Mr. Vice-Chairman, Sir, thank you for allowing me to speak on the pollution of rivers. Ganga, Yamuna, Godavari or Krishna in our country are not just sources of life, but they also represent faith and belief of millions of Indians who pray and preach for mystical essence. It really pains me to see how our rivers are turning into sewage canals and becoming increasingly life-threatening. Sir, recently a conference was held on sewage and water issues organized by the Centre for Science and Environment, which has been referred to just now by the hon. Member, Shri Maitreyan.

With nearly 80 per cent of this untreated waste generated in India seeping into its rivers, lakes and ponds, it is turning the water sources too polluted to use. Even other experts have warned that the country faces a more complicated challenge as the process of urbanization would still leave millions in the villages, who would depend upon the river and ground water systems.

Sir, I have gone through a recent survey conducted by 11 environmental activists, headed by a Padmashri winner, Dr. Anil Joshi of an NGO called Himalayan Environmental Studies & Conversation Organization, HESCO, who cycled 1800 kilometres, covered 24 rivers, and found that not a single river, out of these 24, is fit enough to even bath in. Every river is polluted. And, if we do not contain pollution in rivers, there is bound to be an ecological imbalance.

So, Sir, the first point I would submit for the consideration of

the hon. Minister is to introduce an annual green measure by calling it 'Gross Environmental Product'. Like the way we have the GDP to measure economic growth, we should also have GEP to monitor the health of our country's natural assets and their increase and decrease which has an impact on the ecosystem of the country.

Sir, even after 28 years of Ganga Action Plan and spending thousands of crores of rupees of public money, the status of Ganga has not changed much, rather it has gone from bad to worse, even further. The Government claims that it is monitoring water quality at 57 locations, has created 1100 MLD-capacity of Sewage Treatment Plants, intercepting and diverting sewage, taking action against polluting units, etc.

But the reality is that the water quality of Ganga, right from Gangotri to Diamond Harbour, its BOD is below the minimum permissible levels. The BOD is very high, particularly at stretches where you have tanneries, pulp and paper, sugar, distillery and fertilizer industries. According to one survey conducted by the National Cancer Registry Programme under Indian Council of Medical Research, ICMR, Ganga water contains heavy metals and chemicals that cause gall-bladder, kidney, food pipe, liver cancer. Of every one lakh people surveyed, 20-25 people have cancer due to this polluted water.

Sir, the hon. Minister is on record saying that it has identified nearly 770 grossly polluting industries in the States where Ganga is flowing, I think, under the National Ganga River Basin Authority. I would like to know as to what action has been taken against each of these industries under Water Pollution and Environmental Protection Acts? Now, after wasting thousands of crores of rupees, the Government has given itself one more deadline of making Ganga pollution-free by the year 2020. ■

All our rivers are under deep distress : M.S. Swaminathan

I shall be very brief; make three points. I think in the Sixth Five Year Plan, 1980-85, when I was in the Planning Commission, a three-pronged strategy was developed to control this problem, because the problem is man-made, and all man made problems have only human solutions. That is why I am happy that this House is discussing it. The first was the Himalayan Ecosystem. Many of the NGOs call themselves 'Save Himalayas, Save Ganga' because there is a strong relationship between the rivers of the Himalayas. The Himalayan Ecosystem is in distress and it has to be restored. The Himalayan Eco-Development Plan was developed for this purpose; I shall not go into the details of it, but they are available.

But it is very important because the hydrologic cycles are very much related to the diametric Himalayan ecosystem. Most of the problems like the drying up of rivers, less flow of water and so on are related to upstream problem. The second is point pollution. Point pollution is one of the very important sources of pollution. A mention has been made by many speakers here starting from Shri Ravi Shankar Prasad. What happens is that an enormous amount of effluents is discharged. This is one which we can control by both technology and regulation. Technology and regulation were developed in great detail during Shri Rajiv Gandhi's time as the Prime Minister, a technocratic approach to the problem of controlling point pollution. It can be only done by regulation and technology. The other non-point pollution to which you have not

made a reference can be controlled only by education and social mobilisation. For this purpose, I had, at that time when I was in-charge of this, three different meetings. One was along the Himalayas, from the Gangotri to the Sagar. There were at that time 18 universities. We had a meeting of the Vice-Chancellors of all these universities and also the student leaders. They were very enthusiastic to participate in a longitudinal programme not for one year or two years because the NSS people will change, national volunteers will change. Now, the Himalayas -- there is a publication in the Planning Commission of this meeting-- and the Universities along them should be there because, I think, the education is important. The second is with religious leaders of various kinds. We had a meeting at Varanasi. They promised to do it. The third one was with the local bodies. Now unless you concurrently attend to the problem of both point pollution and non-point pollution, the non-point pollution cannot be done by regulation alone; it has to be done by education and social mobilisation. That is why I request the hon. Minister again to revive the programme of involving universities. At that time, there were 18 universities but today there must be 30 or 40 universities. They all have NSS, they have volunteers. The students are much interested in this problem. Also the religious leaders in those regions have to be associated and local bodies particularly the Gram Sabhas will have to be involved. Otherwise, we will be talking endlessly about this problem. We spend crores and crores and I am sorry to say you will not have any results. I am happy that the Centre for Science and Environment was mentioned. I am the Chairman of the CSE with Sunita Narayan as our leader. One of our high priority areas is monitoring. I entirely agree with you that the Gangetic dolphin due to the problems of biodiversity of the river are all in deep distress. All our rivers are under deep distress. That is why Jawaharlal Nehru pointed out that the Ganges is the river of India because it represents all the glory and all the problems of all the rivers. But again I want to conclude by saying that these are human made problems, they have only man-made solutions. Thank you. ■

We are trying new and innovative methods everyday : Jayanthi Natarajan

Mr. Deputy Chairman, Sir, firstly, I would like to thank all the Members for their participation. Sir, you have already done that. It is a privilege for me. I have been a Member of this House. This is my fourth term. Sir, it is the first debate that I am replying to as a Minister and I can't think of a greater honour or a privilege than to reply to the subject of the holy river Ganga and the Yamuna, and to express also my concern and my complete identification with the deep sentiments that have been expressed by all the hon. Members.

Sir, I heard each Member with rapt attention. I understand and I would like to straightaway assure Ravi Shankarji and all the other hon. Members who have spoken that I totally identify with every single emotion of theirs. I empathize with their feelings. I feel the same way about the river Ganga, about the river Yamuna, about all the holy rivers of our sacred country and I consider it my duty, as the Minister of Environment and Forests, to strain every nerve to protect these rivers, to make them continue to be living rivers, to protect them from pollution. Because, I believe, Sir, very strongly that this earth, this beautiful country of ours, our mountains, our forests, our rivers are not something that we have inherited from our ancestors, but something that we merely borrowed from our children and we need to hand it over to them in the very same condition, if not better, we inherited it. That job, we failed miserably.

Sir, the river Ganga is woven into the very tapestry, the fabric,

the culture, the identity, the history, the geography, the religion, the ethos, the poetry and the economy of our country. It is an integral part; as one of the speakers who spoke just before mentioned, every river has a little bit of the Ganga in it. The sentiments associated with the river Cauvery, in Tamil Nadu, or with the river Siang, as the other hon. Member mentioned, are all the same feelings that people associate with the holy river Ganga. The religious sentiments that are attached to the river Ganga, the poetry that flows from the Ganga, the deep feelings of awe and reverence inspired by the Ganga, can't be exemplified in a better way than how the Maha Shivaratri concluded on the 10th March. Where else in the world can the largest ever of humans gathered? Ten crore people had gathered on the banks of the Ganga, at the Kumbh Mela. Where else can you find that kind of reverence, that kind of an attachment, that kind of commitment and that kind of complete inter-twining of the life and economy, poetry, feelings and religion of the people as we can with the river Ganga? So, the river Ganga and the river Yamuna occupy a very special place in our lives, in the Indian history. It is our sacred duty to keep them flow clean; it is the exact level at which we respect the river Ganga and the river Yamuna--the debate in the House today has reflected the same height, the same level of excellence, the same emotion and the same passion.

And for that, I thank my hon. colleagues. Sir, the river Ganga covers, as we all know, 2525 square kilometres in length. From Gomukh, it drains 8,61,404 square kilometres in eleven States of our country, intertwine the lives of 448.3 million people. Fourteen rivers are part of the Holy Ganga, and there are so many legends involving the river Ganga, and how the river Ganga came into being, the most important of which is the fact that almost all these legends relate to women and to the power of women. And, at the outset, I would like to start off from where the other hon. Members spoke just now, and say that it will certainly be my endeavour to recommend to my leaders, to the Cabinet that just as we have a Commission to ensure that there are no atrocities against women,

we should have a Commission to ensure that there no atrocities against the river Ganga and against all the major rivers in our country. We should have a Commission for Rivers. I am sure, the hon. Members are aware, we have the Environment Protection Act. The Environment Protection Act is a very powerful Act. It is not really powerful enough in terms of punishment. It is an Act by which industries can be closed down. It is not an Act which can address the issues of the kind that Prof. Swaminathan has raised. These are extremely fundamental issues of awareness of the domestic sewage, of how the people who are living along the banks of river treat the river; and it is not something that will address those issues. It is only an Act which will be directed against industries that discharge toxic effluents into the river, and that is the Act under which we can take action against those industries.

Similarly, there is the Water Act. As you are all aware, water is a State Subject. There is the Water Act and the Air Act. The State Governments have the right, the State Governments have the responsibility to issue directions under the Water Act, under the Air Act. However, Sir, I want to state categorically that the time has now come for us to understand that merely talking about all these legislations is simply not enough. That is the reason why I said that we have to ensure it. The National Ganga River Basin Authority is a statutory body. If Shri Rajiv Gandhi started the Ganga Action Plan in the 80s', Dr. Manmohan Singh, Sir, set up in 2009, the National Ganga River Basin Authority, doing precisely what the hon. Members spoke about just now, to look at the entire river in a holistic manner, as a river basin, not to just look at it as little parts of a larger whole, and not just to examine the issue in an ad hoc fashion. The National Ganga River Basin Authority has met three times. It was set up in 2009. It has met three times under the Chairmanship of the Prime Minister. We have made a commitment under the National Ganga River Basin Authority to ensure that no untreated domestic sewage will flow into river Ganga after 2020, and we are making every effort to ensure that it happens. However, Sir, despite all that, still I believe that it is

important that as a mark of our respect, not only of our respect of the place that river Ganga holds in our history, in our mythology, in our religions, in our hearts and in our lives, but also as a fact that we must preserve our most important river for posterity, that we set up a Commission by which atrocities against the river Ganga will be dealt with swiftly, with immediate punishment, so that people committing those atrocities never commit those atrocities again. Having said that, Sir, I want to add that I just mentioned about the Kumbh. The Kumbh was over on 10th, on the Maha Shivratri. My hon. friends just mentioned that the Government, the Chief Minister, Shri Akhilesh Yadav, has taken a great deal of care to ensure that all the activities involving the Kumbh have gone off extremely well.

I would also like to say that for the last one-and-a-half years, this Government has played its role; the UPA Government at the Centre has played a commendable role in ensuring under the directions of the National Ganga River Basin Authority, headed by the hon. Prime Minister. The Central Board for the Pollution Control has gone and inspected. There are 761 grossly polluting industries all along the main stem of the river Ganga. Most of these industries were inspected. There are 387. I have got all the details and in the course of my reply I will go back to refer to those. Action has been taken against all those polluting industries.

The hon. Members mentioned that industries were closed down. It was not as simple as that. Strict action was taken over two years, one-and-a-half years to go and see to inspect the industries and to take action against those who are not complying with norms. It was not a question of just going and closing and seeing that those industries do not work any more. It was a temporary measure. Now those industries who have promised to comply will reopen. However, we have shown that if we are serious, if we are determined to see that something can happen, it can be done and it will be done. Industries have also understood that. Therefore, I would like to start first by saying that we must give credit to the fact that we were able to move, all of us together.

Naturally, it could not have been possible without the cooperation of the local authorities of Allahabad and the Government of Uttar Pradesh. But we must take credit for the fact that the National Ganga River Basin Authority moved in this direction and if ten crore people were able to bathe at the holy Sangmam at Allahabad, I believe, that it is possible to make sure that the River Ganga is cleaned by 2020. That is the hope I ask you to share with me and to go forward in this journey. It is my responsibility and duty to reply to all the questions that you have raised. The first issue I would like to address is this, and we must first remember that all the hon. Members have said repeatedly that where has the money gone. I am going to read out the details where the money has gone. I am not holding a brief for anybody. I am not saying that every single rupee of that money was spent well. I only want to say one thing first and, that is, if all this had not been done, if the Ganga Action Plan-I and Ganga Action Plan-II had not been implemented, if it had not been done, if the Yamuna Action Plan-I, Yamuna Action Plan-II and Yamuna Action Plan-III had not been implemented, the situation would have been much, much worse. I think whatever we have done, we have done a great deal as a result of that. You must remember the biotic pressure, you must remember that population has increased over the years, you must remember that more and more industries are coming up, you must remember that 90 per cent of the water is withdrawn for agricultural purposes. First of all, we must remember that if a river is to be cleaned, the river has to flow. If the river has to flow, there has to be water. If you are starting at Uttarkashi or Gomukh where the river starts, right there you have Tehri Dam where the water is impounded. Then you have 17 projects which are run of river projects. Certainly, there is no dilution. Then you take away canals for irrigation, you take away 90 per cent of the water, and, then you do not give anything back except drainage, you do not give anything back except pesticides, you do not give anything back except industrial and toxic effluents. Therefore, we must remember that whatever work has been carried out under the Ganga Action

Plan and the Yamuna Action Plan, it has contributed greatly towards keeping the situation, at least, at this level. If it had not, the situation would have been much worse. However, I would like to freely concede in this House that we could have done much better. We can always do much better. We have to learn from our mistakes. This is a joint endeavour. After all, this is something that has to be a joint endeavour of the Central Government, the State Governments and of the urban local bodies. Before I read out the figures, which I will do in one minute, the main issue is that, as a Minister, when I go there, I see all the money is spent on setting up sewage treatment facilities. The sewage treatment facilities are set up; you have a sewage treatment plant which is like a museum.

But in the urban local bodies, none of the sewages are connected to it. So, it is a museum. It does not work. If some of the sewages are connectedto it, then, there is no electricity to make it work. Therefore, the sewage is not treated. It is simply discharged into the river. Only 20 per cent of the effluent, which goes into the Ganga, is from the industries, which, of course, is highly toxic, as all the hon. Members have mentioned. It is highly condemnable and those industries should be shut down. But the rest of the pollution comes from the domestic untreated wastes, from all the towns - class I, class II. All of you have mentioned about the amount of sewage generated and the amount of capacity created. It is funded by the World Bank. The Central Government funds it on a 70:30 basis, except for the North-East, which is done on 90:10 basis. The State Governments say that they can't even pay for operation and maintenance.

The Central Government has agreed for five years of operation and maintenance cost also. However, there has to be a genuine partnership between the Central Government and the State Governments. We can give you the money. But that sewage treatment plant has to be connected to sewage. The staff, who are over there, has to be trained to operate it properly. The urban local body, which is over there, has to ensure that the sewage treatment plant works. Unless this is not done, that sewage is

going to flow into the river. And, that river is going to be highly polluted, leading to the BOD, which you talked about; no dissolved oxygen at all; fecal coliform at impossible levels. It is a shame. I too am ashamed of it, as much as you are. Yet, this is a problem that all of us have to join together and face. And, it is exactly what Mr. Swaminathan said, "It is a question of awareness". It is our young children who should go out and stop this from happening. It is our spiritual leaders who should go out and stop this and tell people and influence them to stop this from happening. This is the urban local bodies who should wake up and do their duty, so that the people who elect them into office should throw them out of office if those sewage plants are not working any more. Yes, engineers are also responsible. Why do we create a sewage treatment plant when the sewage are not connected?

Let me come to the next problem. I have, now, found out, just before this debate, from my reading and in my Ministry, that we, in Delhi, particularly in the Yamuna, have a system where - of course, as you know for 22 kilometres there is absolutely no water after Wazirabad - there are 22 drains into the Yamuna. So, obviously, the Yamuna, in Delhi, is nothing but a stinking sewer. This is a shame of our Capital. But I want to add, what happens at the sewage treatment plants. I have got a report from the Pollution Control Board. This is what we are going to submit to the Supreme Court today. What does it say? I am not blaming this Government or that your Government. I am not asking what did you do when you were in Governmen?. It does not matter. I think, today's debate is much higher than that. I want to tell you what the problem is. The problem is, our designs have been created in such a way that it is treated at one sewage treatment plant upstream, then, the treated effluent is allowed to come out into the drain and mix again with the drainage. Then, it goes out to the next sewage treatment plant. The whole thing is treated again and, then, it again comes out as drainage. Then, it finally goes into the river. So, the sewage that has been treated for four times in four sewage treatment plants, paid out of your money and mine, contributes to the Yamuna

only the sewage. So, what should we do? We need to find new ideas. We now have the designs. We have the money. We have spent the money. We have built the sewage treatment plants, of course, not full capacity. We still need to build more. We are certainly not using all our sewage treatment plants to full capacity. So, what do we need to do? We need to find new solutions. I need to make laws. I want to ensure, through the National Ganga River Basin Authority; through my colleagues in the Government, that once this water is treated, once this waste water is treated, and once it comes out as treated effluent, it should not be allowed to go back into a drain; it should be used for some other purpose, maybe, in a garden, maybe, for some other purpose which is not connected with food.

However, it should be made mandatory that it does not go back as effluent. Remember one more thing. One hon. Member mentioned how water-rich we are in Delhi, when we are talking about the Yamuna. About 220 litres is what an average person in Delhi uses per capita. Even in Denmark, they use less than 200 litres. A country like Denmark is not only rich but also has so much of water. The reason I mention it is, it costs the Delhi Government Rs.8.60/- to supply thousand litres of water, but we pay only Rs.2. 60/- for that thousand litres of water. But that is not the point. The point is, having taken this water, we generate waste water. More waste water is generated. Therefore, the flush in your toilet, the wash basin in your toilet is directly connected to the sewer, that is, the River Ganga. This is something that every citizen of Delhi has to understand. It is not a problem. I am not passing the buck. We will carry out our duties. We will carry out our responsibilities. I stand responsible, as long as I am here, for whatever job the Government must do. But I want to point out that this is an issue which is far beyond what any Government can do. This is an issue where the State Government has to cooperate to ensure that that Sewage Treatment Plant gets electricity. Maybe, they can generate electricity from the waste, so that the Sewage Treatment Plant gets the electricity. The urban local body has to

make sure that the people who operate it are trained. The urban local body has to make sure also that that effluent is not sent back into the same drain. That urban local body has to make sure that the people who are discharging toxic effluents into the river are punished immediately with swift deterrent effect. In Allahabad, one of the things that we tried was not just the classic treatment of Sewage Treatment Plant that we are talking about, but bio-remediation, something that is really cheap. Plants destroy all the waste in the water and then clean the water. All these methods were also explored at the same time. The time now has come for innovation as well. All of us have to first remember not to waste water. Water is going to be the wars of the future. Shivanand Tiwariji was talking about some other issues. Yes, if you have hydro-power projects, if you have dams, if you have power projects that stop the river water from flowing, the river is going to be polluted. This is the judgement call that all of us have to take in a very responsible capacity. It is not something that one individual or one Government can, possibly, be responsible for. There is no comparison, for example, between, Arunachal Pradesh, which has 82 per cent forest cover, and Punjab, which has much less, may be, 18 or 19 per cent. So, how can we say that the same laws of forest should be applied to Arunachal Pradesh and Punjab? The people of Arunachal Pradesh want electricity. They want development. As Tarun Vijayji was mentioning -- he is from Uttrakhand -- they want electricity very badly. This Government has closed down three dams at great loss, including one power project, including one of NTPC, which is a public sector undertaking-- Lohari Nagpala, Bhairon Ghati, Pala Maneri-- only because the aviral dhara of Ganga should flow. That the River Ganga should flow. This Government has bowed to the demand of environmentalists and closed down these three dams much to the anger of people who want that energy. So, is it development? Is it environment? I think the time has come for us to calculate the ecological costs, as mentioned, to make sure that we do not take our environment, our rivers to such a state that they cannot be

regenerated any more. That is my mandate as Minister for Environment and I will ensure that that mandate is carried out.

Let me come to the specifics. I think, Ravi Shankarji was asking, as far as the river Yamuna is concerned, as you are aware, it passes basically through a predominantly agricultural area. There are not that many industries there. But, despite that, 129 units, without effluent treatment plants, have been closed down by the Haryana State Pollution Control Board. Six distilleries which were discharging in the river Yamuna were forced to convert to zero liquid discharge. Closure orders were issued to 25 industries in Uttar Pradesh by the U.P. Pollution Control Board. These were the actions taken against the polluting industries.

As far as the Ganga is concerned, as I said, there were 761 grossly polluting industries, and we took action against 387. Directions were issued under Section 5 of the Environment Protection Act to 19 distilleries, 4 sugar plants, 7 pulp and paper, 93 tanning and one chemical plant. Then, directions were issued under the Water Act as well; letters were issued for compliance and action is under process, and some were closed down. So, very strict action was taken against all these industries, 387 industries, which ensured that during the Mahakumbh, it was possible for us to do this.

Now, you were asking about what is the kind of work that is being done, where did the money go. First of all, I want to tell you that the National Ganga River Basin Authority has now adopted a town-centric approach instead of a holistic river basin approach, and the increasing gap - all of you talked about the gap - of the requirement of sewage treatment infrastructure and the actual

pollution load being tackled is not just due to inadequate financial resources alone but we also found that there is a lack of coordination between the various agencies that I just now mentioned. There is also a shortage of skilled manpower that I had mentioned; it is also due to erratic power supply and lack of involvement of civil society; that too I mentioned.

Then, the projects which are being done are as follows. We

have created treatment capacity in Uttarakhand in the Ganga of 18 MLD in Class I cities and in Class II cities of Uttarakhand, 6.30 MLD; in Uttar Pradesh, 460.80 MLD in Class I cities - all sewage treatment plants - and in Class II cities, 8.10 MLD; in Bihar, 165.20 MLD in Class I cities and in class 2 cities 4.20 MLD; in West Bengal, 548.40 MLD in Class I cities, and none in the Class II cities.

Then, the other pollution abatement works that we are taking up are interception and diversion works. Actually, those who are agitating are demanding that there should be an alternate canal so that the effluent is taken away along the canal. Instead of that, the engineers are proposing interception and diversion works to capture the raw sewage flowing into the river. I mentioned about the sewage treatment plants. We are also working on low cost sanitation works to prevent open defecation on river banks. Then, there are electric crematoria, improved wood crematoria, to conserve the use of wood and help in ensuring proper cremation of bodies brought to the burning ghat. Then, we have River Front Development Works. One of the Members asked if we were doing it. We are working on River Front Development Works such as improvement of the bathing ghats, etc., and other measures like plantation, public awareness, and so on. If you want the status of the actual projects of the Ganga, in Uttarakhand, we have completed 15 projects in 11 towns. I have already said as to how much sewage treatment plant capacity we have created. In Uttar Pradesh, we have completed 7 projects in 5 towns; in Bihar, 4 projects in 4 towns; in West Bengal, 27 projects in 23 towns.

Well, Tarunji, I think, as I said, the level of the debate has been so high. You have every right to ask me. I would only appeal to you and say that this is the money which is sanctioned by the Centre. The staff is that of the State.

This is a State Subject. If you ask me, I would put 'Rivers' in the Concurrent List. This is my personal opinion. However, 'Rivers' is a State Subject and it is the responsibility of the State and the urban bodies to actually create that capacity. This is something

that the State Government, whichever State Government it is, ought to do. State-wise expenditure, if you would like me to say, is as follows. For Uttarakhand, till 31.12.2012, for GAP-I, GAP-II and NGRBA, it is Rs. 81.29 crores. For Uttar Pradesh, it is Rs. 737.22 crores. For Bihar, it is Rs. 98.71 crores. For Jharkhand, it is Rs. 0.25 crores. For West Bengal, it is Rs. 590.58 crores. The total is Rs. 1,008.05 crores.

So, I would like to say that we have taken several very important measures. We also want to set up State River Conservation Authorities so that in every State, the river is the focus, detailed project guidelines are properly drawn up and the institutional mechanism for fast-track sanction and approval of projects happens, so that the money is not wasted and we do not keep sitting over it. Project implementation, just like Tarunji mentioned, should be monitored. Tripartite agreements between the Central Government, the funding agency, the State Government and the urban local body should be signed. There should be resource mobilization and there should be third-party inspection by independent institutions for all the new projects sanctioned under the NGRBA, and there should be GIS mapping of the entire Ganga Basin. So, this is with regard to the Ganga.

With regard to the Yamuna, I would like to say, like I have already mentioned, 21 towns were covered in Yamuna Phase-I, implemented between 1993 and 2003; eight in Uttar Pradesh, 13 in Haryana and Delhi. The towns are Saharanpur, Muzaffarnagar, Ghaziabad, Noida, Vrindavan, Mathura, Agra and Etawah in Uttar Pradesh. In Haryana, it is Yamunanagar, Jagadhari, Karnal, Sonepat, Panipat, Gurgaon, Faridabad, Chirauli, Gharonda, Guhana, Indri, Palwal and Rador.

The number of schemes sanctioned and completed is like this. The number of schemes sanctioned were 270 and the number of schemes completed were 270, out of which, 146 were in Uttar Pradesh, 111 in Haryana and 12 in Delhi. The sewage treatment capacity created in the Yamuna under Phase-I was 753.2 MLD. The type of works completed were interception and diversion of

Sewage Treatment Plants and other new innovative schemes. The total expenditure incurred, including the share of the State, that is, 30 per cent, is Rs. 703.10 crores. Under Phase-II of the Yamuna Action Plan, the schemes sanctioned were 40, while the schemes completed were 26. The Sewage Treatment Plant capacity created was 135 MLD, 328.2 MLD for rehabilitation in Delhi and 54 MLD for new projects in Agra. Other major works which remain to be done are, 30.82 kilometres of rehabilitation of sewers in Delhi, which is the most important task that is facing us today because of siltation of sewers in Delhi, 85.3 kilometres laying of new and rehabilitation of existing sewer lines in Agra and 73 kilometres of new sewer lines in six towns in Haryana. The sanctioned cost is Rs.722.89 crores.

As far as Delhi is concerned, as you know, the Yamuna Action Plan is assisted by JICA, which is from the Government of Japan, and the entire project of Yamuna Phase III has been approved at an estimated cost of Rs.1656 crore. This is to be implemented at an 85:15 cost-sharing basis between the Government of India and the Government of NCT of Delhi in a period of seven years. The proposed works under YAP-III at Delhi are, as I said, rehabilitation, setting up of tertiary treatment facilities, construction of a new Sewage Treatment Plant at Okhla and rehabilitation of sewer lines, public outreach activities.

In Haryana, two projects have been sanctioned for, more or less, the same reasons in Panipat and Sonepat. Now, any other details that hon. Members may like, I would be honoured to share with you whatever details you like. I only want to assure you that we take our responsibility regarding the Ganga and the Yamuna and every other river extremely seriously, and I can assure you that to the best of our ability we will not allow those funds to be wasted. We will ensure that funds go to the right place and to the right people. We are constantly thinking of new ways to make sure that we deliver better results. As I said, I believe that a great deal has been done, but a great deal also remains to be done. I am not shirking any responsibility, when I say that this is something

that every citizen has to be a part of an effort, that every citizen has to be a part of the actual implementation, which is that of the Centre, the State and the urban local bodies. And I would like to conclude by once again thanking all the hon. Members for the valuable guidance that they have given me. And I would like to assure you that if we are found deficient in any way, if there is any suggestion that you would like to give us and if you feel that something could have been done in a better way, we are more than happy to come and listen to you and to implement those suggestions because we are trying new and innovative methods every day.

Sir, I would like to take the second question first. I understand very much the strong sentiments associated with Vrindavan and Mathura, and I will personally assure you that I will make it my responsibility to see what best can be done in Vrindavan and Mathura. As far as the Yamuna is concerned, I believe that we are already working towards finding new and innovative technology to reduce the pollution. However, as I said, it is an issue of dilution; there should be water flowing. That is something which is in the realm of my colleagues' Department. Hon. Prime Minister has constituted a Committee to go into this issue. This Committee consists of Ministers from Delhi and, I think, Uttar Pradesh and Haryana and is headed by Mr. Harish Rawat, the Minister for Water Resources. We will be meeting to try and sort out the issue so that we can ensure that in the immediate future there will be some improvement in the Yamuna at Delhi.

■■■